हज़रत मूसा
कलीमुल्लाह

आर. बख़्त

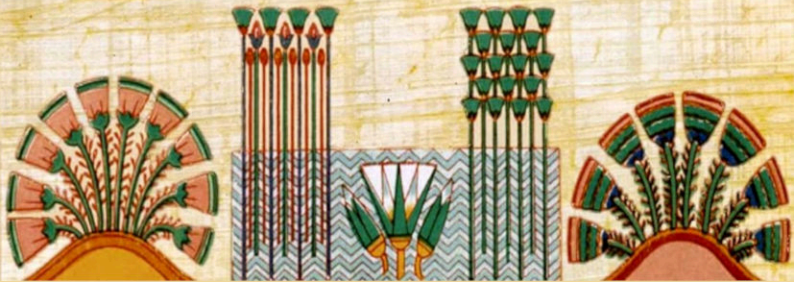

हज़रत मूसा

कलीमुल्लाह

आर. बख़्त

hazrat mūsā. kalīmullāh

Hazrat Moses. Kaleemullah

by R. Becht
(Urdu—Hindi script)

© 2021 MIK
published and printed by
Good Word Communication Services Pvt. Ltd.
New Delhi, INDIA

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

तआरुफ़

हमारी नज़र से शाज़ो-नादिर ही कोई ऐसी किताब गुज़रती है जिसका मुसन्निफ़ तारीख़ के ख़ुश्क और ग़ैरदिलचस्प वाक़ियात में ज़िंदगी फूँकने और हमारे लिए ज़िंदा और जीती जागती तस्वीर पेश करने में कामयाब हुआ हो। तो भी यह किताब इसी क़िस्म की एक कामयाब और क़ाबिले-तारीफ़ तसनीफ़ है।

इस किताब में मुसन्निफ़ ने तर्ज़े-बयान की चाशनी और ख़यालात की रवानी की बदौलत हज़रत मूसा कलीमुल्लाह की हयाते-तैयबा के मुताल्लिक़ हक़ायक़ो-वाक़ियात को निहायत ख़ूबसूरती से अलफ़ाज़ की लड़ी में पिरो दिया है। सही किरदार-निगारी अगरचे एक मुश्किल फ़न है लेकिन मुसन्निफ़ ने इसके साथ पूरा पूरा इनसाफ़ किया है और हज़रत मूसा की शख़्सियत को रोज़मर्रा ज़िंदगी और आम वाक़ियात के ताने-बाने में इस तरह समोया है कि वह अजनबी और ग़ैरमानूस शख़्स नहीं लगते।

अगरचे मुसन्निफ़ ने तख़ैयुल से बहुत काम लिया है तो भी मुंदरजात की बुनियाद किताबे-मुक़द्दस ही है। उसमें हज़रत मूसा की 120-साला ज़िंदगी के क़रीबन तमाम पहलुओं का इहाता किया गया है। मसलन शीरख़ारगी की उम्र में दरियाए-नील की नज़र होना, फ़िरऔन के महल में परवरिश, अपने मज़लूम भाइयों के लिए मुहब्बत और हमदर्दी, सीना पहाड़ पर अल्लाह से हमकलाम होना, इसराईलियों को मिसर की ग़ुलामी से निकालना, बयाबानी और इज़दिवाजी ज़िंदगी, शरीअत का मिलना और बिल-आख़िर इंतक़ाल। उनकी मुबारक ज़िंदगी हलीमी, पाकीज़गी, ख़ुदइनकारी और फ़र्ज़-शनासी का एक ख़ूबसूरत और उम्दा नमूना है।

उम्मीद है कि इस किताब का मुतालआ करने के बाद आप ख़ाहिश करेंगे कि ख़ुद इन तमाम वाक़ियात को तौरेत से पढ़ें। इक़्तिबासात फ़ुट नोट्स में दी गई हैं। आप देखेंगे कि यह किताब एक दिलचस्प कहानी ही नहीं बल्कि तौरेत की एक ख़ूबसूरत और पुर-मग़ज़ तफ़सीर भी है।

नाशिरीन

दरियाए-नील का तोह्फ़ा

नए दिन की आमद आमद थी। सूरज तुलू हुआ चाहता था। दारुल-हुकूमत रामसीस से एक शाहाना जुलूस दरिया के किनारे किनारे आहिस्ता आहिस्ता बढ़ा चला जा रहा था। फ़िरऔन सूरज को सात आसमानों पर से निकाल लाने को था। सूरज देवता “रा” का जलीलुल-क़दर सुपूत अपने सुनहरे तख़्त पर जलवा-अफ़रोज़ था जिसे मुहाफ़िज़ों ने अपने कंधों पर उठा रखा था। इस इनसानी देवता का जलवा आँखों को चकाचौंध किए देता था। उसके सर पर मिसर का दोहरा ताज आरास्ता था जबकि उसकी गरदन में पड़ी हुई सोने की लड़ियाँ और जवाहरात जगमगा रहे थे। नक़्क़ारची बादशाह की आमद का एलान करता जा रहा था। साथ साथ मुंडे हुए सरोंवाले पुजारी जुलूस की क़ियादत कर रहे थे। वह बख़ूर जलाते जाते और उसके रास्ते में गुलाब के फूल बिखेर रहे थे। तख़्त के ऐन पीछे सरकारी अफ़सरान का एक रेला चला आ रहा था। उनके हाथों में गुलाब के फूलों के गुलदस्ते थे।

लोगों का हुजूम "रा" यानी "सूरज" देवता के सुपूत के जाहो-जलाल को देखने के लिए शहर से बाहर उमड आया था। वह मुँह के बल गिरकर और हाथ फैला फैलाकर अपने देवता से दुआ माँग रहे थे। उनके दिलों से ख़दशात उभरने लगे। क्या सूरज देवता "रा" आसमान पर ज़ाहिर होगा? क्या वह आज उनको अंधेरों ही में छोड़ देगा? लोग बड़े पुरउम्मीद होकर पुरोहितों को मंत्र पढ़ते हुए सुन रहे थे।

"ऐ रा देवता, आ। बाप भी और बेटा भी, दोनों अपने फ़रज़ंदों की सरज़मीन को अपनी किरनों से मुनव्वर कर दो।"

आहा। सूरज अपनी पूरी शानो-शौकत के साथ तुलू होने लगा। लोग ख़ुशी से झूम उठे।

फ़िरऔन को भी हर लिहाज़ से ख़ुश होना चाहिए था। उसका मुल्क ख़ुशहाल था और तमाम दुनिया की नज़र में वह इम्तियाज़ी हैसियत का हामिल था। लेकिन आज बादशाह वापस घर जाते हुए बहुत परेशान लग रहा था। उसका ज़हन इसराईलियों के उस क़बीले में उलझा हुआ था जो जुशन के ज़िले में रहता था। कोई 400 बरस क़बल उनका यूसुफ़ नामी एक बुज़ुर्ग था। वह मिसर का हाकिमे-आला भी रहा था। उसका घराना मिसर में आकर बस गया। तब से वह इसी मुल्क में ज़िंदगी बसर कर रहा था। फ़िरऔन ने अपने होंट भींच लिए। "क़सम से क्या मैंने उनमें से अकसर को हँसते-बस्ते घरों से उठाकर रामसीस और पितोम के क़रीब फिर से नहीं बसा दिया है?" वह ज़ेरे-लब बुड़बुड़ा उठा।

रामसीस और पितोम दो शहर थे जिन्हें इसराईली तामीर कर रहे थे। लेकिन उन लोगों में एक बात फ़िरऔन की नज़र में अच्छी नहीं थी। उनकी तादाद ख़तरनाक हद तक बढ़ती जा रही थी। आख़िरकार उसने इसराईली दाइयों को हुक्म दे दिया था कि वह तमाम नौमौलूद लड़कों को मार डाला करें। बदक़िस्मती से वह ख़वातीन इस पर अमल नहीं कर रही थीं। जब वह उनके काम की तफ़तीश करता तो उनके पास अपने बचाव के लिए बहुत-से जवाज़ पहले से तैयार होते थे। वह उसकी गिरिफ़्त में नहीं आ सकी थीं।

फ़िरऔन ग़ुर्राया, "मुझे इसराईलियों के बेटों से नजात हासिल करने के लिए ज़्यादा शदीद अक़दामात करना होंगे।" और कुछ सोचकर उसने पितोम शहर की तामीर के मुंतज़िमे-आला को बुला भेजा। बादशाह का मिज़ाज बुरी तरह से बिगड़ा हुआ था। "सुनो!" वह ग़ुर्राया, "तुम इन इसराईलियों से इतनी ज़्यादा मशक़्क़त लो कि उनमें बच्चे पैदा करने की ताक़त ही ख़त्म हो जाए। चूँकि इसराईली दाइयाँ हमसे तावुन नहीं कर रहीं इसलिए उनके नौमौलूद लड़कों को ख़त्म कर देने की ज़िम्मेदारी तुम पर है। इसराईली नसल पर अपनी आँखें खुली रखो। जहाँ कहीं तुम्हें इसराईलियों का कोई नौमौलूद लड़का नज़र आए उसे फ़ौरन मार डालो।"

"अजीब लोग हैं यह भी। इस मुल्क में 400 बरस से रहने के बावुजूद यह हम मिसरियों में बिलकुल घुले-मिले नहीं। अभी तक उनकी अपनी

एक सोच है। अपना एक तरीक़ाए-कार है। उनके ऊपर उनकी नसल की मोहर लगी हुई है। मुझे उनसे नफ़रत है।" बादशाह की स्याह आँखों में शैतानी चमक थी। "उनके हौसले इस हद तक पस्त करते रहो कि वह हमारे रंग में रंग जाएँ। आख़िर इन ग़ुलामों को क्या हक़ पहुँचता है कि वह अपने ख़ुदा का दावा करें और फिर उसकी परस्तिश भी करें!" फ़िरऔन अपने घुटनों पर ज़ोर से हाथ मारते हुए कहने लगा। "एक ग़ुलाम की कोई हैसियत नहीं होती। किसी भी और देवता को पूजने का उसे कोई हक़ नहीं है।"

उधर इसराईलियों की बस्ती में बारह-साला मरियम और उसका तीन-साला भाई हारून अपनी झोंपड़ी के पास धूप सेंक रहे थे। आह! वह शुरू से इस घिनौनी बस्ती में नहीं रह रहे थे बल्कि उनका एक ख़ूबसूरत-सा गाँव था। काफ़ी अरसा पहले मरियम और उसके वालिदैन उस गाँव में अपने पुराने रिश्तेदारों से मिलने गए थे। बातों बातों में गुज़रे दिनों में गुज़ारी हुई अच्छी ज़िंदगी का ज़िक्र चल निकला था। उनके क़रीब ही एक बकरी घास चर रही थी। और उसका मेमना बेफ़िकरी से उछल-कूद कर रहा था। एक जोशीला मुरग़ा ज़मीन कुरेदती हुई मुरग़ियों के पास बड़े फ़ख़्र से टहल रहा था। मामूल के मुताबिक़ गुज़रनेवाली ज़िंदगी के यह मनाज़िर अफ़सोस अब फ़रेब लगते थे।

मरियम को अपने बाप का ख़याल आया जिसे आज सुबह ही उसने दीगर आदमियों के हमराह काम पर जाते हुए देखा था। सितारों की

छाऊँ में ग़ुलामों का एक टोला बस्ती से रवाना हो रहा था। टाट के खुरदरे कपड़े उनके नंगेपन को ढाँपने के लिए नाकाफ़ी थे। कुछ तो निहायत ख़ौफ़ज़दा से लड़खड़ाते हुए जा रहे थे कि न जाने आज का दिन कैसा गुज़रेगा। दीगर आदमियों के चेहरों से भी इस ज़ुल्म के बाइस मायूसी और ना-उम्मीदी टपक रही थी। उनमें से कोई भी वुसूक़ से नहीं कह सकता था कि शाम को घर लौट आना नसीब होगा कि नहीं।

अपने बाप के अलविदाई मंज़र को याद करके मरियम की आँखें भीग गईं। उसने पलटकर माँ को तसल्ली देते हुए कहा था, "अल्लाह तुम पर रहम करे और तुम्हारी हिफ़ाज़त करे।"

मरियम जानती थी कि उसका बाप उस बच्चे के बारे में बहुत ज़्यादा फ़िकरमंद है जो किसी वक़्त भी पैदा हो सकता था। और अगर वह लड़का हुआ तो?

जब कभी वह आनेवाले बच्चे के बारे में सोचकर ख़ौफ़ज़दा हो जाती तो उसकी माँ उसे तसल्ली दिया करती थी, "मरियम, फ़िरऔन अल्लाह तो नहीं है। इब्राहीम का ख़ुदा ज़िंदा ख़ुदा है। उसने हर चीज़ को पैदा किया है। उसने अपने आपको बुज़ुर्ग इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब पर ज़ाहिर किया है। उसने बुज़ुर्ग इब्राहीम को हमारी ग़ुलामी के बारे में पहले ही बता दिया था। उसने यह भी बताया कि वह 400 साल बाद उसकी औलाद को ग़ुलामी के मुल्क से निकाल लेगा। बेटी! अब हमारी ग़ुलामी का दौर तक़रीबन ख़त्म हो गया है। आओ, अल्लाह पर भरोसा करें जो

शफ़ीक़ और मेहरबान है। वही हमारा मुहाफ़िज़ है और आनेवाले बच्चे का भी।"

"हारून।"

"हूँ।"

"शुक्र है कि फ़िरऔन मेरा बाप नहीं है। मुझे तो उसके बेटे पर भी तरस आता है जो एक दिन उसके तख़्त पर बैठेगा। ऐसा ज़ालिम और बेरहम बाप कितना ख़ौफ़नाक लगता है। हारून! वह कोई ख़ुदा नहीं है। उसका यक़ीन मत करना। वह सूरज को भी तुलू नहीं कर सकता बल्कि हमारा ख़ुदा जो ज़िंदा है वही हर रोज़ सूरज निकालता है जो सिर्फ़ मिसर के लिए नहीं बल्कि दुनिया-भर के लोगों के लिए चमकता है।"

"मरियम, तुम्हारी आँख तो आज बहुत जल्दी खुल गई थी ना?" नन्हे हारून ने सवालिया नज़रों से बहन को देखते हुए कहा।

एक झटके के साथ मरियम ने अपना सर ऊपर उठाया और उसकी आँखें फ़ख़्र से चमक उठीं। "मैं अपनी माँ की बड़ी बेटी हूँ ना इसलिए मुझे उनका ख़याल रखना होता है, ख़ास तौर पर उस वक़्त जबकि नन्हा मेहमान आनेवाला है। दोपहर को मुझे ख़ास काम निपटाने होते हैं। और अब्बा के लिए खाना लेकर जाना होता है। माँ के लिए वहाँ जाना ख़तरे से ख़ाली नहीं है।"

हारून ने परेशानी से अपनी बहन को देखते हुए कहा, “उन्होंने ख़ाला रिबक़ा के बेटे को भी मार डाला है।” नन्हे हारून ने दोनों हाथों से अपना चेहरा ढाँप लिया और रोने लगा।

बड़ी बहन ने फ़ौरन अपनी ज़बान कटकटाए हुए कहा, “हाय! हाय! बड़े भैया ऐसा कभी नहीं होगा। इधर आओ, मैं तुम्हारे आँसू पोंछ दूँ। भूल गए क्या? हमारा रब हमारी रखवाली कर रहा है।”

तीन औरतें सरों पर घड़े उठाए दरियाए-नील से पानी भरकर लौट रही थीं। पस्तक़द औरत की तरफ़ उँगली से इशारा करते हुए गोल-मटोल हारून कहने लगा, “वह राख़िल ख़ाला हैं। उनके पीछे दराज़क़द बिलहा मासू हैं और सबसे पीछे दबोरा बीबी हैं। ज़रा देखो तो सर पर दो दो घड़े उठाए वह कितनी शान से चली आ रही हैं।”

जब बच्चे उनको अपने क़रीब आते हुए देख रहे थे तो उन्हें एहसास होने लगा कि दुख भरी दुनिया में हम अकेले नहीं हैं। इन औरतों को देखकर उन्हें मुहब्बत का वह बंधन याद आ गया जिसने उन्हें अपने क़बीले के साथ बाँध रखा था। इन औरतों ने उनके पास से गुज़रते हुए सलाम-दुआ ली और उनकी माँ का हाल पूछने लगीं। बच्चे जानते थे कि जब तक वह ख़ुद उनकी माँ यूकबिद से मिलकर उसकी ढारस नहीं बँधाएँगी तब तक उनकी तसल्ली नहीं होगी।

दोपहर के वक़्त जैसे ही मरियम जाए-तामीर पर बाप को रोटी देने के लिए रवाना हुई यूकबिद को अचानक दर्दे-ज़ह शुरू हो गया। अच्छा हुआ कि ऐन उसी वक़्त उनकी पड़ोसन रिबक़ा आ गई।

रिबक़ा जो अभी तक अपने बेटे की मौत का मातम कर रही थी जानो उसके कलेजे में जैसे किसी ने ख़ंजर घोंप दिया हो तो क्या उसे अब फिर एक और मासूम बच्चे को ज़बह होते देखना होगा? तो भी एक पुरख़ुलूस दुआ ने सारे ख़ौफ़ को यकसर दूर कर दिया। उसे यों लगा जैसे अपनी हमसाई की मदद करने के लिए उसमें नई क़ुव्वत पैदा हो गई है। उसने आहिस्ता आहिस्ता अपना बाज़ू यूकबिद के कंधों के गिर्द हमायल करते हुए कहा, "बहन फ़िकर न करो, मैं और हारून जाकर अभी दाया फ़ुआ को ले आते हैं। अल्लाह तुम्हारी और बच्चे की हिफ़ाज़त करे। काश वह तुम्हें बेटी दे!"

फ़ुआ बीबी बहार के मौसम का उम्मीद उम्मीद-अफ़्ज़ा झोंका बनकर आई। बच्चे की पैदाइश तक वह यूकबिद की हिम्मत बँधाती रही। "बादशाह से डरने की कोई ज़रूरत नहीं। अगर तुम्हारे हाँ बेटा हो भी गया तो हम उसे मरने नहीं देंगे।" यूकबिद जानती थी कि वह बहादुर औरत बच्चे की जान बचाने की मुमकिना हद तक कोशिश करेगी। फ़ुआ यूकबिद की दुखती कमर मलते हुए बातें करती जाती थी, "हर बच्चा अल्लाह की तरफ़ से रहमत होता है। फ़िरऔन अपने आपको समझता क्या है जो उसने हमें अपने बेटों को मार डालने का हुक्म दिया है। जैसे

जैसे उस बूढ़े बादशाह की उम्र बढ़ती जा रही है उसकी शैतानियत में इज़ाफ़ा होता जा रहा है। उसे तो इमारतें बनाने का जुनून हो गया है। बादशाह बनते ही उसने नया दारुल-हुकूमत रामसीस तामीर करवाना शुरू कर दिया है। इसमें शक नहीं कि वह अपने नाम की शोहरत चाहता है। लगता है इसराईली जितने ज़्यादा मरते हैं वह उतना ही ज़्यादा ख़ुश होता है। नौमौलूद बेटों को जान से न मार देने के जुर्म में वह मुझ और सफ़्फ़ूरा पर कितना चिल्लाया था। लेकिन हमने उसे जवाब दिया कि हमारी औरतें बच्चा जनने में इतनी जल्दी करती हैं कि हमारे पहुँचने तक वह फ़ारिग़ हो चुकी होती हैं।" फ़ुआ संजीदा दिखाई दे रही थी। "बादशाह की मुख़ालफ़त का अंजाम मौत भी हो सकता है लेकिन रब ज़िंदा ख़ुदा है। वह हमारी रखवाली करता है।" मादराना शफ़क़त से मामूर उस ख़ातून का चेहरा ख़ुशी से दमक उठा, "रब ने मुझे और सफ़्फ़ूरा को एक बड़े घराने से नवाज़ा है।"

हारून की आँखें सड़क पर जमी हुई थीं। जैसे ही गली में उसे अपनी बहन की झलक नज़र आई वह उससे मिलने के लिए भागे खड़ा हुआ। "मरियम" उसने फूले हुए साँस से सरगोशी की। "वह आ गया है लेकिन किसी को बताना नहीं।" उसने जल्दी जल्दी बात बढ़ाई। "बड़ी ख़तरनाक बात है।"

"कौन आ गया है?" मरियम ने पूछा और फिर जैसे ही उस पर हक़ीक़त ज़ाहिर हुई उसकी आँखें ख़ौफ़ से फटी की फटी रह गईं। उसके

क़दम जहाँ थे वहीं जमकर रह गए और फिर वह घर की तरफ़ भाग खड़ी हुई जहाँ उसका नौमौलूद भाई माँ के पास लेटा हुआ था। "ओह" उसका साँस फूला हुआ था। उस नन्हे बच्चे के लिए मरियम को लफ़्ज़ नहीं मिल रहे थे। वह कितना प्यारा बच्चा था। अल्लाह ने जैसे अपने एक फ़रिश्ते को सीधा उनकी झोंपड़ी में उतार दिया हो।

हारून ने मुन्ने को चूमते हुए मरियम से कहा, "देखो, मेरा भैया।" ख़ौफ़ से उसका दिल धक से रह गया। उनके नन्हे से भाई पर मौत की मोहर लग चुकी थी। परेशानी के आलम में उसने अपने दाएँ हाथ से अपना मँह ज़ोर से भींच लिया। लेकिन यूकबिद और फ़ुआ का ईमान बड़ा मज़बूत था। उन्हें देखकर बारह-साला मरियम को भी यक़ीन होने लगा कि उसके प्यारे से मुन्ने भैया को क़ादिरे-मुतलक़ बचा लेगा। जब दोनों ख़वातीन उस ख़ास लड़के को देख रही थीं तो उनके दिलों में यह उम्मीद जाग उठी कि हो सकता है यही लड़का इसराईल को ग़ुलामी से छुड़ानेवाला बन जाए।

जब मरियम ज़रा दूर थी तो फ़ुआ गहरी आह खींचकर कहने लगी, "कितने दुख की बात है कि अपने राहनुमा ही हमारे सबसे बड़े दुश्मन हैं। यही वह लोग हैं जो हमें जानते हैं और किसी काम के लिए हममें से ही लोगों को चुन लेते हैं। सिले में वह उनको निगरान मुक़र्रर कर देते हैं जो अपने ही भाइयों पर हुक्म चलाते हैं, यहाँ तक कि उन्हें कोड़े मारने के लिए भी उन्हीं का हाथ उठता है।" फ़ुआ ने बड़ी हिक़ारत से

अपना हाथ हिलाते हुए बात जारी रखी, "इसके बदले में उनको मिलता भी तो क्या? काम से थोड़ी-सी छुट्टी जिसमें वह अपने थोड़े-से खेतों की देख-भाल करते हैं।" फ़ुआ बड़े ड्रामाई अंदाज़ में अपना दायाँ हाथ आसमान की तरफ़ उठाकर कहने लगी, "प्यारी बहन। अल्लाह हमारे साथ है।"

उस रात जब अमराम ने अपने नौमौलूद बेटे को देखा तो उसका दिल एक अजीब क़िस्म की ख़ुशी और तसकीन से मामूर हो गया। दोनों मियाँ-बीवी ने बादशाह के हुक्म को न मानने के इरादे से अपने दिलों को मज़बूत कर लिया। अगरचे उनके दोस्तों ने यह कहकर उनको ख़बरदार कर दिया था, "इतने बहादुर न बनो। अगर तुम्हारे घर से बच्चा बरामद हुआ तो बादशाह तुम दोनों को मरवा डालेगा।" लेकिन माँ-बाप अपने लख़्ते-जिगर की ख़ातिर हर मुसीबत को गले लगाने के लिए तैयार थे।

यूकबिद और अमराम ने अपने बच्चे की ज़िंदगी के लिए अपने ख़ुदा पर ही भरोसा किया। वह अपने ज़हन से इस ख़याल को झटक नहीं सकते थे कि अल्लाह इस बच्चे से ख़ास काम लेना चाहता है। चूँकि हारून ने उसे चाँद कहकर पुकारा था लिहाज़ा उसी वक़्त से प्यार का यह नाम उसके साथ चिमटकर रह गया। बड़ी बहन मरियम साय की तरह उस पर मँडलाती रहती थी। वह चाँद को हर क़िस्म के ख़तरे से महफ़ूज़ रखने के लिए हर वक़्त चौकन्नी रहती थी। साथ साथ हारून मरियम को हर मुमकिन ख़तरे से ख़बरदार करने के लिए दौड़ा आता था

ताकि वह लाडले को छुपा सके जो रोज़ बरोज़ फुरतीला होता जा रहा था। जब वह तीन महीने का हो गया तो उसकी माँ परेशानी में हाथ मलने लगी। अब वह अपने लाडले को मज़ीद छुपाकर नहीं रख सकती थी। यह ज़हीन और सेहतमंद बच्चा खुली फ़िज़ा में जाने के लिए मचलता रहता था। उसकी पुरएहतजाज बुलंद आवाज़ बाहर गली तक सुनाई देती थी।

एक ख़ौफ़नाक रात को तेज़ आँधी चल रही थी। यूकबिद ने देखा कि अमराम बिस्तर पर लेटा अपनी परेशानियों में उलझा हुआ करवट पै करवट बदल रहा है। नहीं। चाँद का बाप उसकी मज़ीद मदद नहीं कर सकेगा। यूकबिद राहनुमाई के लिए अल्लाह से दुआ माँगने लगी। एक तेज़ झक्कड़ ने उनकी झोंपड़ी को हिलाकर रख दिया। अचानक उसका ख़याल उन टोकरियों की तरफ़ पलट गया जो मिसरी नील देवता के लिए तोह्फ़ों से भरकर दरिया में छोड़ देते थे ताकि कोई उनको ढूँड निकाले। टोकरी निकालनेवाले को नील देवता की तरफ़ से यह शरफ़ हासिल होता था कि वह उसमें मौजूद सब कुछ ले ले। सोचते सोचते यूकबिद को एक तरकीब सूझी। क्यों न मैं भी एक ऐसी ही टोकरी बनाकर उसमें चाँद को डालकर दरिया में रख दूँ।

पहले तो यूकबिद का दिल इस ख़याल से सहम गया कि वह अपने दिल के टुकड़े को किसी और के पास जाने के लिए यों छोड़ दे। और फिर अगर चाँद ने ख़ुद ही उस कश्ती को उलट दिया तो यह और भी

बुरा होगा। और? तो भी यूकबिद इसके बारे में जितना सोचती उतना ही उसे इस बात का यक़ीन होता जाता कि ऐसा ही करना चाहिए। उसे यों महसूस होता था कि बात रब की तरफ़ से है।

उसके ख़ावंद अमराम ने भी उसकी तजवीज़ को मान लिया। उन्हें अपने बेटे को रब की हिफ़ाज़त में सौंपना ही पड़ा। अल्लाह ही उनकी वाहिद उम्मीद था। वह यक़ीनन चाँद की रखवाली करके सही शख़्स को भेजेगा जो उसे अपने घर ले जाएगा। आह! नन्हे बेटे से जुदाई का ग़म कितना शदीद था! जब अमराम अपने काम पर जाने लगा तो उसने जल्दी से अपने बेटे की तरफ़ से मुँह मोड़ लिया। आँसू उसकी आँखों में उमडे चले आ रहे थे। वह लाख उन्हें छुपाता लेकिन वह न छुपनेवाले थे।

और फिर जुदाई का वह अज़ियतनाक लमहा भी आ पहुँचा। रिबक़ा हारून की देख-भाल कर रही थी ताकि उसकी तरफ़ से उनके काम को कोई ख़तरा न हो। मरियम को इस मिशन में माँ का हाथ बटाना पड़ा।चाँद को आख़िरी बार दूध पीते हुए देखते देखते बच्चे की प्यारी प्यारी आँखें बंद हो गईं, नन्ही-सी मुट्ठी अपनी माँ की छाती से सरककर नीचे ढलक गई और चाँद के दूध भरे मुँह पर मुसकराहट फैल गई। तब उनके दिल की धड़कन तेज़ होने लगी। उस मुन्ने-से मुलायम जिस्म की क़िस्मत में माँ की क़ुरबत बस अब चंद लमहों तक के लिए थी।

जब चाँद गहरी नींद सो गया तो माँ ने अपने मनसूबे पर अमल करने के लिए अपने दिल को मज़बूत किया। काँपते हाथों से उसने अपने सोए

हुए लाडले को टोकरी में रखा, उसे ढकने से ढाँपा और दोनों माँ-बेटी जल्दी जल्दी बस्ती से रवाना हो गईं। जज़बात की शिद्दत से उनके हलक़ में काँटे चुभ रहे थे। वह मिसरियों से बचती-बचाती बढ़ी चली जा रही थीं। ख़ुदा ख़ुदा करके वह दरियाए-नील पर जा पहुँचीं। एक गहरी साँस भरकर यूकबिद ने उस छोटी टोकरी को सरकंडों के बीच में रख दिया। वह लरज़ते हुए सीधी खड़ी हो गई। उसे यह जानकर हैरत हो रही थी कि मेरा दिल अभी तक बंद क्यों नहीं हुआ।

"मरियम बेटी! भाई के पास ही यहाँ कहीं सरकंडों में छुप जाओ और देखती रहना कि उसके साथ क्या होता है। डरना नहीं। रब तुम दोनों की रखवाली कर रहा है।" यह कहकर यूकबिद वापस अपने घर चल दी। लेकिन जैसे जैसे वह अपने बेटे से दूर होती जाती थी हर क़दम पर ममता की फ़िक्रती परेशानियों का आसेब उस पर तारी होता जा रहा था। अपनी इंतहाई परेशानी में उसने रब से लौ लगा ली, "ऐ क़ादिरे-मुतलक़ रब! तू ही मेरे बेटे का सरपरस्त है। मेरे बेबस बेटे की निगहबानी कर।"

रिबक़ा डबडबाई आँखों से हारून के साथ खड़ी पहले ही से मुंतज़िर थी। हारून ने जल्द ही भाँप लिया कि चाँद हमेशा के लिए चला गया है। "अम्मी जी! मुझे चाँद चाहिए।" वह अपनी माँ से चिमटकर रोने लगा। दोनों औरतें अभी तक उसे तसल्ली देने की कोशिश कर रही थीं कि इतने में मरियम तूफ़ाने-बादो-बाराँ की तरह आ धमकी। "अम्मी जी! जल्दी करें। शहज़ादी फ़िरऔन की बेटी आपको बुला रही है।" वह

इतनी बुरी तरह से हाँप रही थी कि साँस लेना भी मुश्किल हो रहा था। वह अपनी माँ को बाज़ुओं से पकड़कर खींचती चली जा रही थी। दोनों जितनी जल्दी हो सके तेज़ तेज़ चलती हुई वापस दरिया तक आ गईं।

"अम्मी जी! आपके जाने के थोड़ी ही देर बाद शहज़ादी अपनी ख़ादिमाओं के साथ वहाँ चली आई थी।" मरियम ने अपना साँस सँभालते हुए कहा। "शहज़ादी की सहेलियाँ दरिया के साथ साथ टहल रही थीं कि अचानक चाँद ने रोना शुरू कर दिया। पहले तो आवाज़ धीमी थी। लेकिन फिर तो ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। अम्मी जी! काश आप चाँद की आवाज़ सुनते वक़्त उनके चेहरे देखतीं! वह भी पागल हुई जा रही थीं क्योंकि वह चाँद की मदद करना चाहती थीं लेकिन उसको देख नहीं सकती थीं। और फिर शहज़ादी की जान में जान आई और वह पुकारने लगी, 'यह रहा।' उनमें से एक सहेली जल्दी से टोकरी उठा लाई। अम्मी जी! शहज़ादी ने टोकरी को ख़ुद अपने हाथों से खोला और जैसे ही उसकी नज़र हमारे चाँद पर पड़ी उसके दिल में रहम भर आया। 'यह इसराईलियों के बच्चों में से एक है,' वह कहने लगी और परेशान हो गई कि इस भूके बच्चे की किस तरह मदद करे।" मरियम ख़ुशी से आँखें मटकाती हुई बोली, "अम्मी जी, मुझे उसी वक़्त पता चल गया कि अब मेरी बारी है। मैं दौड़कर आगे बढ़ी और बच्चे के लिए कोई इसराईली दाया लाने के लिए पूछा।"

“शाबाश! मेरी बेटी बड़ी ज़हीन है।” दूर से यूकबिद को चाँद के रोने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। शहज़ादी और उसकी सहेलियाँ उसके गिर्द जमा होकर उसे चुप कराने की कोशिश कर रही थीं। यूकबिद निहायत सादा अंदाज़ से आदाब बजा लाई जिस पर शहज़ादी ने बज़ाहिर कोई ध्यान न दिया। उसे चाँद पर प्यार आ रहा था।

फ़िरऔन की बेटी ने यूकबिद पर ऊपर से नीचे तक नज़र डाली। वह ख़ासी मुतमइन नज़र आ रही थी। बच्चे की चीख़ों में वह यूकबिद को हिदायात देने लगी, “बच्चे को ले जाओ और उसे मेरे लिए दूध पिलाया करो। मैं तुम्हें इसका मुआवज़ा दूँगी।” चुनाँचे बच्चे की माँ ने उसे दूध पिलाने के लिए ले लिया।[1]

ग़ालिबन पहली बार किसी ने शहज़ादी फ़िरऔन की बेटी को इस बुरी तरह परेशान किया था, और वह भी एक छोटे-से बच्चे ने। यूकबिद को यक़ीन हो गया था कि शहज़ादी के दिल में ममता ठाठें मार रही है। मादराना शफ़क़त की आग बच्चे की तकलीफ़ को नहीं देख सकती थी।

जैसे ही चाँद ने माँ की बाँहों में सिमटकर रोना बंद किया शहज़ादी और उसकी सहेलियों के चेहरों पर इतमीनान भरी मुसकराहट फैल गई।

शाम को जब अमराम घर वापस लौटा तो उसने सारी बातें बड़े शौक़ से सुनीं। उसने सोचा यक़ीनन इस बच्चे के बारे में अल्लाह के ख़यालात बहुत बुलंद हैं। बाप ने अपने लाडले बेटे को सीने से लगा लिया और

1 ख़ुरूज 2:9

अपने खुरदरे हाथों से नरमो-नाज़ुक बच्चे को चुमकारने लगा। उसे एक बात बड़ी अहम मालूम हो रही थी। वह यह कि जो थोड़ा-सा वक़्त मिला है लाज़िम है कि हम उसे ग़नीमत जानते हुए नन्हे को अल्लाह के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा बताएँ।

जुदाई

हारून और मरियम की तरह अब चार-साला चाँद भी अपने वालिदैन को अम्मी और अब्बू कहकर पुकारा करता था। तो भी एक रोज़ उन्हें एक बार फिर याद करवाया गया कि फ़िरऔन की बेटी ने अब उसे अपना बेटा तसलीम करने का दावा किया है। और जल्द ही चाँद को शहज़ादी के साथ महल में रहना होगा। उस सुबह सोलह-साला मरियम मामूल के मुताबिक़ रोटियाँ पका रही थी और मामूल के मुताबिक़ चाँद उसकी मदद करने पर ज़िद कर रहा था। जब उसे अपनी रोटी ख़ुद घड़ने की इजाज़त मिल गई तो उसकी आँखें ख़ुशी से चमक उठीं।

“देखिए देखिए अम्मी जी, अब मेरी रोटी पकने के लिए बिलकुल तैयार है।” चाँद को अपने घर का मुहब्बत भरा माहौल बहुत पसंद था। वह अपने आपको अपने वालिदैन के प्यार में बड़ा महफ़ूज़ समझता था।

एक दिन गली में जैसे ही घोड़ों के टापों की आवाज़ सुनाई दी। यूकबिद ने उस आवाज़ को समझते हुए कान लगा दिए। कोई बात

ज़रूर थी क्योंकि चाँद हाँपता काँपता भागता चला आ रहा था। यूकबिद का दिल धक से रह गया।

"अम-म-मी जी, म-म-मिसरी आ गए हैं।' चाँद हकलाते हुए कहने लगा। ऐसे जज़बाती मौक़ों पर अकसर उसकी ज़बान हकला जाया करती थी। यूकबिद के तो जानो किसी ने कलेजे में छुरा ही घोंप दिया। "तो क्या शहज़ादी ने चाँद को ले जाने के लिए किसी को भेजा है?" वह तो वाक़ई शहज़ादी के क़ासिद निकले जो बाक़ायदगी से उसका मुआवज़ा लेकर आया करते थे। देखते ही देखते ताकने-झाँकनेवाले हमसाए बग्घी के गिर्द जमा हो गए और हासिदाना अंदाज़ में आपस में बातें करने लगे, "ज़रा देखना तो शहज़ादी अपने लाडले को कितनी सारी चीज़ें भेजती रहती है!"

अफ़सोस उन दिनों यूकबिद का घर उनके घरों से बिलकुल कटा हुआ था। फ़िरऔन की बेटी की दाया होने की वजह से उसको बन-सँवरकर और साफ़-सुथरा रहना पड़ता था। ख़ास तौर पर इसलिए भी कि मिसरी सफ़ाई के बारे में बहुत ज़्यादा वहमी होते थे।

एक भारी आवाज़ सुनाई दी। "इस उम्दा रेशमी लिबास में तो चाँद बिलकुल शहज़ादा लगता है।" रिबक़ा ने बुलंद आवाज़ में औरतों को ललकारकर कहा, "चाँद तो चीथड़ों में भी शहज़ादा ही लगेगा। वह कोई मामूली बच्चा नहीं है।" उसकी आँखें चमक रही थीं। उन औरतों में सबसे ज़्यादा हसद करनेवाली को भी रिबक़ा की बात मानना पड़ता

था। वह सब अमराम के घराने को अच्छी तरह से जानती थीं जो कि शहज़ादी से चाँद की देख-भाल का इतना ज़्यादा मुआवज़ा मिलने के बावुजूद इतना हलीम था। चाँद का बाप दीगर मर्दों की तरह अब भी टाट का लिबास पहनकर काम पर जाया करता था।

मिसरी ने बड़ी मुस्तैदी से चाँद को सलामी दी और तोह्फ़े पकड़ा दिए। फिर वह बच्चे का भरपूर जायज़ा लेते हुए उससे बातें करने लगा ताकि वह शहज़ादी को उसकी ख़ैरो-आफ़ियत और नशो-नुमा के बारे में इत्तला दे सके। आज जब उसने चाँद के नरमो-मुलायम प्यारे-से चेहरे को देखा और उसके ज़िहानत से भरपूर जवाब सुने तो बहुत मुतअस्सिर हुआ। "बहुत जल्द आप महल में आकर अपनी अम्माँ हुज़ूर, आली मरतबत शहज़ादी दुख़तरे-फ़िरऔन के साथ रहेंगे। आपकी अम्माँ हुज़ूर बड़ी बेचैनी से मुंतज़िर हैं कि आप उनके साथ आकर रहें।" फिर यूकबिद से मुख़ातिब होकर उसने इत्तलाअन कहा, "एक महीने तक मैं तुम्हें और बच्चे को लेने के लिए आऊँगा। आली मरतबत शहज़ादी दुख़तरे-फ़िरऔन चाहती हैं कि तुम ख़ुद आकर बच्चा उनके सुपुर्द करो। अगले माह के पहले दिन को सुबह तैयार रहना।" यह क़ासिद कभी भी बात को तूल नहीं देता था। हमेशा जितनी जल्दी हो सकता इसराईलियों की उस बस्ती से निकलने की कोशिश करता था। उसने एक बार फिर चाँद को सलामी दी और चलता बना।

माँ का दिल काँप उठा। जुदाई का लमहा उसकी आँखों में समाया रहता था कि अब उसका बेटा उन बेदीन बुतपरस्तों में जाकर बसनेवाला है।

"अम्मी जी! यह आदमी मुझे हमेशा रा का बेटा क्यों कहता है?" चाँद ने पूछा।

"क्योंकि शहज़ादी दुख़तरे-फ़िरऔन ने तुम्हें अपना बेटा बना लिया है इसलिए जल्द ही तुम फ़िरऔन के नवासे बन जाओगे जो अपने आपको 'रा का बेटा' कहलवाता है। डरो नहीं मेरी जान, नील देवता ने तुम्हें शहज़ादी को नहीं दिया बल्कि यह काम ज़िंदा ख़ुदा का है। वही तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा। तुम सिर्फ़ इतना करना कि रब को हमेशा याद रखना जिसने तुम्हें ख़लक़ किया है। वह तुम्हें प्यार करता है। वह चाहता है कि तुम भी उसे प्यार करो।"

"अम्माँ," यूकबिद ने चाँद की बेचैनी को भाँप लिया। वह जानती थी कि एक चार-साला बच्चे के लिए एक ऐसी माँ को क़बूल करना आसान नहीं है जिसको कि वह जानता ही नहीं। उसे हर वक़्त उस दुनिया में जाने के लिए तैयार रहना पड़ रहा था जो उसके लिए बिलकुल ग़ैरमानूस थी। तो भी यूकबिद की जान में जान आई जब उसने देखा कि इतना परेशान होने के बावुजूद वह अपने आठ-साला भाई हारून के साथ भागा-दौड़ा फिर रहा है। उस वक़्त से वह अकसर पूछता रहता था कि मरियम कहाँ

चली गई है। इससे ज़ाहिर होता था कि वह अपने पूरे घराने को अपने आस-पास देखना चाहता था।

"अब मरियम बड़ी हो गई है," माँ ने समझाया। "वह बस्ती में ज़रूरतमंदों की मदद करना चाहती है। आज वह नौजवान बेवा दबोरा का हाथ बटा रही है जिसके छः बच्चे हैं। उसका शौहर ईंटों के भट्टे से लौटकर नहीं आया।"

यूकबिद ने ठंडी आह भरी और कमरे से बाहर निकल गई। लेकिन चाँद हैरत से अपने भाई हारून से पूछने लगा, "उसे क्या हुआ?" जब उसे मालूम हुआ कि उसके इतने कोड़े मारे गए कि वह मर गया तो वह बहुत परेशान नज़र आने लगा। उसके अपने लोगों की तक़दीर जिन्हें वह प्यार करता था कितनी भयानक थी। जब उसने अपनी माँ से पूछा कि "अल्लाह इसराईलियों की मदद क्यों नहीं करता?" तो उसने जवाब में कहा, "चाँद! वह बेहतर जानता है कि कब और कैसे हमारी मदद करे। उसकी मुहब्बत पर कभी शक न करना।"

उस शाम जब अमराम काम पर से लौटा तो चाँद अज़ियत से चिल्ला उठा, "अब्बू जी! आपकी पीठ पर तो ख़ून लगा हुआ है। उन-न-हों ने आ-आ-आपको इतनी बुरी तरह से क्यों प-प-पीटा है? अम-मी जी ज़रा पानी लाना। म-म-मैं ख़-ख़ून धो दूँ।" चाँद की नरमी ने बाप के ज़ख़्मों पर मरहम का काम किया। एक दुख भरी आह के साथ वह खाना खाने बैठ गया।

"जल्द ही हारून भी काम पर लग जाएगा। ख़ुसूसी सलाहियतों के मालिक लोग कितने ख़ुशक़िसमत हैं जिन्होंने सोने और पत्थरों का काम करने की तरबियत हासिल की हुई है और वह भी जो ख़ूबसूरत नमूने बुनने के माहिर हैं। वह कोड़ों की मार से तो बचे रहते हैं," अमराम ने बड़ी मुश्किल से नवाला निगलते हुए कहा। "यूकबिद, आज मुझे मालूम हुआ है कि मिसर में सिवाए फ़िरऔन के कोई शख़्स भी आज़ाद नहीं है। ग़ुलामों की हर सफ़ पर इसराईली मुहाफ़िज़ मामूर किए गए हैं जो अपने ग़ुलाम भाइयों से काम करवाते और उनकी निगरानी के भी ज़िम्मेदार हैं। फ़िरऔन के दरबार के उमरा, सरदार पुजारी और नाज़िमे-आला का मुल्की उमूर के निज़ाम में कुछ इस तरह से ताना-बाना बना हुआ है कि वह सबके सब फ़िरऔन के ग़ुलाम होकर रह गए हैं। मिसर की सारी दौलत मवेशियों से लेकर फ़सलों और दस्तकारों के तैयारकरदा माल तक रियासत की, फ़िरऔन की या फिर मंदिर की मिलकियत है। जैसा कि तुम जानती हो कि दस्तकारों और मज़दूरों को उनकी पैदावार में से उनके दर्जे और काम की नौईयत के मुताबिक़ उजरत मिलती है। हुनरमंद और बेहुनर शख़्स में इम्तियाज़ बस इतना है कि हुनरमंद कारिंदों के नसीब में ज़रा बेहतर ख़ुराक और कुछ ज़्यादा इज़्ज़त होती है।"

चाँद अपने बाप की गोद में सरक गया और अपनी नरमो-नाज़ुक उँगलियों से उसकी दाढ़ी को छेड़ने लगा। "जो मिसरी आज यहाँ आया

था उसकी दाढ़ी तो नहीं थी। उसके गालों पर तो एक बाल भी नहीं था।" वह मुसलसल बोलता जा रहा था।

"कौन था वह?" अमराम सीधा होकर बैठ गया। और फिर जब उसको उसके बेटे की क़िस्मत का फ़ैसला बताया गया तो उसका दिल बोझल हो गया। अपने इस क़ीमती सरमाए से जुदाई कितनी मुश्किल होगी। चाँद उसकी गोद से चुपके से खिसककर निकल चुका था। वह बड़ी बेताबी से अपने तोह्फ़ों की तरफ़ इशारा करते हुए कहने लगा, "वह आदमी यह सब चीज़ें मेरे लिए लाया है। यह सब कुछ मेरा है।"

"यह तो तुम्हारी अम्माँ हुज़ूर शहज़ादी दुख़तरे-फ़िरऔन की बड़ी मेहरबानी है बेटा, वह तुमसे बहुत प्यार करती हैं। लेकिन यह कभी न भूलना कि मिसर की सब उम्दा चीज़ें अल्लाह की मुहब्बत के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं हैं। वह हमारा ख़ालिक़ है, वह चाहता है कि हम भी उसे प्यार करें।"

चाँद ने बड़ी संजीदगी से हाँ में सर हिला दिया। तो भी वह पूरे दिन की रूदाद सुनाते सुनाते आख़िरकार अपने बिस्तर पर सिमटकर सो गया।

अमराम ठंडी आह भरते हुए कहने लगा, "अपने बेटे को उस बेदीन माहौल में भेजने का ख़याल आते ही मेरा दिल सहम-सा जाता है।" यूकबिद के चेहरे पर दिल में उठनेवाले तलातुम के आसार नुमायाँ थे। अंजामे-कार उसका ईमान उसकी कैफ़ियत पर हावी हो गया। उसने अपनी गहरी स्याह चमकदार आँखों से जिनके पीछे आँसुओं का सैलाब

उमडने को बेताब था अमराम को देखा और धीरे धीरे लहजे में उसकी ढारस बँधाते हुए कहने लगी, "अल्लाह ने मेरे बच्चे की जान बचा ली जब मैंने उसे दरिया के किनारे डाल दिया था। बेशक वह जिसने मेरे चाँद को मगरमच्छों और दीगर तमाम ख़तरों से महफ़ूज़ रखा अब भी उस नापाक और बेदीन माहौल में उसकी हिफ़ाज़त करेगा।"

अमराम ने अपनी ठोड़ी को अपने काम से थके-माँदे हाथों से पकड़ते हुए कहा, "मुझे अब यों महसूस होता है जैसे रब पूछ रहा हो, क्या तुम्हें मुझसे प्यार है? क्या तुम्हें सब चीज़ों से ज़्यादा मुझसे प्यार है? क्या अपने बेटे से भी ज़्यादा? मुझे बुज़ुर्ग इब्राहीम याद आते हैं जिन्हें अल्लाह ने उनके बुढ़ापे में उनके बेटे इसहाक़ की क़ुरबानी माँगकर आज़माया था। ज़रा तसव्वुर करो, क़ुरबान करने की जगह तक पहुँचने के लिए तीन दिन के लंबे सफ़र के दौरान बुज़ुर्ग इब्राहीम ने कैसी अज़ियत बरदाश्त की होगी। ज़रा सोचो, उनके ज़हन में कैसे कैसे ख़याल आए होंगे जब उनका बेटा बाप पर पूरा एतमाद करते हुए ख़ामोशी से उनके साथ चल रहा था। जब बाप ने अपने बेटे को बाँधा, उसको क़ुरबानगाह पर रख दिया और उसे ज़बह करने के लिए तेज़ छुरी उठाई तो उस वक़्त उनके दिल पर क्या गुज़री होगी।"

"हाँ, हज़रत इब्राहीम को ..." यूकबिद की आँखें भीग गईं, "रब के फ़रिश्ते ने ऐसा करने से रोक दिया था। बुज़ुर्ग इब्राहीम ने अल्लाह से अपने सच्चे दिल से मुहब्बत को साबित कर दिया था। अमराम, अल्लाह

हमें भी आज़मा रहा है। इस मुश्किल काम में हर वक़्त मेरा साथ देने के लिए आपका बहुत बहुत शुक्रिया। आप ही ने मुझे चाँद को छुपाने का हौसला दिया था अगरचे ऐसा करने में हम दोनों मौत को दावत दे रहे थे। आप ही ने झाड़ियों में इस टोकरी को छुपाने में मेरी हिम्मत बँधाई थी। इस मुश्किल वक़्त में एक बार फिर हम रब से अपने लिए मज़बूत दिल के लिए दुआ करेंगे।"

अगरचे चाँद ग़ुनूदगी के आलम में अपने बिस्तर पर लेटा हुआ था तो भी उसने उन दोनों की बातें सुन ली थीं। ख़ुदा से उनकी गहरी मुहब्बत और उनकी इस सोच ने कि वह उनकी मदद करेगा उसके दिल पर अनमिट नुक़ूश सब्त कर दिए।

जुशन के इलाक़े में वाक़े उस घर में चाँद की यह आख़िरी शाम थी। उसने अपना तमामतर क़ीमती ख़ज़ाना इकट्ठा किया। उसकी माँ दोज़ानू होकर उसके पास बैठ गई। उसे बात करने के लिए अलफ़ाज़ नहीं मिल रहे थे। आख़िर वह कहने लगी, "चाँद! यह सब तो पुरानी चीज़ें हैं, बेहतर है कि उन्हें यहीं छोड़ जाओ। तुम्हारी अम्माँ हुज़ूर शहज़ादी दुख़तरे-फ़िरऔन ने तो पहले ही से तुम्हारे लिए बड़ी अच्छी अच्छी चीज़ें ले रखी हैं।"

चाँद की आँखें ख़ौफ़ से खुली की खुली रह गईं। "तो क्या मुझे हर एक चीज़ छोड़नी पड़ेगी? मेहरबानी से मुझे अपना तकिया तो साथ

ले जाने दें। और मिट्टी की एक छोटी-सी गाय भी जो हारून भाई ने मेरे लिए बनाई है। मैं इन्हें छुपा लूँगा।”

चाँद को अपना यह क़ीमती ख़ज़ाना मरियम और हारून के हवाले करते देखकर यूकबिद का कलेजा कट के रह गया। “मेरे पीछे मेरे बिस्तर पर कोई नहीं सोएगा।” चाँद ने बारी बारी सबको देखते हुए ज़ोर से कहा। “मैं घर आता-जाता रहूँगा।” तो भी यह समझदार और हस्सास लड़का भाँप रहा था कि यह जुदाई हमेशा के लिए है। उस रात अपनी आँखें बंद करने से पहले उसने अपनी माँ को पुकारा। बच्चे की मासूम आँखों में घटाएँ उमड आई थीं। वह अपनी माँ के ममता भरे चेहरे को देखते हुए कहने लगा, “अम्मी जी, जब आप मुझे महल में छोड़ आएँगी तो उस वक़्त रब मेरे साथ रहेगा ना?”

उसकी अम्मी ने बड़े प्यार से उसके परेशान ज़हन को मुतमइन करने के लिए सहलाते हुए कहा, “हाँ चाँद! यक़ीनन हमारा रब तुम्हारे साथ रहेगा।”

और फिर यूकबिद ने अपने आँसुओं को छुपाने के लिए अपना सर बेटे के सीने पर टिका दिया।

शहज़ादे मूसा का पुख़्ता अज़्म

मिसर के दारुल-हुकूमत पर जुनूनी कैफ़ियत तारी थी। शहज़ादी दुख़तरे-फ़िरऔन के बेटे मूसा ने अबीसीनिया के दारुल-हुकूमत में अपनी इम्तियाज़ी हैसियत का लोहा मनवा लिया था। शहज़ादे मूसा की क़ियादत में लशकर पहले ही बहुत-सी फ़ुतूहात कर चुका था। अगले रोज़ रामसीस में लशकर समेत फ़ातेह की आमद मुतवक़्क़े थी। शहर के दरवाज़े से लेकर शाही महल तक इस्तिक़बाल के लिए बड़े बड़े बैनर लगे हुए थे। मिसरी झंडे और झंडियाँ कसरत से लहरा रही थीं। शहज़ादे की वापसी की ख़ुशी में महल में जशन का-सा समाँ था। चूँकि शहज़ादी दुख़तरे-फ़िरऔन उस अज़ीम लमहे के स्वागत की तैयारी के लिए ताज़ादम होने की ख़ातिर आराम फ़रमा रही थी इसलिए उसकी तमाम ख़ादिमाओं को थोड़ी फ़राग़त नसीब हो गई थी। एक झरोके से उनके सलीक़े से आरास्ता सर आते-जाते नज़र आ रहे थे। वह महल की सजावट, झंडियों और त्योहारी सरगरमियों और तक़रीब की तैयारी

में होनेवाली चहल-पहल को तारीफ़ की नज़र से देख रही थीं। असल में जब हज़रत मूसा उस महल में रहने के लिए आए थे उस वक़्त उनमें से कुछ ख़ादिमाएं शहज़ादी के पास मौजूद थीं। जिस तरह हज़रत मूसा की माँ उनसे इंतहाई मुहब्बत करती थी उसी तरह वह भी शीदाई थीं। उनमें से एक बड़े मादराना फ़ख़्र से पुकारकर बोली, "देखा तुमने, लोग कितनी ख़ुशी से शहज़ादे की आमद की तैयारियाँ कर रहे हैं? यहाँ तक कि बावरचीख़ाने में भी ज़ियाफ़त की तैयारी करते हुए सुख की फ़िज़ा छाई हुई है।"

एक और ने माज़ी के झरोके से पुरानी याद ताज़ा करते हुए कहा, "मुझे तो यह कल की बात लगती है जब शहज़ादा अपनी इसराईली दाया के साथ इस महल में आया। और देखो, पूरे 40 साल गुज़र गए हैं। यह जगह हस्सास शहज़ादे को कितनी अजनबी-सी लगती थी। जब वह अपनी दाया के साथ आया तो कितना शरमीला-सा था। लेकिन जैसे ही वह अपनी अम्माँ हुज़ूर शहज़ादी दुख़तरे-फ़िरऔन से मिला बिलकुल असली शहज़ादा लगने लगा। और फिर जब नौउम्र शहज़ादा शहज़ादी हुज़ूर के साथ महल में फिरा करता था तो वह इस तरह से आदाब का जवाब दिया करता था जैसे शुरू से महल में ही पला-बढ़ा हो। रा देवता हमारी शहज़ादी हुज़ूर पर फ़ज़ल करे। वह उस बच्चे की क़ाबिले-तारीफ़ माँ साबित हुई हैं। यक़ीन जानो, वह उसकी ख़ातिर शेरनी की तरह लड़ा करती थीं। आज भी जब वह शहज़ादे के साथ शाही बग्घी में शहज़ादों

के तमामतर लवाज़िमात के साथ जा रही होती हैं तो गोया उनको अपनी तमामतर अज़ियतों का सिला मिल जाता है।"

वह खिलखिलाकर हँस पड़ी, "जब पहली बार शहज़ादा हाज़िर हुआ तो लोगों की तवज्जुह का मरकज़ बना रहा। महल में हर ज़बान पर बस नन्हे शहज़ादे ही का ज़िक्र था। वह बिलकुल देवताओं जैसा लगता था। बावरचीख़ाने के अमले से लेकर मुहाफ़िज़ों तक, वज़ीर और पुजारी सभी उस पुर-कशिश बच्चे ही के नाम की माला जपते रहते थे। कहीं ऐसा तो नहीं था कि देवता ख़ुद उस बच्चे को शहज़ादी दुखतरे-फ़िरऔन के लिए दरिया के किनारे छोड़ गए थे?"

शहज़ादी दुखतरे-फ़िरऔन की क़रीबतरीन ख़ादिमा ने याददाश्त को दोहराते हुए कहा, "जब शहज़ादा महल में आया तो शहज़ादी साहबा ने उसे नाम दिया। वह उसे बड़े प्यार से अपनी बाँहों में लेकर कहने लगीं, 'आज से तुम्हारा नाम मूसा है, जिसका मतलब है पानी से निकाला हुआ। पता है मैंने तुम्हें दरियाए-नील से बाहर निकाला है। उस वक़्त तुम मुन्ने से बच्चे थे।' जवाब में उस अजनबी बच्चे ने जो कि हकलाकर बोलता था अपनी नरमो-गुदाज़ बाँहें शहज़ादी की गरदन के गिर्द हमायल करते हुए कहा, 'अल्लाह ने आपको दरियाए-नील के साहिल पर लाकर वह नन्ही कश्ती दिखाई जिसके अंदर मैं पड़ा था।' शहज़ादी का चेहरा मारे ममता के किस तरह तमतमा उठा।"

एक निगरान ख़ातून हँसकर बात जारी रखते हुए बोली, “याद है वह मिट्टी की छोटी-सी गाय जो किसी ने उससे लेना चाही थी? शहज़ादी हुज़ूर ने मादराना शफ़क़त से मजबूर होकर उसके पास ही रहने दी थी। वह गाय उसके पुराने घर की एक छोटी-सी यादगार थी। मुहब्बत के इस मामूली से इज़हार से शहज़ादी ने उसका दिल जीत लिया था।”

एक दूसरी ख़ातून हाँ में हाँ मिलाकर बोली, “और याद है वह वक़्त जब उसे घर की याद इतनी बुरी तरह से सताने लगी कि उसने महल से भाग जाने की कोशिश की? उसे इस बात की ख़बर तक न थी कि हर वक़्त उसकी कड़ी निगरानी की जा रही है? बेशक वह ज़्यादा दूर तो नहीं जा सका। उसको फ़ौरन दुबारा उसकी माँ के हवाले कर दिया गया। तो भी यह जानकर वह बहुत उदास हो गया कि वह यहाँ अपनी मरज़ी से आज़ादाना घूम-फिर नहीं सकता। लेकिन शहज़ादी हुज़ूर को उसके इस दुख का शिद्दत से एहसास हो गया। लिहाज़ा वह उसको पहले से भी ज़्यादा प्यार करने लगीं। उन्हें यक़ीन है कि देवताओं ने उसे बड़े बड़े कारनामों के लिए चुन लिया है।”

“याद है वह वक़्त जब शाही तरबियतगाह में ज़िंदगी उसके लिए मुश्किल हो गई। वहाँ का नज़मो-ज़ब्त इतना सख़्त था कि वह छड़ी के इस्तेमाल से भी गुरेज़ नहीं करते। यह देखकर शहज़ादी उसके दुख में बराबर की शरीक रही। मेरा ख़याल है कि जब शहज़ादे ने दीनी पेशा

अपनाने के बजाए असकरी तरबियत का इंतख़ाब किया तो उस वक़्त हमारी शहज़ादी हुज़ूर की कुछ दिलशिकनी भी हुई।”

देवताओं से हज़रत मूसा की शदीद नफ़रत का शुरू ही से इज़हार उन्हें अभी तक याद था। इस सबब से पुरोहित उससे दुश्मनी रखते थे। महल के दीगर लोग शहज़ादे को इस वजह से शक की निगाह से देखते थे कि उसकी रगों में ग़ैरमिसरी ख़ून दौड़ता था। फ़िरऔन के बारह बेटे फ़ौत हो चुके थे। सिर्फ़ एक ही बेटा रह गया था जिसे बाप का जानशीन बनना था। इसलिए ऐन मुमकिन था कि एक न एक दिन शहज़ादा मूसा ही मिसर के तख़्त पर बैठे। ज़ाहिर था कि शहज़ादी दुख़तरे-फ़िरऔन की यही उम्मीद थी।

बादशाह के पहुँचने से एक दिन पहले लशकर ने आख़िरी बार खुले मैदान में रात गुज़ारी। शाही ख़ैमे में हज़रत मूसा करवटें बदल रहे थे। यह वही फ़ातेह मर्द था जिसने अपने मुल्क के लिए एक अज़ीम कारनामा सरंजाम दिया था। उसका लशकर जहाँ से भी गुज़रता अवाम उसकी बड़ी इज़्ज़त कर रहे थे। तो भी शहज़ादा अपने पेशे से नाख़ुश था। बेगुनाहों का ख़ून बहाना, लोगों को उजाड़ना और उन्हें ग़ुलाम बनाकर ले जाना, इन सब बातों से उसे बेचैनी होती थी।

हज़रत मूसा का दिल ऐशो-इशरत की ज़िंदगी से ख़ाली था। आख़िर वह सोचने लगे, मेरी ज़िंदगी का मक़सद क्या है? क्या मैंने तालीम सिर्फ़

इसलिए हासिल की है कि लोगों को हलाक करूँ या उन्हें फ़िरऔन के ग़ुलाम बनाऊँ? कुछ लोग कम अज़ कम किसी देवता को तो पूजते थे। बेशक हज़रत मूसा को मिसरी देवताओं के बारे में तालीम दी गई थी। यहाँ तक कि जब वह अभी छोटे ही थे तो पुजारी ने उनको ख़ासा मुतअस्सिर कर लिया था। "रा सूरज देवता है जिसने सब चीज़ें बनाई हैं। इनसान उसकी आँखों से तख़लीक़ हुआ है और देवता उसके मुँह की तख़लीक़ हैं।" उस नन्हे से बच्चे को कई बार दोहराना पड़ता था कि रा सूरज देवता है जो मिसर का देवता है, और फ़िरऔन रा की इनसानी शक्ल है।

नन्हे बच्चे को रा की शान में आलीशान गीत गाने पड़ते थे। आप जान चुके थे कि रा के अलावा और बहुत-से देवियाँ और देवता हैं जो एक दूसरे से हसद करते, एक दूसरे से लड़ते रहते और ज़हर घोलते रहते थे। हज़रत मूसा तंज़न मुसकरा दिया करते थे। सूरज की शानो-शौकत से चकाचौंध होते हुए भी मिसरी रात और मौत के पुजारी थे। ओसिरिस देवता जो अबदियत का बादशाह और ज़मीन का हाकिम समझा जाता था। वह रा ही की तरह ताक़तवर था। आला अफ़सर और सरदार पुजारी हर फ़िरऔन के जीते-जी उसकी मौत की तैयारियों में लगे रहते थे। मिसर के शाही मुरदों के महलात और अहराम की तामीर में हज़ारों हज़ारों ग़ुलाम ज़ालिम कोड़ों की मार के ख़ौफ़ से पसीना पसीना हुए जाते थे।

दीगर लोग वह तमाम चीज़ें तैयार करने में मसरूफ़ रहते थे जो मरनेवाले फ़िरऔन या शहज़ादे अपने साथ लेकर जाते थे। फ़रनीचर से लेकर खाने तक हर चीज़ उनकी क़ब्रों यानी अज़ीमुश-शान अहराम में उनके साथ जाती थी।

हज़रत मूसा को सूरज का देवता रा और ओसिरिस देवता दोनों पसंद नहीं थे। इसराईलियों का ख़ुदा उनको कितना मुख़्तलिफ़ लगता था जो रौशनी, मुहब्बत और शफ़क़त का ख़ुदा था।

हज़रत मूसा ने ख़ैमे में से अपना सर बाहर निकाला। फ़ौरन ही एक मुहाफ़िज़ चुस्त हो गया। शहज़ादे ने उसे तसल्ली दी, "मुझे थोड़ी-सी ताज़ा हवा खानी है।" ऊपर सितारे बड़े सुकूनबख़्श अंदाज़ में टिमटिमा रहे थे। उन्हें वह बात याद आई जो ख़ुदा ने बुज़ुर्ग इब्राहीम से की थी। "मैं ... तेरी औलाद को आसमान के सितारों और साहिल की रेत की तरह बेशुमार होने दूँगा।"[1] तो क्या अल्लाह तआला इसराईलियों की औलाद को कनान की सरज़मीन में बसाएगा या फिर यह महज़ एक सुनहरा ख़ाब था?

उनके ख़यालात का धारा बुज़ुर्ग हज़रत यूसुफ़ की तरफ़ बह निकला जो किसी वक़्त मिसर के आला हाकिम होते थे। अभी तक उनकी हनूत-शुदा लाश उस दिन के इंतज़ार में जुशन के इलाक़े में रखी हुई थी जब सब लोग फ़लस्तीन में लौटेंगे। हज़रत यूसुफ़ अपने ख़ुदा की राहों पर

1 पैदाइश 22:17

चलते थे। हज़रत मूसा सोचने लगे कि क्या मैं ख़ुद उनकी मानिंद नहीं हूँ? ऐसा आदमी जो कभी किसी बुत के सामने नहीं झुका है? वह कभी भी मिसर की दौलत से मुतमइन नहीं हुए थे। हज़रत मूसा जैसे जैसे उम्र में बढ़ते जा रहे थे वह इस बात के क़ायल होते जा रहे थे कि इबरानी जो अपने आपको "इसराईली" कहलवाते हैं उनका मुस्तक़बिल रौशन है। एक न एक दिन अल्लाह उन्हें आज़ाद करके फ़लस्तीन में ले जाएगा। हज़रत मूसा क़दरे फ़िकरमंद थे कि क्या अगर मैं इसराईलियों में न हुआ तो वह मुझे पीछे छोड़ जाएँगे? जंग लड़ते वक़्त उनके दिल में इससे कहीं हौलनाक जंग जारी थी—ग़ुलाम की ज़िंदगी से महल की ज़िंदगी में मुंतक़िल होने की जंग। उनकी सबसे बड़ी मुश्किल यह थी कि वह एक ही वक़्त में दो रूप क़ायम नहीं रख सकते थे—इबरानियों के बेटे का रूप भी और दुख़तरे-फ़िरऔन के बेटे का रूप भी।

यह बहादुर जरनैल अंदर से कसमसाया हुआ था। वह अपनी सौतेली माँ दुख़तरे-फ़िरऔन को कैसे छोड़ सकते थे जिससे वह बेपनाह प्यार करते थे? दूसरी तरफ़ आपको इसराईलियों से भी मुहब्बत थी। एक दफ़ा तो आप अपने लाग़र वालिदैन और अपने भाई हारून और बहन मरियम से मिलने में कामयाब भी हो गए थे। हज़रत मूसा पर कपकपी तारी हो गई तो वह वापस अपने ख़ैमे में खिसक गए। धीरे धीरे उन पर ग़ुनूदगी ग़ालिब आ गई। अगले ही रोज़ उन्हें अपनी मिसरी माँ से मिलना था। इस दुनिया में वही उनका एक महफ़ूज़ सायबान थी। उसके पहलू

में उनको एहसास होता था कि मुझे कोई समझनेवाला भी है। उनको एक लाडले बेटे का-सा आराम उसी की क़ुरबत में मिलता था। जब वह जुदा होते तो उसकी याद कितनी बुरी तरह से हज़रत मूसा को सताती थी।

अगले रोज़ जब हज़रत मूसा अपने लशकर के साथ दारुल-हुकूमत में दाख़िल हुए तो सड़क के दोनों तरफ़ खड़े लोगों ने पुरज़ोर नारों के साथ उनका पुरतपाक इस्तिक़बाल किया। "रा का फ़रज़ंद मूसा ज़िंदाबाद" के नारे गूँज उठे।

आलीशान बैंड की झंकार और ख़ुशी से सरशार हुजूम के साथ साथ में वह महल तक जा पहुँचे। फ़िरऔन ने अपने मोरछल-बरदार ख़ादिमों समेत उनका पुरजोश ख़ैरमक़दम किया।

"हम तुमसे बहुत ख़ुश हैं।" फ़िरऔन ने अपनी करख़्त-सी आवाज़ में संजीदगी से कहा, "हम तुम्हें मोरछल-बरदार होने के एज़ाज़ से नवाज़ते हैं और अपनी बेटी तुम्हारे अक़द में देते हैं।" फ़ातेह का दिल डूब गया। मोरछल-बरदारी में उन्हें मोरछल समेत ऐन फ़िरऔन के तख़्त के पीछे खड़े होना पड़ेगा। उन्होंने उचटती-सी नज़र सरदार पुजारी पर डाली जो उनको अपनी जज़बात से ख़ाली बेरौनक़ नज़रों में ना-पसंदी के इज़हार लिए देख रहा था।

रस्मी अंदाज़ में आदाब बजा लाते हुए हज़रत मूसा ने फ़िरऔन का शुक्रिया अदा किया जबकि दिल-ही-दिल में वह अपनी सौतेली माँ से

मिलने के लिए इंतहाई बेचैन हुए जा रहे थे। शहज़ादी दुख़तरे-फ़िरऔन ने अपने बेटे के इस्तिक़बाल के लिए प़र्ते-जज़बात से बाँहें फैला दीं। "बेटे, तुम्हारा चेहरा देखने के लिए मैं तो तरस गई थी! घर आना मुबारक हो। मुझे तुम पर बहुत फ़ख़्र है।" यह दराज़क़द जरनैल अपने आलीशान ख़ोद में वाक़ई क़ाबिले-दीद नज़र आ रहा था। लशकर की कामयाब क़ियादत ने उन्हें पुरएतमाद बना दिया था। शहज़ादी ने उनके प्यारे-से चेहरे को अपने नाज़ुक हाथों से थाम लिया और उनकी शफ़्फ़ाफ़ आँखों में मादराना शफ़क़त से मुतलाशी नज़रें गाड़ दीं, फिर सुख का साँस लिया। वह उसकी नज़रों में अब भी वही पुराना, लाडला मूसा थे। यहाँ तक कि मरदानगी के इस मक़ाम पर भी उन्होंने अपने आपको अपने इर्दगिर्द फैली हुई अख़लाक़ी बेराहरवी से पाक रखा था।

अगले ही लमहे वह नरमो-नाज़ुक शहज़ादी अपने मज़बूत बदनवाले दराज़क़द बेटे की बाँहों में थी। "अम्मी हुज़ूर! आपको यों बख़ैरो-आफ़ियत देखकर मुझे बड़ी ख़ुशी हुई है। मैं बड़ी बेचैनी से आपसे दुबारा मिलने के लिए मचल रहा था।"

अरसा पहले शहज़ादी दुख़तरे-फ़िरऔन एक पुर-शबाब फूल थी। माहिराना बनाव-सिंगार की बदौलत अब भी उसके चेहरे पर लड़कियों की-सी नज़ाकत झलकती थी। उसकी विग के लच्छे सुनहरी तारों से गुँधे हुए थे जिस पर उसने हीरों जड़ा सरपोश पहन रखा था। सरपोश के ऐन सामने उक़ाब का सर लगा हुआ था। उसके रेशमी लिबास की तहें

उसके पैरों पर पड़ी हुई थीं। उसने मौजूद तमाम मुलाज़िमों को बरख़ास्त कर दिया। अब वह दोनों ही रह गए थे। हज़रत मूसा तमाम वाक़ियात को दोहराने लगा। शहज़ादी दुख़तरे-फ़िरऔन अपने बेटे की बातों को बड़े ग़ौर से सुनती गई। फ़तह के मुबारक मौक़े के बावुजूद हज़रत मूसा का दिल बड़ा बोझल और बेचैन-सा हो रहा था। शहज़ादी उनका एतमाद हासिल करना चाहती थी लेकिन उसे अलफ़ाज़ नहीं मिल रहे थे। वह धीरे से कहने लगी, "बेटा! मैंने हमेशा तुम्हें समझने की कोशिश की है। मैं तुम्हारे दुख-सुख में शरीक होना चाहती हूँ। क्या मैं फ़िरऔन तक यह बात पहुँचा दूँ कि वह अपनी बेटी के बारे में अपना फ़ैसला वापस ले ले? क्या यही तुम्हारी परेशानी है ना?"

हज़रत मूसा ने उसका हाथ थामते हुए कहा, "शुक्रिया अम्मी हुज़ूर। यह तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।" वह उठ खड़े हुए और झुककर बोले, "आपने माज़ी में मेरे लिए जो कुछ किया है मैं तो उसका भी बजा तौर पर शुक्रियह अदा नहीं कर सकता। और जो कुछ आज भी आप मेरे लिए करने को तैयार हैं उसका शुक्रिया क्योंकर अदा करूँ!"

शहज़ादी दुख़तरे-फ़िरऔन ने भाँप लिया कि उसके बेटे के दिलो-दिमाग़ में एक कशमकश जारी है। वह चाहती थी कि जो बात उनको अंदर ही अंदर खाए जा रही है इसके बारे में ख़ुद उनकी ज़बानी सुने। लेकिन अपना राज़ बताने के बजाए हज़रत मूसा अपने जंगी तजरिबात बयान किए जा रहे थे। वह भला उसे कैसे बता सकते थे कि "अम्मी

हुज़ूर! मैं बहुत दुखी हूँ। मैं आप लोगों में अजनबी ही रहा हूँ। मुझे लगता है मेरी ज़ात बटकर रह गई है। एक तरफ़ तो मैं आपको छोड़ना नहीं चाहता और दूसरी तरफ़ मुहब्बत भरी आवाज़ मुझे मेरे लोगों की तरफ़ बुलाती है जो इतना दुख उठा रहे हैं।"

कई बार काम की ग़रज़ से हज़रत मूसा जुशन के इलाक़े के पास से गुज़रे थे। ख़ाह वह यहाँ से अपनी सुनहरी बग्घी में सवार होकर गुज़रते या कभी फ़िरऔन के ज़ाती रथ में दरियाए-नील के किनारे गश्त कर रहे होते अपने रिश्तेदारों के लिए उनकी फ़िकर बढ़ती चली जा रही थी। यक़ीनन उनमें से बहुतों के ज़हन में बुज़ुर्ग इब्राहीम के ख़ुदा की कोई हक़ीक़त नहीं रही थी। उन्हें एक मददगार की सख़्त ज़रूरत थी। हज़रत मूसा सोचने लगे, "क्या मुझे बुज़ुर्ग इब्राहीम की औलाद का साथ देने के लिए बचाया नहीं गया?" उनके चेहरे पर एतमाद की झलक उभरी। "अगर कोई उनकी मदद कर सकता है तो अल्लाह के अलावा मैं ही हूँ जिसने बेहतरीन तरबियत पाई है। मैं अपनी उम्मत की मुमकिना हद तक मदद करने के लिए तैयार हूँ।" उनके चेहरे पर क़दरे परेशानी के आसार नज़र आने लगे। "मिसर के देवता तो मेरे नज़दीक अजनबी हैं। क्या मैं कभी अपनी उम्मत के ख़ुदा से मानूस हो पाऊँगा? शायद अगर मैं अपने लोगों की क़िस्मत बनाने में उनका साथ दूँ तो ख़ुदा मुझ पर अपने आपको ज़ाहिर करके मेरे दिल को इतमीनान अता कर दे।"

परेशानकुन वाक़ियात

फ़िरऔन को बड़े परिंदों का शिकार करने का बड़ा जुनून था। उसकी पसंददीदा शिकारगाह दरियाए-नील के निचले डेल्टा के क़रीब जुशन के मैदान थे। ऐसे में उस शिकारगाह के किसी शाही बँगले में हज़रत मूसा की चंद दिन आराम करने की ख़ाहिश ऐन फ़ितरी थी। जंग के थका देनेवाले ऐयाम के बाद फ़िरऔन ने शहज़ादे की दरख़ास्त ख़ुशी से क़बूल कर ली। बदक़िस्मती से शहज़ादे को हर वक़्त उसके मुहाफ़िज़, ग़ुलाम और हर क़िस्म के दीगर लोग घेरे रहते थे जिनकी मारिफ़त दुश्मन बड़ी आसानी से उनकी ज़िंदगी की हर तफ़सील पर कड़ी नज़र रख सकते थे।

शिकारगाह की तरफ़ जाने के लिए घोड़े पर सवार होने से पहले शहज़ादे हज़रत मूसा ने शाही महल और वहाँ की अपनी हर पसंददीदा चीज़ को ख़ुदा हाफ़िज़ कहा। उनमें अपनी सौतेली माँ को राज़ बताने की हिम्मत नहीं थी। वह चाहते थे कि दोनों ही हमेशा हमेशा के लिए

ख़ुदा हाफ़िज़ कहने की अज़ियत से बचे रहें। जब वह शिकारगाह के दलदली इलाक़े में पहुँचे तो दिल-ही-दिल में मुसकरा दिए। इस बार वह परिंदों का शिकार नहीं करेंगे।

अगले रोज़ की सुबह जब हज़रत मूसा की आँख खुली तो बड़े हश्शाश-बश्शाश थे। आज उनको अपने घराने और इसराईलियों से मुलाक़ात का मौक़ा मिलेगा। उन पर यह ज़ाहिर करना था कि वह उन्हें कितना अज़ीज़ रखते हैं। इतना अज़ीज़ कि उनकी ख़ातिर वह अपनी सारी शानो-शौकत को ख़ैरबाद कहने को भी तैयार हैं। जब उनका ख़िदमतगार घोड़े लेकर आया तो अभी पौ नहीं फटी थी। बाँस के झुंड और लंबी झाड़ियों के हयूले मुश्किल ही से नज़र आ रहे थे। उन्होंने अपनी काठी के थैले में कुछ रक़म और कपड़े ठूँस लिए और एक बार फिर उनमें मुहिम्म-जूई के सालारे-आज़म का जोश आया। फिर बड़ी सख़्ती से अपने ख़िदमतगार से कहा, "मैं चाहता हूँ कि तुम अंधे और बहरे बन जाओ। आज तुमने न कुछ देखा और न कुछ सुना है। समझे?"

"जी हुज़ूर," ख़िदमतगार ने कुछ ज़्यादा ही झुकते हुए जवाब दिया। "आपका हुक्म सिर आँखों पर।" उस क़ाबिले-एतमाद आदमी ने पहले ही से मुमकिना मुख़बिरी के लिए उस इलाक़े की तलाशी ले रखी थी। उसे ख़तरे की घंटी सुनाई दे रही थी। उसे महसूस हो रहा था कि कोई ग़ैरमामूली बात होनेवाली है। हम जुशन में ग़ुलामों की बस्ती जाने के

लिए चुपके से खिसकने को हैं। आख़िर छुट्टी मनाने के लिए वहाँ पर ही जाने का क्या मतलब?

अब वह बढ़ते बढ़ते इसराईली ग़ुलामों की बस्तियों तक पहुँच गए कि उसके आक़ा ने उसे रुकने के लिए कहा। उस हैरतज़दा ख़िदमतगार की मशकूक नज़रें हज़रत मूसा की तरफ़ उठ गईं। उसके आक़ा अपना लिबास उतार रहे थे। वह जल्दी से मदद के लिए आगे बढ़ा लेकिन आक़ा ने उसे जाने का इशारा किया। आइंदा यह सब कुछ उनको मुलाज़िम के बग़ैर ही करना होगा। ख़िदमतगार को यह देखकर इंतहाई मायूसी हुई जब उसके आक़ा ने ग़ुलामोंवाला लंगोट बाँध लिया।

"लेकिन ... लेकिन मेरे आक़ा, मैं आपकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मेदार हूँ। आपको उनके सामने इस तरह नहीं जाना चाहिए। वह आपको भी मशक़्क़त करने पर मजबूर करेंगे। वह आपके भी कोड़े मारेंगे, बल्कि हो सकता है कि आपकी जान भी ख़तरे में पड़ जाए।"

हज़रत मूसा के होंटों पर मुसकराहट फैल गई। "उसे मुझ पर छोड़ दो, यह मेरी सरदर्दी है। बस घोड़ा पकड़ो और जाओ, ऐश करो।" फिर आख़िरी ज़रूरी हुक्म देने के लिए पलटे। "इससे पहले कि यहाँ से जाओ मेरे कपड़े अमराम और यूकबिद के झोंपड़े में छोड़ते जाना। तुम्हें घर ढूँडने में मुश्किल पेश नहीं आएगी। एक दफ़ा पहले भी तुम वहाँ मेरे साथ जा चुके हो। देखो भूलना नहीं। ठीक तीन दिन के बाद सूरज के ग़ुरूब होते

वक़्त मुझे तुम उसी जगह पर मिलना। अगर मैं न आया तो अकेले ही वापस महल में लौट जाना।"

हज़रत मूसा तेज़ क़दमों से चले गए। ख़िदमतगार उनकी शक्ल देखते देखते कुछ मुतमइन हुआ। सबसे कुंदज़हन बंदा भी उनको ग़ुलाम नहीं समझेगा। जब वह नज़रों से ओझल हो रहे थे तो उनमें वही हाकिमाना रूह नज़र आती थी—जनरल मूसा जो अपने इख़्तियारात से बा-ख़बर है। उनका हुलिया एक ग़ुलाम के हुलिये से बिलकुल फ़रक़ था। न तो उनके कंधे ढलके थे न क़दम ही लड़खड़ा रहे थे और न नज़रें डरी-सहमी और झुकी हुई थीं। उसके आक़ा हुज़ूर एक ऐसे जंगजू की तरह आगे बढ़ रहे थे जैसे मैदाने-जंग में क़दम रख रहे हों। वह यह सब कुछ फ़तह के यक़ीन के साथ कर रहे थे। हज़रत मूसा को बड़ी उम्मीद थी कि उनके भाई उनको अपना नजातदहिंदा क़बूल कर लेंगे। वह अपने भाइयों की ग़ुलामी और अज़ियत में शरीक होकर उन्हें अपनी मुहब्बत का सबूत देने को थे।

हज़रत मूसा की नज़रों के सामने उफ़ुक़ तक गारे से भरा हुआ मैदान फैला हुआ था। लोगों की बेशुमार क़तारें अपने माहिर हाथों से बड़ी बड़ी ईंटें ढाल रहे थे। जिस्मों की यह सब क़तारें नपी-तुली थाप पर एक साथ काम करती थीं। निगरान का कोड़ा उस बेचारे ग़ुलाम पर ज़ोर से पड़ता जो काम में पीछे रह जाता। लेकिन उन सज़ा पानेवालों के न तो चेहरे नज़र आते और न जिस्म ही दिखाई देते थे। क्योंकि वह एक दूसरे के

साथ बिलकुल जुड़े हुए थे। उन बेचेहरे लोगों का मंज़र देखकर जिनके अपने कोई हुक़ूक़ ही नहीं थे शहज़ादा भौंचक्का रह गया। उन लोगों में शहज़ादा किस तरह शरीक हो सकेगा जो अपनी सज़ा को पूछे बग़ैर क़बूल किए हुए हैं! हज़रत मूसा दिल में अपनी कामयाबी पर शक करने लगे। वह फ़िरऔन के महल में उतने अजनबी नहीं थे जितने अपने लोगों में। फिर उनको याद आया कि यह सब हज़रत इब्राहीम की औलाद हैं। गो यह लोग ग़ुलामी के आदी हो चुके हैं फिर भी अल्लाह उनके लिए बड़े काम करनेवाला है। यह सोचकर उनका दिल अपने भाइयों के लिए मुहब्बत और हमदर्दी से लबरेज़ हो गया और वह फिर से अपने मिशन को जारी रखने पर तैयार हो गए।

फिर हज़रत मूसा ने ख़ुश्क दलदली हिस्से से ग़ुलामों की क़तारें देखीं जो आगे बढ़ी चली आ रही थीं। उन्होंने लकड़ी के बड़े-से डंडे के दोनों तरफ़ लटकी हुई दो टोकरियाँ उठा रखी थीं। उनमें रखा हुआ गारा कुचलनेवालों तक पहुँचाया जा रहा था। गारे में भुस मिलाया जा रहा था। गारा कुचलनेवाले उस गारे में दाख़िल होकर उसे मज़ीद कुचलने लगे।

जब वह इसराईली निगरान की थाप पर गारा कुचल रहे थे तो उनके जिस्म पसीने से चमक रहे थे। निगरान का कोड़ा मुसलसल ग़ुलामों के सरों पर लहरा रहा था। “तेज़ ... और तेज़ ... एक दो। एक दो।

दायाँ नीचे। बायाँ ऊपर।" हज़रत मूसा ने उनके ज़रद चेहरों को देखा तो परेशान हो गए। वह फिर भी डर के मारे काम किए जा रहे थे।

एक बूढ़े इसराईली की ताक़त जवाब दे गई। निहायत बेरहमी से उस बेयारो-मददगार पर ज़ोर ज़ोर से पै-दर-पै कोड़े बरसने लगे। एक, दो, तीन। और गारा कुचलनेवालों की नज़रों के सामने बेचारा मज़लूम गारे में धँस गया। "हड हराम कहीं का। चलो छुट्टी हुई," ग़ुलामों का निगरान बड़ी सर्दमहरी से बुड़बुड़ाया। "अब उसकी हड्डियों से ईंटें और भी मज़बूत हो जाएँगी।"

हज़रत मूसा अब अपने ग़ुस्से पर मज़ीद क़ाबू न रख सके। लंबे लंबे डग भरते हुए वारिदात की जगह पर पहुँचे। मज़लूम को बचाने के लिए आगे बढ़े और काम लेनेवाले को मक्खी की तरह एक तरफ़ धकेल दिया लेकिन बेसूद। वह बुज़ुर्ग मर चुका था। हज़रत मूसा ग़ुस्से से बिफर गए, "तुम लोग कितने वहशी हो। क्या एक भाई दूसरे भाई की मदद नहीं कर सकता?" वह फुँकारे और फिर ख़ौफ़ज़दा निगरान के हाथ से कोड़ा झपट लिया।

"तुम तो इस लायक़ भी नहीं कि तुम पर हाथ उठाया जाए," हज़रत मूसा दहाड़े। मिसरी निगरान काम लेनेवाले पर चिल्लाए जा रहा था कि कोड़ा उठाकर काम जारी रखे। उसकी ग़ुस्से से भरी नज़रें दराज़क़द अजनबी पर पड़ीं जो लाश के पास खड़ा था। ताँबे से मढ़ी हुई छड़ी हज़रत मूसा को सबक़ सिखाने के लिए हवा में लहराई, लेकिन फिर

मिसरी ने अपना इरादा बदल लिया। उसका हाथ नीचे ढलक गया। यह तो आज़ाद और बा-इख़्तियार मर्द यक़ीनन मिसरी है, ग़ालिबन फ़िरऔन का जासूस।

हज़रत मूसा आगे बढ़ गए। उनका दिल अपने बरहना जिस्म, कुचले हुए भाइयों के लिए दर्द से भर गया था जिनके बाल चुपड़े हुए और जिस्म ढलक चुके थे। दूर कहीं उनकी नज़र किसी मुतहर्रिक चीज़ पर पड़ी। यह क्या चीज़ है? जब उनकी आँखें सूरज की चुँधिया देनेवाली रौशनी से मानूस हुईं तो उन्होंने देखा कि बहुत-से ग़ुलामों को एक बड़े से पत्थर के साथ जोता गया है जिस पर मिसरी निगरान बैठा हुआ है। उसकी छड़ी की थाप पर ग़ुलामों के जिस्म झुककर ज़ोर लगाते हुए खींचते जा रहे थे। उनके बाज़ुओं पर दर्द की शिद्दत से नील पड़ गए थे। और जिस्म अपनी बची-खुची क़ुव्वत के पूरे ज़ोर पर आगे गिरते पड़ते थे। हज़रत मूसा कराह उठे। मैं उनकी मदद कैसे करूँ?

जब शाम हुई तो हज़रत मूसा अपने वालिदैन से मिलने के लिए तैयार हो गए। क़रीब का मैदान लोगों से बिलकुल ख़ाली हो गया था। अचानक एक चीख़ ने फ़िज़ा को चीरा। एक भाई को मदद की ज़रूरत थी। हज़रत मूसा आवाज़ की सिम्त चल पड़े। अब उन्होंने उस मज़लूम को देखा। वह एक नौजवान था, बिलकुल लड़का-सा जो डरा हुआ एक मिसरी निगरान के सामने खड़ा था। मिसरी का ताँबे से मढ़ा हुआ कोड़ा उसे मारने के लिए उठा हुआ था।

"अच्छा तो तुम मुझे आज शाम लड़खड़ाकर गिरते हुए देखकर हँसे थे। हाँ मैंने तुम्हारे इस ग़लीज़ चेहरे पर मुसकराहट देखी थी। जानते हो मैं कौन हूँ? फ़िरऔन का मुक़र्रर किया हुआ निगरान। ज़लील ग़ुलाम! मैं तुम्हें मज़ा चखाता हूँ। यह लो।" वह नौजवान अपने बाज़ुओं से अपने सर को बचा रहा था। हड्डियाँ कड़कने की तकलीफ़देह आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। और फिर चीख़ता-चिल्लाता हुआ नौजवान लड़खड़ाता हुआ ज़मीन पर ढेर हो गया। वह ख़ौफ़ज़दा नज़रों से अगले मोहलक वार का इंतज़ार करने लगा।

चूँकि उस मिसरी की पुश्त हज़रत मूसा की तरफ़ थी इसलिए उस वहशी को उनकी मौजूदगी का इल्म न हो सका। हज़रत मूसा ने जल्दी जल्दी इधर-उधर नज़र दौड़ाई। कोई भी मौजूद न था। फिर क्या हुआ? उन्होंने बड़ी महारत से उन ज़ालिम हाथों से कोड़ा मरोड़कर खींचा। "तुम अपना ग़ुस्सा ठंडा करने के लिए इस बेचारे को जान से मारोगे?"

अब काँपने और रहम की भीख माँगने की बारी उस मिसरी की थी। लेकिन हज़रत मूसा का दिल ग़ुस्से से इस क़दर भरा हुआ था कि जब तक उन्होंने उस आदमी को मौत के घाट उतार न दिया तब तक उन्हें तसल्ली न हुई। फिर उन्होंने जल्दी जल्दी उसकी लाश को रेत में दबा दिया। उनके फ़ारिग़ होने तक वह लड़का जा चुका था। हज़रत मूसा को क़दरे सुकून मिला। आख़िर वह एक भाई को यक़ीनी मौत के मुँह से

बचा सके थे। उन्हें उम्मीद थी कि वह नौजवान अपनी भलाई की ख़ातिर ही अपना मुँह बंद रखेगा।

हज़रत मूसा के घर में रात बसर करने पर अमराम और यूकबिद कितने ख़ुश थे! अमराम ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा, "बेटा, मैं जानता था कि तुम इन दिनों किसी रोज़ ज़रूर आओगे।"

यूकबिद ने अपना झुर्रियों भरा हाथ अपने बेटे के कंधे पर रखते हुए शरमाकर पूछा, "क्या तुम अपने भाइयों का बोझ बाँटने आए हो?"

"जी हाँ" उसके बेटे ने फ़ौरन जवाब दिया। "सिर्फ़ बोझ ही नहीं बल्कि बरकत भी। जब इसराईली उस मुल्क में जाएँगे जिसको देने का ख़ुदा ने वादा किया है तो मैं भी उनके साथ जाऊँगा।"

मरियम ख़ामोशी से उनके थके हुए जिस्म को दबाने लग गई। उधर अमराम ने बड़ी कमज़ोरी से बात काटते हुए कहा, "हमारे बापदादा का ख़ुदा हमें मिसर से निकाल ले जाने की क़ुदरत रखता है। फ़िरऔन माने या न माने वह हमें उसके चंगुल से निकाल सकता है।" और फिर अपनी दुबली-पतली उँगली उठाकर बात पर ज़ोर देते हुए कहने लगा, "वह यह काम अपने मनसूबे के मुताबिक़ अपने वक़्त पर ज़रूर करेगा।"

उस शाम हज़रत मूसा ने अपने भाइयों के बारे में बहुत-सी मालूमात हासिल कीं। अगरचे उनका ईमान कमज़ोर पड़ रहा था तो भी अभी तक उनके बुज़ुर्ग मौजूद थे जो अपने ईमान और रसूमात को बरक़रार रखे हुए थे। उनमें जो लोग अल्लाह पर ईमान रखते थे वह अपने भाइयों पर

अपनी मुहब्बत का इज़हार करते रहते थे। उस शाम हज़रत मूसा ने बड़े जोश और वलवले के साथ दुआ माँगी कि उनके आबा का ख़ुदा अपने आपको उन पर ज़ाहिर करे और यह भी कि वह उन्हें इसराईल की रिहाई के लिए इस्तेमाल करे।

अगले रोज़ तामीर की जगह पर एक अजीब वाक़िया पेश आया। जहाँ कहीं हज़रत मूसा मदद के लिए अपना हाथ बढ़ाते इसराईली उनकी तरफ़ पुश्त फेर लेते। इसराईली निगरान और फ़ोरमैन भी उन्हें बराबर नज़रंदाज़ कर रहे थे। यों लगता था कि उनके साथ इस क़िस्म का रवैया इख़्तियार करने में ग़ुलामों और निगरानों ने एका कर रखा है। काम के बाद शाम को यह राज़ खुलकर सामने आ गया। एक गारा उठानेवाले ने अपने एक साथी पर हमला किया जिसके साथ वह सारा दिन काम करता रहा था। वह अपने कमज़ोर शिकार को बड़ी बेदर्दी से मारने और साथ साथ ग़लीज़ गालियाँ बकने लगा।

हज़रत मूसा जल्दी उसे बचाने को आगे बढ़े, “लड़ना बंद करो!”

उन्होंने अपने मज़बूत बाज़ुओं से उन आदमियों को पकड़कर एक दूसरे से अलग कर दिया। “तुम अपने भाई को क्यों मार रहे हो?”[1] हज़रत मूसा की शोलाबार आँखें हमलाआवर पर गड़ी रहीं।

1 ख़ुरूज 2:13

“किसने आपको हम पर हुक्मरान और क़ाज़ी मुक़र्रर किया है?” वह बड़ी गुस्ताख़ी से चिल्लाकर बोला। “क्या आप मुझे भी क़त्ल करना चाहते हैं जिस तरह मिसरी को मार डाला था?”[1]

यह सुनकर हज़रत मूसा डर गए। भेद फ़ाश हो चुका था। उनकी ज़िंदगी ख़तरे में पड़ गई थी। जब अपने ठुकराते हैं तो कितना दुख होता है। वह उनकी मदद करना चाहते थे ख़ाह इसके लिए उनको अपना जाहो-जलाल ही क्यों न क़ुरबान करना पड़े। लेकिन उनके अपने लोग उन्हें अपना दुश्मन समझने लगे थे। यह देखकर वह भाग खड़े हुए। अब फ़िरऔन की तलवार उनके सर पर लटक रही थी जिसे उनके अपने लोगों ने तेज़ किया था। ज़िंदगी में पहली बार उनको ठुकराए जाने की तलख़ी का एहसास हुआ। उन्हें हमेशा एक अहम शख़्सियत समझा जाता रहा था। ऐसी शख़्सियत जिसकी बात सुनी जाती थी। इससे पहले उन्होंने कभी भी ऐसी कमीनगी का मज़ा नहीं चखा था। नहीं। वह उन लोगों को नजात नहीं दिला सकेंगे।

एकाएकी एक औरत साय की तरह उनके पास से नमूदार हुई। मरियम थी। उसने अपने बाज़ुओं में एक गठड़ी दबा रखी थी। “भाई! तुम्हें भाग जाना चाहिए। तुम अपने भाइयों में महफ़ूज़ नहीं हो। यह लो अपना मिसरी लिबास ले लो। पेटी और पैसे भी। और यह भी, यह खाना है। रास्ते में काम आएगा,” उसने इसरार करते हुए कहा।

---

1 ख़ुरूज 2:14

मरियम बड़े दुख से अपने भाई को देखती रही जो ख़ामोशी से कपड़े पहनने लगे। उनकी सबसे बड़ी ज़रूरत को फ़ितरी तौर पर महसूस करते हुए उसने धीरे से कहा, "हम तुम्हारे घराने के लोग तुझे दिल से प्यार करते हैं। अम्माँ, अब्बा और हारून चाहते थे कि मैं तुम्हें यह बात बता दूँ और हाँ मूसा! हमारा ख़ुदा अपने आपको क़ादिरे-मुतलक़ कहता है। वह अब भी हमें फ़िरऔन के हाथ से छुड़ा सकता है। अब जल्दी करो। हमारे बापदादा का ख़ुदा तुम्हारी हिफ़ाज़त करे।" उसने अपने भाई को इस तरह ज़ोर से भींच लिया जैसे उसे जाने नहीं देगी। और फिर जिस ख़ामोशी से वह आई थी उसी ख़ामोशी से वह रात की तारीकी में ग़ायब हो गई।

अब हज़रत मूसा को और ज़्यादा समझाने की ज़रूरत न रही। वह वहाँ से जल्दी से फ़रार हो गए। उन्हें ज़िंदगी में कभी भी अकेलेपन का इतना शदीद एहसास नहीं हुआ था जितना उस रात हुआ। सिर्फ़ सितारे उनके साथी थे। अफ़सोस उनके भाई उनके लिए मिसरियों से भी ज़्यादा अजनबी बन गए थे। वह यह बात तसव्वुर भी नहीं कर सकते थे कि उनके मिसरी घर और क़बीले के दरवाज़े दोनों ही उन पर बंद हैं। बेहाल और लड़खड़ाते हुए उनको अपने जदे-अमजद हज़रत याक़ूब का ख़याल आया जिनको जवानी में अपने घर से भागना पड़ा था। जब हज़रत याक़ूब ने पहली रात तन-तनहा सड़क पर पड़ाव डाला था तो अल्लाह उनसे ख़ाब में हमकलाम हुआ था। उस वक़्त उसने उनको

यक़ीन दिलाया था कि वह उनके साथ चलेगा और उन्हें हिफ़ाज़त से घर वापस लाएगा।

हज़रत मूसा ने आसमान पर नज़र डाली जिस पर दूर, बहुत दूर अनगिनत सितारे टिमटिमा रहे थे। उन्होंने गहरी साँस भरी। उन्हें यों लगा जैसे उन सितारों की तरह ख़ुदा तक भी रसाई नामुमकिन है। उनके पास वह इतमीनान नहीं था जो रब ने हज़रत याक़ूब को अता किया था बल्कि वह अल्लाह और अपने भाइयों से अपने आपको कटा हुआ महसूस कर रहे थे। जब उन्होंने अपनी थकावट के बाइस सुर्ख़ सुर्ख़ आँखें आसमान की तरफ़ उठाकर देखा तो उन्हें यों लगा जैसे ख़ुदा मुझसे नाराज़ है, क्योंकि मैंने उसको मायूस किया है।

बयाबान में बुलाहट

एक शाम एक थका-माँदा मुसाफ़िर मिदियान शहर के बाहर कुएँ के पास बैठ गया। यह मनमोहन शहर रेगिस्तान के ऐन बीच में सरसब्ज़ जज़ीरे की तरह दिखाई दे रहा था। अजनबी मुसाफ़िर हज़रत मूसा ने ढलते सूरज पर अपनी नज़रें जमा रखीं जो आहिस्ता आहिस्ता नज़रों से ओझल होता जा रहा था। उनकी आँखें डबडबा आईं और एक सर्द आह होंटों पर बिखर गई। उनकी दो माएँ थीं और अब वह दोनों ही उनसे बिछड़ चुकी थीं। क्या उन पर अल्लाह की फटकार थी कि वह अपने ही प्यारों की नज़र में अजनबी बने रहें?

ऐन उसी वक़्त एक माहिर बँसरी-नवाज़ चरवाहे ने मधुर-सी तान छेड़ दी जिसे सुनकर हज़रत मूसा आलमे-महवियत में भी मुसकरा दिए। बँसरी की धुन में लड़कियों-बालियों के चहचहों और ख़ुश-गप्पियों की आवाज़ें भी गडमड हो रही थीं। सूरज की आख़िरी किरनों की रौशनी में धूल के बादल में घिरी हुई सात लड़कियाँ अपने रेवड़ हँकाती, उनकी

तरफ़ बढ़ती हुई दिखाई दीं। उनमें से जो बड़ी लग रही थी रेवड़ के साथ साथ बँसरी बजाती हुई चली जा रही थी। दूसरी लड़कियाँ सबसे छोटी पर नाराज़ हो रही थीं जो कि रेवड़ को हाँक रही थी। एकाएकी बड़ी लड़की ने बँसरी बजाना बंद कर दिया और उस आफ़त की पुड़िया की तरफ़ रुख़ करते हुए बोली, "उसे छोड़ दो। मैंने उसे रेवड़ हाँकने को कहा है।" उसका लहजा हाकिमाना था। "उस मुश्किल काम के लिए तैयार हो जाओ जिससे हमें अब निपटना है।"

दो बहनें पुकारीं, "अरे, अरे! वह देखो कुएँ के पास एक मिसरी खड़ा है।" लड़कियाँ चुप-चाप अपने रेवड़ समेत अजनबी के पास से गुज़र गईं और पानी भरने लग पड़ीं।

हज़रत मूसा को उनकी मुतजस्सिस निगाहें महसूस हो रही थीं। साथ साथ वह हैरान थे कि वह इतनी जल्दी जल्दी पानी क्यों भर रही हैं। क्या वह मुझसे ख़ौफ़ज़दा हैं? अभी प्यासे रेवड़ ने पानी पीना शुरू ही किया था कि बेशुमार दीगर चरवाहे अपने अपने रेवड़ लिए आ पहुँचे। हर तरफ़ अजब अफ़रा-तफ़री फैल गई। दूर ही से उन्होंने बड़े वहशियाना अंदाज़ में अपनी लाठियाँ हिलाते हुए चिल्ला चिल्लाकर लड़कियों को धमकाना शुरू कर दिया। लड़कियाँ दहशतज़दा हो गईं, मायूसी से चीख़ती चिल्लाती जल्दी जल्दी से अपना रेवड़ हटाने लगीं। वह ख़ानाबदोश चरवाहे उनके सर पर आ पहुँचे और बड़ी बेदर्दी से उनको

एक तरफ़ धकेलते हुए दहाड़े, "दफ़ा हो जाओ, फ़ज़ूल औरतें न हों तो। चलो पानी गंदा न करो। नाक कटवाना चाहती हो?"

अभी लड़कियाँ अपने रेवड़ लिए एक तरफ़ को होने ही को थीं कि अचानक उस हंगामा-आराई के शोर पर अजनबी की भारी रोबदार आवाज़ हावी हो गई, "बुज़दिलो! उन्हें छोड़ दो। पानी उन्होंने अपने रेवड़ के लिए निकाला है। चले जाओ यहाँ से।"

उठे हुए मज़बूत बाज़ू पर एक नज़र डालते ही वह बुज़दिल फ़ौरन पीछे हट गए। लड़कियों की हैरानो-शशदर निगाहें अभी तक उन मूज़ियों का ताक़्क़ुब कर रही थीं कि अजनबी ने उन्हें वापस बुला लिया और उनके रेवड़ के लिए पानी निकालने लगा। यह देखकर उनकी ज़बान खुल गई। उनका रेवड़ अपनी प्यास बुझाता गया और वह एक बार फिर गप-शप और हँसी-मज़ाक़ में लग गईं।

बड़ी लड़की कहने लगी, "अरी बहनो! ज़रा सोचो! पहली दफ़ा हमारे इन मूज़ी दुश्मनों ने पछाड़ खाई है। हाय, हाय! कल वह इसका बदला लेके छोड़ेंगे।" लड़कियों ने अपने मददगार का नाम पूछना मुनासिब न समझा। नतीजे में उनके तजस्सुस की तसकीन न हो पाई, और उन्होंने बड़ी गरमजोशी से उस अजनबी का शुक्रिया अदा किया और अपने रास्ते पर हो लीं।

हज़रत मूसा कुएँ पर बेचैनी से चक्कर काटने लगे। देखते ही देखते धुँधलके की सुरमई चादर ने उनको लपेट लिया। उन्हें पता न था कि

किस तरफ़ मुड़ें कि इतने में एक बार फिर वही आवाज़ें उनके कान में खनकने लगीं। बड़ी लड़की अपनी बहनों के आगे आगे सर उठाए चली आ रही थी। उन्होंने बड़े आदाब से झुककर हज़रत मूसा को सलाम किया। बड़ी लड़की की आवाज़ एक सुरीले नग़मे की तरह हज़रत मूसा के कान में रस घोलने लगी।

"हमारे बाप यितरो आपको रात हमारे ग़रीबख़ाने में बसर करने के लिए बुला रहे हैं।"

हज़रत मूसा ने बड़ी ख़ुशी से उनकी दावत क़बूल कर ली। उन्होंने बड़े फ़ख़्र के साथ अपने इस अजनबी मददगार को अपने बाप से मिलवाया। हज़रत मूसा ने फ़ौरन पहचान लिया कि लड़कियों का बाप इमाम है क्योंकि उसका सर, दाढ़ी-मूँछें और भौंएं मुंडी हुई थीं।

इमाम ने बड़ी गरमजोशी से हज़रत मूसा का इस्तिक़बाल किया। "आपने हमारी छत के नीचे आकर हमें इज़्ज़त बख़्शी है। उन बदमाश चरवाहों से मेरी बेटियों को बचाने का बहुत बहुत शुक्रिया और फिर इससे बढ़कर यह कि आपने उनके रेवड़ को पानी पिलाया। मेरा घर आप ही का घर है। हमारे पास जो कुछ है उसमें आपको शरीक करके हमें ख़ुशी होगी।" वह बड़े ख़ुशगवार अंदाज़ में मुसकरा दिया। उसने हज़रत मूसा को बहुत ज़्यादा झुककर सलाम किया। हज़रत मूसा उनकी इस पुरजोश मेहमान-नवाज़ी से बहुत ख़ुश हुए।

अब अपनी राम कहानी सुनाने की बारी हज़रत मूसा की थी। यितरो ने फ़ौरन ही उनको उस अलग-थलग जगह में तहफ़्फ़ुज़ का यक़ीन दिलाया। “यहाँ मिदियान में हर एक इब्राहीम और इसराईलियों के बारे में जानता है। और आपके जदे-अमजद यूसुफ़ का ज़िक्र भी हम आपस में करते रहते हैं जो कभी मिसर के हाकिम थे। हमारे लोग इसराईलियों की बड़ी इज़्ज़त करते हैं।” वह हज़रत मूसा की तरफ़ झुकते हुए कहने लगा, “एक बात बताऊँ। मुझे एक चरवाहे की सख़्त ज़रूरत है। अगर आप ही मेरी भेड़ों की रखवाली करने पर राज़ी हो जाएँ तो मैं आपको ख़ुशी से अपने घराने का फ़रद बना लूँगा। इससे आपका मसला भी हल हो जाएगा। यहाँ बड़ा सुकून और ख़ामोशी भी है।” होबाब जिसके माथे पर ख़ानदानी निशान दाग़ा हुआ था भी रज़ामंदी में सर हिलाने लगा।

हज़रत मूसा ने चंद लमहे सोचने के बाद जवाब दिया, “मैं ख़ुशी से आपकी पेशकश क़बूल करता हूँ। मेरे बापदादा भी चरवाहे थे, मैं भी चरवाहा बनूँगा।” पस शहज़ादा मूसा चरवाहा बन गए जिनका ज़्यादातर वक़्त बयाबान में रेवड़ के साथ गुज़रने लगा। यितरो के लिए उनके दिल में इज़्ज़त बहुत ज़्यादा बढ़ गई। अपने लोगों में वह सिर्फ़ इमाम ही नहीं था बल्कि मुआलिज, मुंसिफ़, सालिस और मुशीर भी। बिला-शुबहा यितरो दानिशवर था जो लोगों की बातें और मसायल ग़ौर से सुनता और उनकी मदद करने का ख़ाहिशमंद था। लेकिन एक बात पर उनका आपस में इख़्तिलाफ़ था। यितरो ग़ैरमाबूदों पर ईमान रखता था। इसके

सिवा हज़रत मूसा उनके मुहब्बत भरे ख़ानदानी माहौल में बहुत ख़ुश थे।

हज़रत मूसा को यितरो के घर में ठहरे जितना ज़्यादा अरसा होता जा रहा था उतना ही ज़्यादा यितरो को उन पर तरस आने लगा। अब वह हज़रत मूसा को अपने बेटे की तरह चाहने लगा था। हज़रत मूसा के अलावा सब लोगों का एक देवता था जिसकी तरफ़ वह ज़रूरत के वक़्त रुजू किया करते थे। लेकिन ख़ुद हज़रत मूसा जो अपने बापदादा के ख़ुदा पर ईमान रखते थे उनका अपने ख़ुदा के साथ कोई राबता न था। आख़िर यितरो इस नतीजे पर पहुँचा कि शादी हज़रत मूसा के मसले को हल कर देगी। ज़ाहिर है सफ़्फ़ूरा के दिल में भी हज़रत मूसा के लिए जगह थी। क्योंकि वह इस बात का हर वक़्त ख़याल करती थी कि उनको किसी चीज़ की कमी न हो। जहाँ तक हज़रत मूसा का ताल्लुक़ था वह भी उसके हुस्न और ख़बरगीरी से मुतअस्सिर हुए बग़ैर न रह सके। लिहाज़ा यितरो ने हज़रत मूसा को सफ़्फ़ूरा से शादी की पेशकश की जिसको उन्होंने बड़ी ख़ुशी से क़बूल कर लिया।

वह शादी क़ाबिले-एहतराम इमाम की बेटी के शायाने-शान बड़ी धूमधाम से अंजाम पाई। लोगों ने दूल्हा-दुलहन की जी भरकर तारीफ़ की। कितनी ख़ूबसूरत जोड़ी थी। दुलहन इतनी नाज़ुक और पुर-वक़ार और दूल्हा इतना शकील और बड़ा आलिम। सफ़्फ़ूरा की छः बहनें तो हज़रत मूसा जैसा बहनोई पाकर फूले नहीं समाती थीं।

लेकिन अफ़सोस, इमाम यितरो की इस तरकीब से भी हज़रत मूसा का मसला वहीं का वहीं रह गया। अगरचे जोड़े के इज़दिवाजी ताल्लुक़ात बहुत ख़ुशगवार थे तो भी हज़रत मूसा की अज़ीमतरीन ख़ाहिश अभी पूरी न हुई थी। जब सफ़्फ़ूरा उम्मीद से हुई तो नई आस बँध गई। यक़ीनन यह नरमदिल, चाहनेवाला शौहर बच्चे की पैदाइश पर ख़ुद ही टिककर बैठ जाएगा। ख़ास तौर पर अगर बेटा पैदा हुआ तो सब कुछ ठीक हो जाएगा।

फिर बेटा पैदा हुआ। उनको ख़ुशी का कोई ठिकाना ही न था। हज़रत मूसा बड़ी बेताबी से अपने बेटे और सफ़्फ़ूरा को देखने गए। सफ़्फ़ूरा की स्याह आँखें ख़ुशी से चमक रही थीं। उसने बच्चा उनको पकड़ाते हुए कहा, "मुन्ने के अब्बा! अपने पहलौठे का नाम आप ख़ुद रखें।"

"इसका नाम जैरसोम यानी 'अजनबी मुल्क में परदेसी' हो," हज़रत मूसा ने कहा, "क्योंकि मैं अजनबी मुल्क में परदेसी हूँ।"[1] फिर फ़ौरन ही उन्होंने सफ़्फ़ूरा को यक़ीन दिलाया कि इसमें उसका कोई क़ुसूर नहीं है कि उनको मिदियान में अजनियत महसूस होती है। वही एक औरत थी जिससे वह मुहब्बत करते थे और अब उससे उनका प्यारा-सा बेटा भी पैदा हो चुका था जिसको वह टूटकर चाहते थे। दर-हक़ीक़त उस पुरमुहब्बत नए अब्बू को देखकर सफ़्फ़ूरा और उसके सारे घराने की बड़ी ढारस बँध जाती थी। जब कभी मुमकिन होता हज़रत मूसा रात

1 ख़ुरूज 2:22

को घर लौट आया करते। सफ़्फ़ूरा और जैरसोम उनकी राह देखते रहते। जैसे ही बच्चे ने चलना सीखा वह डगमगाता हुआ अपने बाप के फैले हुए बाज़ुओं में जा समाता था। यहाँ तक कि जब नन्हा जैरसोम ज़िद करता और मनमानी करने के लिए अड़ जाता तो अब्बू मूसा बड़े सब्र से उसकी हर बात बरदाश्त कर लिया करते थे।

एक रात सारा घराना भड़कती आग के गिर्द बैठा जैरसोम को अपने बाप की गोद में बैठे देख रहा था। सफ़्फ़ूरा का चेहरा ख़ुशी से तमतमा उठा। वह कहने लगी, "जैरसोम तो अब्बू का मुन्ना-सा भेड़ू है।" सब हाँ में सर हिलाकर मुसकरा दिए।

लगता था उन दिनों हज़रत मूसा बहुत ज़्यादा ख़ुश थे। फिर भी वह रोज़ बरोज़ ज़्यादा ख़ामोश रहने लगे। जब उनका दूसरा बेटा पैदा हुआ तो सफ़्फ़ूरा की आँखों में ख़ुशी के आँसू भर आए क्योंकि हज़रत मूसा ने बच्चे का नाम इलियज़र रखा जिसका मतलब है, "अल्लाह मेरा मददगार है।" उसे यों महसूस हुआ जैसे उसके ख़ावंद की परेशानी के दिन बीत चुके और अपने आबाओ-अजदाद के ख़ुदा का ईमान दिल में लौट आया है।

एक ख़ुशगवार सुबह को हज़रत मूसा रेवड़ लेकर रवाना हुए। अपनी भेड़ों को हँकाते हँकाते बयाबान के मग़रिब की तरफ़ चलते चलते होरिब पहाड़ तक जा पहुँचे। ज़्यादातर भेड़ें घास चरने लग गईं, कइयों ने चटानों

के साय में आराम करने को तरजीह दी जबकि बाक़ी चिलचिलाती धूप में हाँप रही थीं। यह दिन भी आम दिनों जैसा ही था। हज़रत मूसा अपना असा थामे गहरी सोच में ग़रक़ हुए। "40 साल के तवील अरसे से मैं भेड़ों की पासबानी कर रहा हूँ। तो क्या मैं मिदियान में चरवाहे की ज़िंदगी बसर करते हुए ही उम्र गुज़ार दूँगा? क्या मेरे वालिदैन के ईमान की दिलेरी अकारत जाएगी? आख़िर उन्होंने संगीन हालात में मेरी जान बचाई।" इसराईलियों के लिए अभी भी उनके दिल में शदीद मुहब्बत ठाठें मार रही थी। फ़िरऔन की मौत और उसके बेटे की तख़्तनशीनी की ख़बर मिदियान तक पहुँच चुकी थी। बदक़िस्मती से नया फ़िरऔन अपने बाप से भी ज़्यादा ज़ालिम साबित हुआ। हज़रत मूसा की अपने असा पर गिरिफ़्त और मज़बूत हो गई। उन्हें अपनी क़ौम की अज़ियत ख़ुद अपने जिस्म में महसूस हो रही थी। उनकी बदक़िस्मती नाक़ाबिले-बरदाश्त थी। अब उन पर क्या बीत रही होगी?

हज़रत मूसा पहाड़ के दामन की घंबीर ख़ामोशी से मुतअस्सिर होने लगे। वह मंज़र से लुत्फ़अंदोज़ होने के लिए पलटे तो एक झाड़ी में आग लगी हुई दिखाई दी। यह कोई ग़ैरमामूल बात नहीं थी, क्योंकि गरमी के मौसम में ख़ुश्क झाड़ियों को बड़ी आसानी से आग लग जाया करती थी।

लेकिन यह झाड़ी मुसलसल जल रही थी। वह भस्म नहीं हो रही थी। इस अजीब मंज़र को देखकर हज़रत मूसा की दिलचस्पी बढ़ गई।

वह अपने रेवड़ को हँकाते हँकाते उस अजीबो-ग़रीब मंज़र की तरफ़ आहिस्ता आहिस्ता बढ़ने लगे। वहाँ पहुँचते ही आग के बीच में से एक आवाज़ निकली। "मूसा! मूसा!" हज़रत मूसा उसी जगह जमकर बुत बन गए। उनकी आँखें हैरत से फटी की फटी रह गईं। उन्होंने काँपते हुए जवाब दिया, "जी, मैं हाज़िर हूँ।"[1] उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें लिहाज़ा वह थोड़ा-सा आगे खिसक गए।

तब वह आवाज़ एक बार फिर गूँजी। "इससे ज़्यादा क़रीब न आना। अपनी जूतियाँ उतार, क्योंकि तू मुक़द्दस ज़मीन पर खड़ा है।"[2]

काँपते हुए हाथों से हज़रत मूसा अपने जूते उतार सीधे खड़े हो गए और साँस रोककर उस जलाली आवाज़ को सुनने लगे। "मैं तेरे बाप का ख़ुदा, इब्राहीम का ख़ुदा, इसहाक़ का ख़ुदा और याक़ूब का ख़ुदा हूँ।"[3]

फ़ौरन अपना चेहरा ढाँपकर हज़रत मूसा पर सख़्त दहशत तारी हो गई। कहीं मेरी गुनाहगार आँखें अल्लाह का यह ज़ुहूर न देख लें। क्या अजब, अल्लाह ने मुझे नाम से पुकारा है हालाँकि मैं इसराईलियों के साथ नहीं हूँ। हाँ, अल्लाह की नज़र में मेरी इतनी ज़्यादा अहमियत है कि वह ख़ुद मुझसे मिलने आया है। बुज़ुर्ग इब्राहीम के साथ उसका वादा कोई अफ़साना नहीं है, क्योंकि उसने ख़ुद उसकी तसदीक़ की है।

---

1 ख़ुरूज 3:4
2 ख़ुरूज 3:5
3 ख़ुरूज 3:6

इंतहाई ख़ामोशी से पुरउम्मीद होकर हज़रत मूसा अल्लाह की आवाज़ सुनने लगे।

“मैंने मिसर में अपनी क़ौम की बुरी हालत देखी और ग़ुलामी में उनकी चीख़ें सुनी हैं, और मैं उनके दुखों को ख़ूब जानता हूँ। अब मैं उन्हें मिसरियों के क़ाबू से बचाने के लिए उतर आया हूँ। मैं उन्हें मिसर से निकालकर एक अच्छे वसी मुल्क में ले जाऊँगा, एक ऐसे मुल्क में जहाँ दूध और शहद की कसरत है, गो इस वक़्त कनानी, हित्ती, अमोरी, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी उसमें रहते हैं।”[1]

फ़िरऔन समझता था कि इसराईली उसकी अपनी की मिलकियत हैं। लेकिन अल्लाह फ़रमा रहा था कि फ़िरऔन का उन पर कोई इख़्तियार नहीं है। हज़रत मूसा इस ख़ुशख़बरी का एक एक लफ़्ज़ ग़ौर से सुनने के लिए हमातन गोश हो गए।

“इसराईलियों की चीख़ें मुझ तक पहुँची हैं। मैंने देखा है कि मिसरी उन पर किस तरह का ज़ुल्म ढा रहे हैं।”[2]

हज़रत मूसा के रुख़सारों पर गरम गरम आँसू टपकने लगे। अल्लाह की आँखें मेरे भाइयों के दुखों को देख रही हैं। उसके कान उनकी दुख भरी फ़रियाद पर लगे हैं। वह उनके आँसुओं की ज़बान सुनता है। अल्लाह सब कुछ जानता है। वह दूर का ख़ुदा नहीं है। वह उनकी मुसीबत को महसूस कर रहा है। अब उसने सारा मामला अपने हाथ में

1 ख़ुरूज 3:7-8
2 ख़ुरूज 3:9

ले लिया है। और यक़ीनन वही वाहिद हस्ती है जो उनको रिहाई दिला सकती है। अगले ही लमहे हज़रत मूसा के दिल को शदीद धचका लगा।

ख़ुदा उनको बुला रहा था। "मैं तुझे फ़िरऔन के पास भेजता हूँ, क्योंकि तुझे मेरी क़ौम इसराईल को मिसर से निकालकर लाना है।"[1]

हज़रत मूसा की बीती यादें कौंदकर आईं। पुराने ज़ख़म हरे हो गए। पुराने ख़ौफ़ ने फिर से उनको अपने पंजे में जकड़ लिया। इसराईलियों और मिसरियों दोनों की तरफ़ से ठुकराए जाने का ख़ौफ़। यह बात सुनते ही हज़रत मूसा टाल-मटोल करने लगे, "मैं कौन हूँ कि फ़िरऔन के पास जाकर इसराईलियों को मिसर से निकाल लाऊँ?"[2] यह बात किस तरह मुमकिन हो सकती थी! वह तो सीधे-सादे चरवाहे थे। भला वह जाहो-जलालवाले फ़िरऔन के पास कैसे जा सकते थे?

"मैं तो तेरे साथ हूँगा। और इसका सबूत कि मैं तुझे भेज रहा हूँ यह होगा कि लोगों के मिसर से निकलने के बाद तुम यहाँ आकर इस पहाड़ पर मेरी इबादत करोगे।"[3]

हज़रत मूसा जानते थे कि इसराईली अल्लाह के बारे में बहुत-से सवाल करेंगे। लिहाज़ा उन्होंने पूछने की दिलेरी की, "अगर मैं इसराईलियों के पास जाकर उन्हें बताऊँ कि तुम्हारे बापदादा के ख़ुदा ने

---

1 ख़ुरूज 3:10
2 ख़ुरूज 3:11
3 ख़ुरूज 3:12

मुझे तुम्हारे पास भेजा है तो वह पूछेंगे, 'उसका नाम क्या है?' फिर मैं उनको क्या जवाब दूँ?"[1]

अल्लाह ने जवाब दिया, "मैं जो हूँ सो मैं हूँ। उनसे कहना, 'मैं हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।' ... यह अबद तक मेरा नाम रहेगा।"[2]

हज़रत मूसा का ज़हन बड़ी तेज़ी से काम करने लगा। रब फ़िरऔन से कितना मुख़्तलिफ़ है। बूढ़ा फ़िरऔन जो अपने आपको ख़ुदा कहलवाता था फिर भी मर गया। वह मेरे बापदादा के ख़ुदा की मानिंद नहीं था जो कि अबद तक ज़िंदा है और जिसकी मुहब्बत और वफ़ादारी ला-तबदील है। सच तो यह है कि इस वक़्त भी यह अज़ीम हस्ती मेरे बापदादा के साथ किए हुए वादे पर क़ायम रहते हुए अपनी वफ़ादारी का सबूत दे रहा है।

अल्लाह ने हज़रत मूसा को हुक्म देते हुए फ़रमाया, "बुज़ुर्ग तेरी सुनेंगे। फिर उनके साथ मिसर के बादशाह के पास जाकर उससे कहना, 'रब इबरानियों का ख़ुदा हम पर ज़ाहिर हुआ है। इसलिए हमें इजाज़त दें कि हम तीन दिन का सफ़र करके रेगिस्तान में रब अपने ख़ुदा के लिए क़ुरबानियाँ चढ़ाएँ।'"[3]

हज़रत मूसा इसराईलियों का सामना भला कैसे कर सकते थे? उनकी ख़ातिर एक मिसरी को जान से मार देने के बाइस उनकी ज़िंदगी

---

1 ख़ुरूज 3:13
2 ख़ुरूज 3:14-15
3 ख़ुरूज 3:16-18

और ज़्यादा मुश्किल हो गई होगी। क्या वह बुज़ुर्ग उनको निकाल बाहर न करेंगे? हज़रत मूसा दिल-ही-दिल में कराह उठे। उनमें अब अपने भाइयों के हाथों और ज़्यादा ज़िल्लत उठाने की हिम्मत न रही थी। वह कहने लगे, "लेकिन इसराईली न मेरी बात का यक़ीन करेंगे, न मेरी सुनेंगे। वह तो कहेंगे, 'रब तुम पर ज़ाहिर नहीं हुआ।'"[1]

उसी सब्रो-तहम्मुल से ख़ुदा ने जवाब दिया, "तूने हाथ में क्या पकड़ा हुआ है?" उन्होंने कहा, "लाठी।" रब ने कहा, "उसे ज़मीन पर डाल दे।"[2]

हज़रत मूसा ने ऐसा ही किया तो डर के मारे भागे। देखते ही देखते लाठी ख़ौफ़नाक साँप बन गया था जो तेज़ी से घिसटता हुआ उनकी तरफ़ बढ़ने लगा।

तब अल्लाह की आवाज़ दुबारा सुनाई दी कि उस साँप की दुम पकड़ ले। साँप को दुम से पकड़ना कितना ख़तरनाक काम है। फिर भी हज़रत मूसा ने अल्लाह का हुक्म माना और देखो वह साँप फिर लाठी में बदल गया। ख़ुदा ने उन्हें यक़ीन दिलाया कि इस निशान से लोग क़ायल हो जाएँगे कि उनके बापदादा का ख़ुदा तुझ पर ज़ाहिर हुआ है।

अल्लाह के बंदे अभी मज़ीद कुछ कहने को थे कि रब ने हुक्म दिया, "अपना हाथ अपने लिबास में डाल दे।"[3]

---

1 ख़ुरूज 4:1
2 ख़ुरूज 4:2-3
3 ख़ुरूज 4:6

हज़रत मूसा ने ऐसा ही किया। जब उन्होंने अपना हाथ बाहर निकाला तो लरज़ उठे। वह हाथ कोढ़ी हो गया था, बर्फ़ की मानिंद सफ़ेद। इससे पहले कि यह सदमा उन पर ग़ालिब आता अल्लाह ने हिदायत की, "अब अपना हाथ दुबारा अपने लिबास में डाल।"[1] हज़रत मूसा ने फ़ौरन ऐसा ही किया, और उन्हें मायूसी न हुई। जब उन्होंने अपना हाथ बाहर निकाला तो उस पर कोढ़ का निशान तक न रहा था।

ख़ुदा ने विज़ाहत करते हुए उनसे कहा, "अगर उन्हें फिर भी यक़ीन न आए और वह तेरी न सुनें तो दरियाए-नील से कुछ पानी निकालकर उसे ख़ुश्क ज़मीन पर उंडेल दे। यह पानी ज़मीन पर गिरते ही ख़ून बन जाएगा।"[2]

फिर भी हज़रत मूसा दिल-ही-दिल में सख़्त परेशान थे। अगर ख़ुदा के नज़दीक इसराईली यक़ीन नहीं करेंगे तो फिर फ़िरऔन से क्या उम्मीद की जा सकती है! फ़िरऔन और उसके दरबारियों का सामना करने के ख़याल ही से उनकी रूह फ़ना हुई जा रही थी। मुआशरे से बिलकुल कटा होने की वजह से उन्हें दुनिया की कोई ख़बर न थी जबकि वह लोग जदीदतरीन दरियाफ़्तों और सायंसी तरक़्क़ी के बाइस आलमी मेयार पर पूरे उतर चुके थे। वह हर मौज़ू पर बड़ी रवानी से बहस कर सकते थे। बयाबान में भेड़ों के साथ तनहा इतना ज़्यादा वक़्त गुज़ारने के बाद उनको गुफ़्तगू में ज़रा भी महारत हासिल न थी। चुनाँचे हज़रत मूसा ने

1 ख़ुरूज 4:7
2 ख़ुरूज 4:9

फिर दलील पेश की, “मेरे आक़ा, मैं माज़रत चाहता हूँ, मैं अच्छी तरह बात नहीं कर सकता बल्कि मैं कभी भी यह लियाक़त नहीं रखता था। इस वक़्त भी जब मैं तुझसे बात कर रहा हूँ मेरी यही हालत है। मैं रुक रुककर बोलता हूँ।”[1]

“किसने इनसान का मुँह बनाया? … क्या मैं जो रब हूँ यह सब कुछ नहीं करता? अब जा! तेरे बोलते वक़्त मैं ख़ुद तेरे साथ हूँगा और तुझे वह कुछ सिखाऊँगा जो तुझे कहना है।”[2]

लेकिन हज़रत मूसा कहने लगे, “मेरे आक़ा, मेहरबानी करके किसी और को भेज दे।”[3]

अब अल्लाह का क़हर हज़रत मूसा की बेयक़ीनी पर भड़का। उसने उन्हें इसराईलियों को मिसर से निकालने के लिए चुन लिया था, और वह नहीं चाहता था कि वह इस ज़िम्मेदारी से छूटें। अब हज़रत मूसा को मज़ीद बहस की इजाज़त न थी। उसने फ़रमाया, “क्या तेरा लावी भाई हारून ऐसे काम के लिए हाज़िर नहीं है? मैं जानता हूँ कि वह अच्छी तरह बोल सकता है। देख, वह तुझसे मिलने के लिए निकल चुका है। … हारून तेरी जगह क़ौम से बात करेगा जबकि तू मेरी तरह उसे वह कुछ बताएगा जो उसे कहना है।”[4]

---

1 ख़ुरूज 4:10
2 ख़ुरूज 4:11-12
3 ख़ुरूज 4:13
4 ख़ुरूज 4:14-16

अंजामे-कार चरवाहे मूसा को इस काम से छुटकारे की कोई सूरत नज़र न आई। आख़िर में उन्होंने अपना सर अल्लाह की मरज़ी के आगे झुका दिया। गुफ़्तगू का सिलसिला ख़त्म हो गया, और जलती हुई झाड़ी फिर से अपनी असली हालत में आ गई। लेकिन अब हज़रत मूसा पहले जैसे नहीं रहे थे। अब ख़ुद पर उनका इख़्तियार न था कि जो जी में आए करें बल्कि अब रब का रूह उनका मुख़तार था जो उनको हुक्म की तामील पर आमादा करता था।

हज़रत मूसा आहिस्ता आहिस्ता अपने रेवड़ को घर की तरफ़ हँकाते चले जाने लगे। वक़्तन फ़वक़्तन वह अपना सफ़ेद सर हैरत से झटक देते। एक 80-साला बुज़ुर्ग ग़ुलामों की क़ौम को किस तरह मिसर से निकालेगा? यह कैसे मुमकिन है कि वह जो सारी दुनिया और उसकी तमामतर ख़ाहिशात को कहीं दूर पीछे छोड़ आया था उसे ऐसे अहम काम के लिए चुना गया हो? एक बार फिर ख़दशात उनको बहकाने लगे। मैंने जो कुछ देखा और सुना क्या वह महज़ वहम तो न था? लेकिन नहीं, वह ज़रूर सच होगा। अल्लाह मुझसे हमकलाम हुआ है। उसने मुझे अपनी उम्मत को ग़ुलामी से रिहाई दिलाने और फ़लस्तीन में ले जाने के लिए चुना है। सच्चे ख़ुदा के बारे में एक नई आगाही उनकी मायूसी पर ग़ालिब आ गई, और एक अज़ीम ख़ुशी ने उनको घेर लिया। ज़िंदा ख़ुदा मुझे नाम से जानता है। वह मेरे लोगों की सुनता, उनको देखता और उनके दुखों का एहसास रखता है।

यितरो हज़रत मूसा के इतनी जल्दी वापस आ जाने पर हैरान रह गया। जल्द ही उसकी तेज़ नज़रों ने अपने दामाद की नई उम्मीद भाँप लिया। लिहाज़ा उसे हैरत न हुई जब हज़रत मूसा ने उससे कहा, "मुझे ज़रा अपने अज़ीज़ों के पास वापस जाने दें जो मिसर में हैं। मैं मालूम करना चाहता हूँ कि वह अभी तक ज़िंदा हैं कि नहीं।"[1]

"ठीक है, सलामती से जाएँ।" फ़राख़दिल यितरो ने सफ़्फ़ूरा और उनके बेटों को भी हज़रत मूसा के साथ जाने से नहीं रोका। तो भी एक के बाद एक दिन गुज़रता गया और हज़रत मूसा झिजकते रहे। लेकिन अब भी अल्लाह ने बड़े सब्र से अपने ख़ौफ़ज़दा ख़ादिम को बरदाश्त किया। उसने एक बार फिर उनसे हमकलाम होकर उनकी हिम्मत बँधाते हुए कहा, "मिसर को वापस चला जा, क्योंकि जो आदमी तुझे क़त्ल करना चाहते थे वह मर गए हैं।"[2] अल्लाह के यह तसल्लीआमेज़ अलफ़ाज़ अपने साथ उस काम के लिए पाक रूह भी लाए जिसने काम जारी रखने पर हज़रत मूसा को आमादा कर लिया।

"सफ़्फ़ूरा! हम जा रहे हैं। तैयार हो जाओ।" यह सुनकर सफ़्फ़ूरा की आँखें चमकने लगीं। उसका शौहर होश में आ चुका था। नन्हे जैरसोम ने गधे पर किसी बड़े आदमी की तरह काठी कस दी और इलियज़र सामान उठा उठाकर लादने लगा। वह सब हज़रत मूसा को बड़े अज़म के साथ काम करता देखकर ख़ुश थे। यितरो का घराना उन्हें जाते देखकर हाथ

1 ख़ुरूज 4:18
2 ख़ुरूज 4:18-19

हिलाता रहा। उनकी भीगी आँखों के सामने साय छोटे होते होते ग़ायब हो गए। क्या वह फिर कभी मिल पाएँगे?

दुख मुसीबत

“हारून!”

“मूसा!”

हज़रत हारून की उम्र अब 84 बरस थी और हज़रत मूसा 80 बरस के थे। दोनों के बाल चाँदी से चमक रहे थे। उन 40 बरसों में उन पर क्या क्या क़ियामत नहीं टूटी थी। दोनों एक दूसरे के गले लग के रोने लगे।

एक बार फिर हज़रत मूसा के क़दम जुशन की सरज़मीन को छू रहे थे। कितनी ही यादें फिर से ताज़ा हो गईं। उनकी नज़रें अपने भाइयों पर जा ठहरीं जो ग़ुलामी के अज़ाब सह रहे थे। उनका कलेजा दहलकर रह गया। उनके साथ जानवरों से भी बदतर सुलूक हो रहा था। और उनकी ख़स्ताहाल बोसीदा कोठड़ियाँ हरगिज़ इनसानों के रहने के क़ाबिल न थीं। उनकी अपनी झोंपड़ी में नेकसीरत बुज़ुर्ग ख़ातून मरियम उनका ख़ैरमक़दम करने की मुंतज़िर बैठी थी।

"मूसा! आख़िर तुम आ ही गए।" 92-साला बुज़ुर्ग बहन ने अपने भाई को ज़ोर से भींचकर सीने से लगा लिया। अल्लाह ने सचमुच इसराईलियों के छुटकारे के लिए उसके छोटे भाई को बचा ही लिया था। बीबी मरियम की बूढ़ी आँखें जिन्होंने कितने ही दर्द भरे मंज़र देखे थे आँसुओं से लबरेज़ हो गईं। "तुम्हारी यादें मुझे बहुत सताती थीं। तुम क्या जानो जुदाई की यह तवील मुद्दत मैंने कैसे गुज़ारी है।

जफ़ाकश चरवाहे ने अपना शफ़क़त भरा हाथ उसके सफ़ेद बालों पर रख दिया और दूसरे हाथ में उसे थामते हुए कहने लगा, "मैं जानता हूँ, बहना। मेरा ध्यान तो तुम्हारी तरफ़ ही रहता था। मैंने भी तुम्हारे साथ ही दुख झेला है।" हज़रत मूसा रोते रोते मुसकरा दिए। उन्होंने ख़ुदा का लाख लाख शुक्र अदा किया जिसने उनके बहन-भाई को अब तक ज़िंदा रखा था। बीबी मरियम ने उनको अपनी कोठड़ी में यह कहते हुए धकेल दिया, "हमारा यों बाहर खड़े रहना अच्छा नहीं है। आओ, मैं तुम्हारे लिए खाने को कुछ बना दूँ।"

हज़रत मूसा अपनी बहन को इतनी अच्छी हालत में देखकर सख़्त मुतअज्जिब हुए। वह एक नौजवान ख़ातून की तरह बड़ी फुरती से काम कर रही थीं। वह पहले की तरह चाक़ो-चौबंद दिखाई दे रही थीं। यों लगा जैसे ताक़त उनके अंदर से फूट रही है। वह इसराईलियों के लिए माँ का दर्जा रखती थीं। वह बड़े ही जज़बाती अंदाज़ में गुफ़्तगू कर रही थीं, "मूसा! हमारे लोगों का ग़ुलामी से यों आज़ाद हो जाना बहुत बड़ी

बात है।" उन्होंने एक इंतहाई मुअस्सर अंदाज़ से अपने हाथ दुआ में जोड़कर आसमान की तरफ़ उठाते हुए कहा, "मैं इसराईल के घरानों से अच्छी तरह वाक़िफ़ हूँ और उन लोगों की मुश्किलात को भी ख़ूब जानती हूँ। मैं उन औरतों की आँखों के आँसुओं को भी समझती हूँ जिनको अपनी बेटियों यहाँ तक कि छोटी छोटी लड़कियों के साथ काम पर जाना पड़ता है। उन औरतों में आला हुनरमंद बुनाई और बटाई का काम करने वालियाँ भी हैं।"

बीबी मरियम ने खटाक से देगची पर ढकना रखते हुए कहा, "क्या इन बेचारी औरतों के हाल का तसव्वुर कर सकते हो जिनके इर्दगिर्द उनके नन्हे बच्चे घूम-फिर रहे हैं? जब काम कर रही होती हैं तो हर वक़्त उनके सर पर साँटा सवार रहता है।"

फिर बीबी मरियम लहजा धीमा करते हुए बोलीं, "भैया! हमारे लोगों का अख़लाक़ भी बहुत गिर गया है। पता है अब तो मुझे अपने बापदादा के ख़ुदा की जगह उनके घरों में मिसरी बुत रखे हुए दिखाई देते हैं। लेकिन उनका सबसे बड़ा देवता ख़ुद उनका पेट है। वह थोड़े-से अच्छे खाने की ख़ातिर कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं।"

बीबी मरियम चूल्हे के पास से उठ आईं और अपने भाई की पीठ थपथपाते हुए कहने लगीं। "मूसा! बेदिल होने की कोई बात नहीं। अभी भी हमारे दरमियान कुछ ईमानदार लोग मौजूद हैं।"

"आमीन" हज़रत मूसा ने अपनी बहन का हाथ ज़ोर से दबाते हुए कहा, "यक़ीनन ख़ुदा इसराईलियों को रिहाई दिलाएगा।"

एक बिलकुल अलग-थलग ग़ार में बुज़ुर्गों का इजलास मुनअक़िद हुआ जिसमें शामिल होने के लिए वह रात के परदे में आ पहुँचे थे। सबके सब मूसा नामी आदमी से मिलने के लिए बेचैन थे। हालाँकि उनके बुज़ुर्गों का ख़याल उनसे क़तअन मुख़्तलिफ़ था। एक नौजवान कहने लगा, "मैं हैरान हूँ कि यह साबिक़ शहज़ादा और फ़िरऔन का मारूफ़ जंगजू क्या चीज़ है? मैंने तो यह नतीजा निकाला है कि उसने कोई ऐसा घपला किया है कि उसे भागते ही बन पड़ी।" उसने नज़रें घुमाकर अपने इर्दगिर्द बैठे लोगों का भरपूर जायज़ा लेते हुए कहा, "क्या हम ऐसे शख़्स पर भरोसा कर सकते हैं?"

उनमें से एक फ़ोरमैन कहने लगा, "जब मूसा ने एक मिसरी को जान से मार डाला तो मिसरियों के सबसे बड़े पुरोहित ने उसे ग़ुलामों का हिमायती कहा।" उसने बड़ी अहमियत जताते हुए अपने इर्दगिर्द नज़र डाली और कहने लगा, "फ़िरऔन और उसके दरबारियों के लिए परेशानकुन बात यह थी कि उसने मिसरी को हलाक करने के लिए वह हाथ इस्तेमाल किया था जिससे फ़िरऔन के ऊपर मोरछल पकड़े रखता था।" फिर वह क़दरे रुककर बोला, "मेरा ख़याल है कि अक़्लमंदी इसी

में है कि उस शख़्स से ख़बरदार रहा जाए जिसने अब तक इसराईलियों का सिर्फ़ बोझ ही बढ़ाया है।"

इस मौक़े पर उनके दरमियान मौजूद इसराईली फ़ोरमैनों ने न तो अपने सीनों पर अपने सरकारी ओहदों के तमग़े लगा रखे थे और न ताँबे से मढ़ी हुई छड़ियाँ ही उनके हाथों में थीं। लेकिन वह अपने इख़्तियारात से बा-ख़बर थे। उन्हें बाक़ी लोगों पर बरतरी का एहसास था।

अब बुज़ुर्ग भी बहस में शामिल हुए। उन्होंने वहाँ मौजूद दीगर अफ़राद को याद दिलाया कि किस तरह हज़रत मूसा की जान बचाई गई थी और उसने क्योंकर महल में परवरिश पाई थी। यह सब कुछ उसके ख़ुदापरस्त घराने और अपने लोगों से उसकी पुरख़ुलूस मुहब्बत का नतीजा था तो क्या अल्लाह ऐसे शख़्स को इस्तेमाल नहीं कर सकता?

आख़िर में जब हज़रत हारून हज़रत मूसा के साथ वहाँ पहुँचे तो ग़ार के अंदर पुरउम्मीद फ़िज़ा छाई हुई थी। हज़रत मूसा की रोबदार शख़्सियत से ज़िहानत टपक रही थी। उसे देखते ही रज़ामंदी की हलकी हलकी आवाज़ें सुनाई देने लगीं। यक़ीनन ऐसा ही तालीमयाफ़्ता आदमी अपने मक़सद को वाज़िह करने के लिए बेहतरीन तक़रीर करेगा।

लेकिन उन्हें सख़्त मायूसी हुई जब हज़रत मूसा की जगह उनके भाई ने बात की। जब हज़रत हारून ने हाज़िरीन को बताया कि किस तरह अल्लाह हज़रत मूसा पर ज़ाहिर हुआ और उन्हें क्या कुछ कहा है तो वह हक्का-बक्का रह गए। उन्होंने अपने बारे में भी बताया कि ख़ुदा मेरे

साथ भी हमकलाम हुआ। हैरत की मिली-जुली सरगोशियाँ फ़िज़ा में बिखरकर रह गईं। बुज़ुर्गों के चेहरे हैरानी में डूब गए। क्या बात, अल्लाह एक बार फिर हमकलाम हुआ है। अब ग़ुलामी से आज़ादी हासिल करने की घड़ी आ पहुँची है—वह घड़ी जिसका वह हर रोज़ शिद्दत से इंतज़ार करते आए हैं।

तो भी हज़रत मूसा के न बोलने से बुज़ुर्गों को बहुत मायूसी हुई। उनके दिलों पर शक ग़ालिब आने लगा। तो क्या अल्लाह ने अपना पैग़ाम देने के लिए ऐसे ना-अहल आदमी को चुना है? अगर यह हारून को अपनी ढाल बनाकर चलता है तो फिर फ़िरऔन के साथ क्योंकर निपट सकेगा? वह बोले, "हमें कोई निशान दिखाएँ ताकि साबित हो कि ख़ुदा की क़ुव्वत आपके साथ है।"

जवाब में हज़रत हारून ने अपने भाई के हाथ से असा ले लिया। ज़मीन पर गिरते ही असा साँप बन गया जो फण फैलाकर डसने को तैयार हुआ। हर तरफ़ से हैरत-आमेज़ आवाज़ें बुलंद होने लगीं। साँप निहायत ख़ौफ़नाक मालूम हो रहा था। जैसे ही वह दुबारा असा में तबदील हुआ सबने सुख का साँस लिया।

यों लग रहा था जैसे सब लोग क़ायल हो चुके हैं। तो भी एक गुरोह में गरमागरम बहस छिड़ गई। आख़िरकार उनमें से एक उठकर कहने लगा, "भाइयो सुनो! हमारे लिए तो यह निशान ठीक है लेकिन फ़िरऔन की नज़र में यह बच्चों का खेल है। जब रामसीस की बीवी मर गई तो जादूगरों

ने अवाम पर रोब डालने के लिए मुरदा औरत के मुँह में ज़बान डाल दी और हवा में शोले बुलंद किए। हम किसी तरह की ख़ुशफ़हमी में मुब्तला न रहें। हमें फ़िरऔन पर रोब डालने के लिए एक पुराने असा के अलावा कुछ और भी चाहिए। मूसा, क्या तुम्हारे पास कोई और निशान नहीं है?"

"बेशक है एक और निशान।" हज़रत हारून ने अपना हाथ दिखाकर उन्हें हैरान कर दिया। पहले वह कोढ़ की मानिंद सफ़ेद हो गया और फिर दुबारा अपनी असली हालत पर आ गया। तीसरे निशान का अमली मुज़ाहरा करने के लिए वह दरियाए-नील का पानी लेकर आए जिसे हज़रत हारून ने उनकी आँखों के सामने ख़ून में बदल दिया।

फिर हज़रत हारून ने खड़े होकर अपने भाई की तरफ़ से उनसे कहा, "आप हौसला रखिए। बिलकुल न डरें। हमारी उम्मीद अपने रब पर है जिसने हमें रिहाई दिलाने का वादा किया है। यक़ीनन एक मामूली छड़ी भी जिसके पीछे रब की ताक़त काम कर रही हो बड़े बड़े अजीब काम कर सकती है।" यह बातें सुनकर आख़िरकार सब क़ायल हो गए। उन बुज़ुर्गों ने रब के हुज़ूर अपने सर झुका दिए और उसकी परस्तिश करने लगे।

अगले रोज़ फ़िरऔन के साथ मुलाक़ात का एहतमाम किया गया। फ़िरऔन मनेफ़ता ने उनका ख़ैरमक़दम किया। हज़रत मूसा ने अपने आपको रब में मज़बूत करते हुए महल में क़दम रखा। जब वह उन मानूस

दीवानख़ानों से गुज़रने लगे तो उनके जज़बात में हैजान बरपा हुआ। यह वह जगहें थीं जहाँ से उनकी माँ शहज़ादी दुख़तरे-फ़िरऔन उनके साथ साथ बड़े फ़ख़्र से गुज़रा करती थी। यहाँ से भी गुज़रते बड़-छोटे सब आदाब बजा लाते थे। एक ज़माना था जब सारा मिसर फ़ातेह होने के बाइस उनकी तारीफ़ किया करता था। यह सोचकर उनको महरूमी का एहसास होने लगा।

हज़रत मूसा ने देखा कि फ़िरऔन मनेफ़ता कितना बूढ़ा हो चुका है। उसकी मग़रूर आँखों ने साबिक़ शहज़ादे मूसा को नहीं पहचाना जब उन्होंने कहा, "रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, 'मेरी क़ौम को रेगिस्तान में जाने दे ताकि वह मेरे लिए ईद मनाएँ।'"[1]

फ़िरऔन ने सर झटककर उठाया, यों जैसे किसी ज़हरीले साँप ने डस लिया हो। उसके चेहरे का रंग बदल गया, और दरबारियों को लगा कि अब वह उनका सर क़लम करने का हुक्म देगा। लेकिन ऐसा न हुआ। इसके बरअक्स फ़िरऔन की आवाज़ मज़ीद करख़्त हो गई। "यह रब कौन है? मैं क्यों उसका हुक्म मानकर इसराईलियों को जाने दूँ? न मैं रब को जानता हूँ, न इसराईलियों को जाने दूँगा।"[2] फ़िरऔन की आँखें ग़ुस्से से शोले बरसा रही थीं। उनके सामने किसी और माबूद का नाम

1 ख़ुरूज 5:1
2 ख़ुरूज 5:2

लेना तो ग़द्दारी के बराबर था। "तुम क्यों इन लोगों को इनके काम से छुड़वाते हो? तुम जाकर अपने अपने बोझ को उठाओ।"[1]

अल्लाह के एलची महल से निकल गए। अब भी फ़िरऔन की चिंघाड़ती हुई आवाज़ उनके कानों में गूँज रही थी। उन्हें पहले से इल्म था कि बादशाह इनकार कर देगा, लेकिन अफ़सोस की बात यह थी कि अब से इसराईलियों की हालत मज़ीद ख़राब हो जाएगी।

अब से इसराईलियों को ईंटें बनाने के लिए भुस मिलना बंद हो गया। अब उन्हें ख़ुद ही जाकर खेतों में से भुस बटोरना पड़ता था। यह एक नामुमकिन काम था, क्योंकि उन्हें इतनी ही ईंटें बनाना पड़ती थीं जितनी कि पहले बनाते आए थे। उनकी दिक़्क़त बहुत बढ़ गई। औरतों और बच्चों को भुस तलाश करना पड़ता था और फिर उस बड़े बोझ को तामीर की जगह पर लाना होता था। शिकार किए हुए जानवरों की तरह वह जुशन के इलाक़े में ढूँडने-फिरने लगे ताकि अपने अज़ीज़ों को कोड़ों की ज़ालिमाना मार से बचाएँ। लेकिन अफ़सोस! उनकी सारी मेहनत बेकार रही। वह ईंटों की मतलूबा तादाद कभी भी बनाने न पाते थे।

उस वक़्त इसराईली निगरान भी अपने लोगों को ज़्यादा काम करने पर मजबूर नहीं कर सकते थे, क्योंकि अब हर काम की हद हो चुकी थी। जब यह निगरान फ़िरऔन के आगे जाकर काम लेनेवाले मिसरी निगरान की शिकायत करने लगे तो उन्हें बताया गया कि यह सब ज़ुल्म

1 ख़ुरूज 5:4

मूसा और हारून की वजह से है। "तुम लोग सुस्त हो, तुम काम करना नहीं चाहते। इसलिए तुम यह जगह छोड़ना और रब को क़ुरबानियाँ पेश करना चाहते हो।"[1]

तब इसराईली निगरान हज़रत मूसा के पास गए और ग़ुस्से में आग-भभूका होते हुए बोले, "रब ख़ुद आपकी अदालत करे। क्योंकि आपके सबब से फ़िरऔन और उसके मुलाज़िमों को हमसे घिन आती है। आपने उन्हें हमें मार देने का मौक़ा दे दिया है।"[2] उस वक़्त से उन निगरानों का हाल भी आम ग़ुलामों जैसा हो गया। उनको रोज़ पीटा जाने लगा। यहाँ तक कि भुस बटोरनेवाली औरतों और बच्चों के साथ भी निहायत ग़ैरइनसानी सुलूक किया जाने लगा।

"ज़रा तसव्वुर करो! चंद इसराईली ग़ुलामों ने बादशाह से मुतालबा करने की जुर्रत की। ज़रा सोचो! उनमें इतनी जुर्रत कि बादशाह से कहते हैं कि उनको बयाबान में अपने ख़ुदा की परस्तिश करना है," मिसरी निगरान तंज़न कहते। "ग़ायब होने का क्या ढंग निकाला है। और सारा काम पीछे हम करेंगे, है ना!" वह जानेवालों के पीछे मुट्ठियाँ भींचकर चीख़ने लगते, "और भी मशक़्क़त करो। इससे तुम्हें इस गुस्ताख़ी से छुटकारा मिल जाएगा। ग़लीज़ चूहो।" फिर उन्हें निशाना बाँधकर पत्थर मारा जाता या छड़ी फेंकी जाती जो कभी ख़ता न जाती। इसराईली बच्चे हँसना तक यकसर भूल गए, और उनके जिस्म मुरझा गए। बूढ़ी

1 ख़ुरूज 5:17
2 ख़ुरूज 5:21

ख़वातीन जिनकी कमर झुकी हुई थी वह भी उनके ग़ज़ब से महफ़ूज़ न रहीं।

हज़रत मूसा सख़्त परेशान हुए। एक बार फिर उन्हें महसूस होने लगा कि मैं बिलकुल नाकाम रह गया हूँ। लेकिन इस बार वह फ़रार न हुए बल्कि सीधे अल्लाह के पास लौटकर उस से हमकलाम हुए। "ऐ आक़ा, तूने इस क़ौम से ऐसा बुरा सुलूक क्यों किया? क्या तूने इसी मक़सद से मुझे यहाँ भेजा है? जब से मैंने फ़िरऔन के पास जाकर उसे तेरी मरज़ी बताई है वह इसराईली क़ौम से बुरा सुलूक कर रहा है।"[1]

उनके दिल में जो कुछ था वह सब कुछ क्योंकर कह सकते थे गो ख़ुदा सब बातों से पहले ही से वाक़िफ़ था। इंतहाई मायूसी के आलम में हज़रत मूसा चिल्ला उठे, "और तूने अब तक उन्हें बचाने का कोई क़दम नहीं उठाया।"[2]

बड़े बोझल दिल के साथ वह जवाब का इंतज़ार करने लगे। रब को हज़रत मूसा की बातें अजीब न लगीं बल्कि वह इस इंतज़ार में था कि वह अपनी तमाम उलझनें उसके सामने लेकर हाज़िर हो। रब ने हज़रत मूसा को यक़ीन दिलाया, "अब तू देखेगा कि मैं फ़िरऔन के साथ क्या कुछ करता हूँ। मेरी अज़ीम क़ुदरत का तजरिबा करके वह मेरे लोगों को जाने देगा बल्कि उन्हें जाने पर मजबूर करेगा।"[3]

---

1 ख़ुरूज 5:22-23
2 ख़ुरूज 5:23
3 ख़ुरूज 6:1

वाह! इसराईल का ख़ुदा भी क्या ख़ुदा है! वह फ़िरऔन से मग़लूब नहीं हुआ बल्कि उसको यक़ीन था कि वह अपने लोगों को बचा लेगा। वह उनके बापदादा से किए गए वादे को पूरा करके छोड़ेगा और उनको उस मुल्क में ले जाएगा जिसका उसने वादा किया है। वह अपने हर क़ौल को निभाएगा और दोस्त और दुश्मन, हर कोई उसके क़वी हाथ को जान लेगा। हज़रत मूसा की ढारस बँध गई। उन्होंने रब की तमामतर शफ़क़त और वफ़ादारी के लिए उसकी परस्तिश की। तब वह सीधे अपने भाई हारून के साथ बुज़ुर्गों को ख़ुशख़बरी सुनाने चले गए। लेकिन बुज़ुर्गों की रूह बुरी तरह घायल हो चुकी थी। उन्होंने उनकी बात को बड़ी बेदिली से सुना। एक ने तो यहाँ तक मायूसी से कह डाला, "हम तो समझते थे कि अल्लाह हमें रिहाई बख़्शेगा। लेकिन इसके बजाए वह हमें सज़ा दे रहा है।"

हज़रत मूसा ने हारून की मारिफ़त उनको बताया, "ख़ुदा ने मिसरियों की बदी को इंतहा तक पहुँचने दिया है। अब वह तुम्हारी हिमायत करेगा। अपने वफ़ादार और शफ़ीक़ ख़ुदा पर भरोसा रखो।"

लेकिन उन्होंने हज़रत मूसा की एक न सुनी। यों लगता था जैसे उनकी रूह बदन से परवाज़ कर गई है।

सच्चा ख़ुदा कौन है?

जब से फ़िरऔन की मुलाक़ात हज़रत हारून और मूसा से हुई थी तब से वह इंतहाई मुज़तरिब रहने लगा था। इस हैरतअंगेज़ मुलाक़ात की कहानी महल में गरदिश करती हुई आम आदमी के कानों तक पहुँच चुकी थी। हर एक उन गंवारों के मुताल्लिक़ तमस्ख़ुर-आमेज़ बातें करने लगा जो कि बादशाह के सामने ग़ुलामों के पूरे क़बीले को ले जाने की कोशिश में थे। बिला-शुबहा सबको इसका एहसास था कि कुछ देर से मिसर की ताक़त घटती जा रही है। नतीजे में कुछ ग़ुलाम बग़ावत पर आमादा होने लगे थे। बाज़ औक़ात तो नौबत यहाँ तक पहुँच जाती कि वह ज़्यादा फ़ुरसत के औक़ात और मज़ीद ख़ुराक के मुतालबे पर भी उतर आते थे। लोगों ने अंदाज़ा लगाया कि अब तो इन दो इसराईलियों को पता चल गया होगा कि मिसर का मालिक कौन है।

फ़िरऔन ने इससे पहले कभी किसी में इतनी जुर्रत नहीं देखी थी कि मिसर के देवता रा के फ़रज़ंद से किसी अजनबी माबूद के नाम में यों बात

करे। यह कितनी गुस्ताख़ी थी! तो भी उनके काम में इज़ाफ़े के ख़याल से उसके होंटों पर मुसकराहट उभर आई। यक़ीनन इस सख़्त मेहनत से वह ऊँचे ऊँचे ख़ाब देखना भूल जाएँगे। ख़ास तौर पर जब उनके बेगार लेनेवालों को हिदायत की गई थी कि ज़रूरत पड़े तो उनको बेदरेग़ मारें। तो भी यह मामला फ़िरऔन के ख़याल में कहीं ज़्यादा पेचीदा था। हज़रत मूसा में एक ख़ास क़ुव्वत महसूस होती थी। बादशाह उन्हें गिरिफ़्तार करना चाहता था, लेकिन इस मामले में वह गोया मफ़लूज होकर रह गया था।

एक सुबह फ़िरऔन मामूल के मुताबिक़ दरियाए-नील के किनारे टहल रहा था। अचानक हज़रत मूसा और हारून ग़ैरमुतवक़्क़े तौर पर उसके सामने आ खड़े हुए। यों महसूस हुआ जैसे उनमें एक नई क़ुव्वत और नया जज़बा काम कर रहा हो। हज़रत हारून की आवाज़ नरसिंगे की तरह गूँजी, "रब इसराईलियों का ख़ुदा यों फ़रमाता है कि मेरे लोगों को जाने दे ताकि वह बयाबान में मेरी इबादत करें।"

फ़िरऔन का चेहरा ग़ुस्से से भड़क उठा। उसने अपने मुहाफ़िज़ों को हुक्म देने के लिए मुँह खोला कि उन्हें अभी गिरिफ़्तार करके ले जाएँ, लेकिन कोई आवाज़ सुनाई न दी। फ़िरऔन ने नज़रें झुका लीं। उसे महसूस हुआ कि कोई हैबतनाक देवता मेरे मुक़ाबले में उठ खड़ा हुआ है। हज़रत मूसा की आँखों से मुनअकिस होनेवाली क़ुव्वत से फ़िरऔन काँप गया।

बादशाह का ज़हन तेज़ी से काम करने लगा। तो क्या इसराईली ग़ुलामों का ख़ुदा मूसा को मुझ पर हावी कर रहा है? ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता। उसके होंटों पर चालाक मुसकराहट फैल गई। मूसा ज़रूर मुझ पर कोई जादू मंत्र चला रहा है। उसने अपने दरबारियों की नज़रों के सामने अपनी आवाज़ दुरुस्त करके पुकारा, "सबूत दिखाओ। कोई मोजिज़ा करो।"

हज़रत मूसा ने अपनी लाठी हारून को पकड़ा दी जिन्होंने उसे ज़मीन पर डाल दिया। फ़िरऔन और उसके दरबारियों के देखते वह साँप बन गई जो डंक मारने के लिए तैयार हो गई। जैसे ही वह साँप दुबारा लाठी में तबदील हुआ फ़िरऔन ने अपने दानाओं और जादूगरों को बुलवाया। उन्होंने भी बड़े एतमाद के साथ अपनी अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दी और वह भी वैसे ही साँप बन गईं।

फ़िरऔन ने फ़ातेहाना अंदाज़ में देखते हुए कहा, "ऐ हारून और मूसा! देखा तुमने? मेरे जादूगर भी ऐसे सीधे-सादे निशान दिखा सकते हैं।" फिर क्या हुआ, हज़रत मूसा के साँप ने उन साँपों पर हमला कर दिया और एक एक करके उनको हड़पकर लिया। यह मंज़र देखकर वह जादूगर भी बहुत मुतअस्सिर हुए। लेकिन फ़िरऔन ने अपने दिल को सख़्त कर लिया। जब अल्लाह के बंदे उसकी हुज़ूरी से चले गए तो वह बड़ा ख़ुश हुआ कि उनसे छुटकारा मिल गया।

इस ज़ाहिरी नाकामी के बावुजूद हज़रत मूसा आराम से अपने रास्ते पर चल दिए। वह बिलकुल मायूस न हुए। उन्होंने हज़रत हारून से कहा, "हारून! ख़ुदा कितना शफ़ीक़ है कि उसने फ़िरऔन को इन बातों पर ग़ौर करने और तौबा करने के लिए वक़्त दिया है। जब से अल्लाह मुझसे ख़िदमत लेने लगा है उसने मुझे मुश्किलात से दोचार होने दिया है। मेरे अपने लोगों ने दूसरी बार मुझे ठुकराया है। इस पर तुर्रा यह कि ख़ुद फ़िरऔन ने मेरी तहक़ीर की है। इस दौरान मुझ पर यह बात वाज़िह हुई है कि मुझे ख़ालिस बनाने का ख़ुदा का यह अपना तरीक़ा है ताकि मैं उसके अज़ीम काम को करने के क़ाबिल हो जाऊँ। साथ साथ मेरी अल्लाह के साथ रिफ़ाक़त भी गहरी होती जाए।"

हज़रत मूसा यह बयान न कर पा रहे थे कि इस रिफ़ाक़त की क्या अहमियत है। अब वह बड़ी आज़ादी के साथ अपने रब को अपनी तमाम फ़िकरें और ख़दशात बता सकते थे। जवाब में ख़ुदा उनकी राहनुमाई और हौसलाअफ़ज़ाई करता। अब उनकी अव्वलीन ख़ाहिश यही रहती थी कि सब ख़ुदा का नाम जान जाएँ, कि सब उसकी हम्दो-सना करें। हज़रत हारून सारी बातें बड़ी दिलचस्पी से सुनते रहे। बेशक वह अल्लाह पर ईमान लाए थे। बिला-शुबहा उन्होंने अपनी ज़िंदगी इसराईल की रिहाई के लिए वक़्फ़ कर दी थी। तो भी वह अब तक इस क़िस्म की रूहानी गहराई से महरूम थे।

एक बार फिर अल्लाह के यह दो एलची दरियाए-नील के किनारे खड़े हुए। कुछ देर बाद शाही नक़ीब ने बादशाह की आमद का एलान किया। दोनों तैयार हुए। अपनी ऊँची पालकी से अपने दुश्मनों को देखते ही फ़िरऔन भुना गया। वह बड़ी बेबसी से उनको अपने जुलूस को रोकते हुए देखता ही रह गया।

हज़रत हारून ने बड़ी बेबाकी से फ़िरऔन से कहा, "रब इबरानियों के ख़ुदा ने मुझे आपको यह बताने के लिए भेजा है कि मेरी क़ौम को मेरी इबादत करने के लिए रेगिस्तान में जाने दे। लेकिन आपने अभी तक उसकी नहीं सुनी। चुनाँचे अब आप जान लेंगे कि वह रब है। मैं इस लाठी को जो मेरे हाथ में है लेकर दरियाए-नील के पानी को मारूँगा। फिर वह ख़ून में बदल जाएगा। दरियाए-नील की मछलियाँ मर जाएँगी, दरिया से बदबू उठेगी और मिसरी दरिया का पानी नहीं पी सकेंगे।"[1]

इमाम और दरबारी हैरान रह गए। आज तक कभी किसी ने रा के जलाली फ़रज़ंद को मुक़द्दस फ़रीज़े की अदायगी के लिए जाते हुए रास्ते में रोकने की जुर्रत नहीं की थी। यक़ीनन इस गुस्ताख़ी का अंजाम इन मुजरिमों की फ़ौरी मौत होगा। रा के फ़रज़ंद को कभी भी इस ख़ुदा के नाम में यों बुरा-भला नहीं कहा गया था। इस गुस्ताख़ मुँहफट का इलाज करना बहुत ज़रूरी था, वरना तो अवाम के दिल से फ़िरऔन का एहतराम उठ जाएगा।

---

1 ख़ुरूज 7:16-18

माहौल में बेचैनी और एहतजाज का एहसास बढ़ने लगा। तो भी बादशाह एक लफ़्ज़ तक न बोला। इसके बजाए हर आँख हज़रत हारून पर जमी हुई थी। उन्होंने अपनी लाठी दरियाए-नील के पानी पर मारी। सबने गरदनें निकालकर देखा। हैरत की आवाज़ें फ़िज़ा में बिखर गईं, "आह! ओह!" गाढ़ा ख़ूनआलूदा पानी ख़ौफ़ज़दा आबी जानवरों के तड़पने से मुतलातिम हो गया। छोटी-बड़ी मछलियाँ मौत से बचने के लिए उछलकर बाहर आ गिरीं। देखते ही देखते बेशुमार मछलियाँ मरकर ख़ूनआलूदा गाढ़े पानी की सतह पर तैरने लगीं। गरम और तर मौसम ने ताफ़्फ़ुन को और बढ़ा दिया। एक मोरछल-बरदार ने जल्दी से बादशाह की नाक के आगे फूलों का गुलदस्ता लगा दिया।

जब फ़िरऔन के हवास बजा हुए तो उसने अपने जादूगरों को हुक्म दिया कि वह अपने मंत्र से ऐसा ही करके इस अजनबी ख़ुदा से मुक़ाबला करें। अब परेशानी यह आन पड़ी कि साफ़ पानी कहाँ से लिया जाए? तमाम नहरों, जोहड़ों और तालाबों का पानी ख़ून में बदल चुका था। तमाम बरतनों में भरा हुआ पानी भी ख़ून हो चुका था। बड़ी मुश्किल से दरिया के पास ही से ज़मीन खोदकर पानी निकाला गया और हैरानी की बात है कि उन जादूगरों ने इस पानी को ख़ून बना दिया। फ़िरऔन मुतमइन हो गया। दोनों इसराईलियों से बग़ैर कुछ कहे उसने अपने शाही जुलूस को आगे बढ़ने का हुक्म दिया।

हर एक उलझन में पड़ गया। शदीद गरमी थी, और किसी के पास पीने का पानी तक न था। दरियाए-नील और दूसरी जगहों पर लोग खुदाई में लग गए ताकि रेत में से कुछ न कुछ पानी निचोड़कर अपनी प्यास बुझा सकें। फ़िरऔन के लिए दूर-दराज़ इलाक़े से पानी लाया गया। लेकिन उसका मसला ही और था। वह तो हज़रत मूसा की जादुई ताक़त से बेइंतहा परेशान था। हज़रत मूसा ने उनके दरियाई देवताओं नायलस और ख़्नूम पर कामयाब हमला किया था जो दरियाए-नील के सरपरस्त थे। आगे क्या होनेवाला था?

सात दिन के बाद एक नई वबा ने मिसर को अपनी लपेट में ले लिया। बेशुमार छोटे-बड़े मेंढक कसरत से उन पर आ चढ़े। मेंढकों का ऐसा रेला मिसरियों पर टूट पड़ा जो उन्होंने कभी नहीं देखा था। वह लोगों के साथ उनके बिस्तरों में घुस गए, उनके खानों में कूदने लगे और आटा गूँधने के बरतनों में घुसते-फिरते गए। लोग उनसे सख़्त बेज़ार हो गए। लेकिन वह उनको मार नहीं सकते थे, क्योंकि वह उनके ख़्नूम देवता की बीवी हेकत देवी का मुक़द्दस निशान थे।

मिसरी पागल हो गए कि आख़िर यह सब कुछ क्या हो रहा है? उनका बादशाह और देवता इस सिलसिले में कुछ नहीं कर सकता था। वह अपने आपको भी नहीं बचा सकता था। लिहाज़ा जब लोगों को ख़बर मिली कि उनके जादूगर भी अपने जादू से मेंढक चढ़ा लाए हैं तो उन्हें इससे कोई ख़ास ख़ुशी न हुई। उन्होंने कहा कि नए मेंढक लाने के

बजाए पुराने मेंढकों को हमसे दूर ले जाओ। लेकिन यह उनके बस की बात नहीं थी।

पूरे मुल्क में धीमी धीमी बुड़बुड़ाने की आवाज़ें बुलंद होने लगीं। तब फ़िरऔन ने हज़रत मूसा और हारून को बुला भेजा और उनके आगे मिन्नत की कि अपने ख़ुदा से मेरे और मेरे मुल्क के लिए दुआ करो। हैरानी की बात है कि हज़रत मूसा ने कहा, "वह वक़्त मुक़र्रर करें जब मैं आपके ओहदेदारों और आपकी क़ौम के लिए दुआ करूँ।" मज़ीद हैरत की बात यह है कि मुक़र्ररा वक़्त पर अचानक ही सब मेंढक मर गए। लोग उनको इकट्ठा करके ढेर लगाने लगे। मिसरियों पर दहशत तारी हो गई। ऐसा जलाली ख़ुदा यक़ीनन अपने लोगों को मिसर से निकाल ले जाएगा। उन्होंने इसराईलियों का ख़याल रखना शुरू कर दिया।

गले-सड़े मेंढकों के ढेरों से अभी मिसरियों का दिल बुरी तरह मतला रहा था कि सुबह जुएँ आ पड़ीं। उन्होंने इस बुरी तरह से ख़ून चूसा कि गधे तकलीफ़ की शिद्दत से दोलत्तियाँ मार मारकर चिंघाड़ते हुए अपने कान और दुम हिलाने लगे। घोड़े सड़कों पर ही बेक़ाबू होकर वहशियाना अंदाज़ में हिनहिना उठे। क्या इनसान क्या हैवान जुओं से सख़्त तंग होने लगे और लोग जल्द ही इस नतीजे पर पहुँचे कि यह भी इसराईलियों के ख़ुदा की भेजी हुई वबा है जिसकी बात बादशाह मानने के लिए तैयार नहीं था।

एक सब्ज़ीफ़रोश ने दबी दबी आवाज़ में इत्तला देते हुए कहा, “सुना है कि इस बार हमारे जादूगर जुएँ पैदा नहीं कर सकते। और जानते हो उन्होंने फ़िरऔन से क्या कहा? अल्लाह की क़ुदरत ने यह क्या है।”[1] दूसरे लफ़्ज़ों में उनका मतलब था कि ऐ फ़िरऔन बेहतर है कि तू भी अल्लाह की मरज़ी के आगे सर झुका दे।

“इससे पहले ऐसी बात किसी ने कभी नहीं सुनी है,” चादर के नीचे से एक औरत की तीखी-सी आवाज़ सुनाई दी। “क्या हमारे जादूगरों ने सचमुच हमारे देवता बादशाह से ऐसा ही कहा?”

एक चौड़े-चकले शानोंवाले बावरची ने बड़े दुख से सर हिलाते हुए कहा, “यहाँ तक कि मुक़द्दस दरिंदे भी जिन्हें इतनी एहतियात से साफ़-सुथरा रखा जाता है जुओं से भरे हुए हैं। फ़िरऔन मिसरी देवताओं के इंतज़ार में है कि उसे इस मुसीबत से नजात दिलाने के लिए आएँ।” एक दर्द भरी चीख़ के साथ उसने अपनी गाल पर पड़ी जुओं को ज़ोर से थप्पड़ मारते हुए फटी फटी आँखों से झुँझलाकर कहा, “बड़ी मुसीबत है। अगर इसराईली चले गए तो दूसरे सारे ग़ुलाम भी भाग जाएँगे। मिसर में तो ज़िंदगी कटके रह जाएगी।” इस दौरान गधा मुसलसल चिंघाड़ता और दोलत्तियाँ चलाता रहा। अब जाने का वक़्त हो गया था। सब्ज़ीवाला बुड़बुड़ाते हुए चल दिया।

---

1 ख़ुरूज 8:19

मिसर पर मुसलसल हमले होते गए। इस बार मच्छरों के ग़ोल के ग़ोल उमड आए। खेत उनसे स्याह हो गए। उनके ज़ालिमाना हमलों से बच्चे और शीरख़्वार बिलबिला उठे। खाने-पीने की चीज़ों में भी मच्छरों के भर जाने से लोग परेशान हो गए। इस पर तुर्रा यह कि एक हैरतअंगेज़ ख़बर गरदिश करती रही कि जुशन का इलाक़ा इस वबा से महफ़ूज़ है। सबसे बढ़कर यह बात थी कि हज़रत मूसा पहले ही इसका एलान कर चुके थे। यह तो रोज़े-रौशन की तरह साफ़ था कि वबाएँ इसराईलियों के ख़ुदा के पूरे इख़्तियार में हैं। इस ख़याल के आते ही मिसरी काँप जाते थे कि अगर फ़िरऔन अल्लाह के अहकाम को मानने से इनकार करता रहा तो यक़ीनन हम सब मारे जाएँगे।

एक के बाद दूसरा दिन गुज़रा। लोग इंतज़ार में थे कि मच्छर ख़त्म हो जाएँ लेकिन बेसूद। फ़िरऔन अभी पूरी तरह से अल्लाह का हुक्म बजा लाने पर राज़ी न था। उसने इसराईलियों को मिसर ही में अपने ख़ुदा के हुज़ूर क़ुरबानी गुज़राने की इजाज़त दी। लेकिन हज़रत मूसा को यह बात मंज़ूर न थी। दूसरी तजवीज़ यह थी कि इसराईली बेशक बयाबान में क़ुरबानी गुज़रानें लेकिन ज़्यादा दूर जाने की इजाज़त नहीं होगी। आख़िरकार हज़रत मूसा ने शफ़ाअत की और मच्छरों के ग़ोल दूर हो गए। फिर भी मिसरियों को तसल्ली न हुई, क्योंकि फ़िरऔन की ज़िद के बाइस बुरे नतायज का ही ख़तरा था।

अब तो अल्लाह का हमला इतना शदीद था कि आसमान अज़ियतनाक चीख़ों से गूँज उठा। खेतों में मवेशी, घोड़े, ऊँट और भेड़-बकरियों के रेवड़ के रेवड़ मरने लगे।घुड़सवारों को पैदल चलना पड़ा। आदमियों को घोड़ों और गधों की जगह रथें, छकड़े और टाँगे खींचने पड़ गए। क़ाफ़िले रुक गए। मुरदे ऊँटों के पास ही सामान को ढेर कर देना पड़ा। मवेशियों के मालिक तबाह हो गए। चरवाहे मुरदे रेवड़ों को बड़ी दुख भरी नज़रों से देखते रहे। उनकी रोज़ी जाती रही थी। ज़ाहिर है इसराईलियों के ख़ुदा को वादाख़िलाफ़ी से धोका नहीं दिया जा सकता। फ़िरऔन के वह क़ीमती घोड़े भी जिन पर उसे बड़ा नाज़ था मर गए। लेकिन जैसा कि हज़रत मूसा ने पेशगोई की थी इसराईलियों का कोई जानदार न मरा। यह ख़बर जंगल की आग की तरह फैल गई, और लोगों पर परेशानी और हैरत तारी हो गई।

सैंकड़ों सालों से मिसर की मज़हबी और सियासी ज़िंदगी मज़बूत रही थी। उसका हाकिम और अज़ीमतरीन देवता फ़िरऔन था। मिसर एक आलमी ताक़त था। तो भी ग़ुलामों का यह छोटा-सा क़बीला उसको ललकारने की जुर्रत कर रहा था। यह कैसी गुस्ताख़ी थी कि उसका लीडर मूसा अपने ख़ुदा के नाम में रा के फ़रज़ंद के ताक़तवर बाज़ुओं से ज़ोर-आज़माई करने लगा था। फ़िरऔन ने बड़ी ढिटाई से सर झटक दिया। हरगिज़ नहीं! मैं आख़िरी दम तक मुक़ाबला करूँगा।

तब पेशगोई के मुताबिक़ आदमियों और जानवरों के जिस्म पर फोड़े और फफोले फैलने लगे। फिर भी फ़िरऔन ने अपना दिल सख़्त कर लिया। जादूगर और पुरोहित सर से पाँव तक फोड़ों से भरे पड़े रहे। उनकी हालत क़ाबिले-रहम थी। अपनी नापाकी पर इंतहाई शरमिंदगी के बाइस वह वहाँ से खिसक गए। पुरोहितों का बेदाग़ होना तो ज़रूरी था। फ़िरऔन दाँत किचकिचाकर रह गया। इसराईलियों के ख़ुदा से शिकस्त तसलीम कर लूँ? हरगिज़ नहीं।

अगले रोज़ एक ख़ौफ़नाक तूफ़ान आया। ओले पड़े, बिजली गिरी और बादल गरजते रहे। इससे पहले ऐसा तूफ़ान कभी देखने में नहीं आया था। इनसान क्या और हैवान क्या सब मुतअस्सिर हुए। खेतों की सारी सब्ज़ी तबाह हो गई। तूफ़ान इतना शदीद था कि फ़िरऔन ने हज़रत मूसा और हारून को बुला भेजा और बड़ी आजिज़ी से कहने लगा, "इस मरतबा मैंने गुनाह किया है। रब हक़ पर है। मुझसे और मेरी क़ौम से ग़लती हुई है। ओले और अल्लाह की गरजती आवाज़ें हद से ज़्यादा हैं। रब से दुआ करो ताकि ओले रुक जाएँ। अब मैं तुम्हें जाने दूँगा। अब से तुम्हें यहाँ रहना नहीं पड़ेगा।"

हज़रत मूसा ने उससे कहा, "मैं शहर से निकलकर दोनों हाथ रब की तरफ़ उठाकर दुआ करूँगा। फिर गरज और ओले रुक जाएँगे और आप जान लेंगे कि पूरी दुनिया रब की है। लेकिन मैं जानता हूँ कि आप और

आपके ओहदेदार अभी तक रब ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं मानते।”[1] आख़िरी बात बड़े दुख से कही गई।

अफ़सोस, फ़िरऔन ने अब भी अपना वादा पूरा न किया। जवाब में रब ने हज़रत मूसा की मारिफ़त टिड्डियों की बदतरीन वबा भेजने का एलान किया। इस बार फ़िरऔन के नौकर उससे मिन्नत करके कहने लगे, “हम कब तक इस मर्द के जाल में फँसे रहें? इसराईलियों को रब अपने ख़ुदा की इबादत करने के लिए जाने दें। क्या आपको अभी तक मालूम नहीं कि मिसर बरबाद हो गया है?”[2]

तब फ़िरऔन ने अपना रवैया नरम करते हुए कहा, “जाओ, अपने ख़ुदा की इबादत करो। लेकिन यह बताओ कि कौन कौन साथ जाएगा?”[3]

“हम अपनी हर चीज़ अपने साथ लेकर जाएँगे।”

“ठीक है, जाओ और रब तुम्हारे साथ हो। नहीं, मैं किस तरह तुम सबको बाल-बच्चों समेत जाने दे सकता हूँ? तुमने कोई बुरा मनसूबा बनाया है।”[4] उसके लहजे में चुभता हुआ तंज़ था। “नहीं, सिर्फ़ मर्द जाकर रब की इबादत कर सकते हैं। तुमने तो यही दरख़ास्त की थी।”[5]

---

1 ख़ुरूज 9:29-30
2 ख़ुरूज 10:7
3 ख़ुरूज 10:8
4 ख़ुरूज 10:10
5 ख़ुरूज 10:11

बादशाह ने इंतहाई ग़ुस्से के आलम में उनको अपने सामने से निकाल दिया। जवाब में हज़रत मूसा ने रब के हुक्म पर मिसर पर अपना हाथ बढ़ाया। तब टिड्डियों के ग़ोल के ग़ोल इस कसरत से उमड आए कि आसमान पर अंधेरा छा गया। वह इतनी हौलनाक थीं कि फ़िरऔन ने जल्दी से हज़रत मूसा और हारून को बुला भेजा। रब से माफ़ी माँगना और मूसा से शफ़ाअत की मिन्नत करना फ़िरऔन का मामूल बन चुका था। हर बार अल्लाह अपने वादे का सच्चा साबित होता था जबकि बादशाह हमेशा झूट बोलता और कभी अपनी बात पर क़ायम नहीं रहता था। फ़िरऔन को यक़ीन हो चला था कि यह सिलसिला हमेशा यों ही चलता रहेगा। उसे कितनी ग़लतफ़हमी थी। उस पर अल्लाह का क़हर नाज़िल होने में देर न लगी।

इसके बाद एक बला अचानक ही नाज़िल हुई। सारे मिसर पर गहरी तारीकी छा गई। उसने दरख़्त के नीचे हम्माम के अड्डे पर बैठे एक नाई और उसके गाहक को भी अपनी लपेट में ले लिया। वह मुसलसल तीन दिन तक एक दूसरे की झलक तक न देख सके। ऐसी तारीकी के बारे में कभी किसी ने सुना तक न था। ख़ौफ़ से उनके दिल डूबते गए।

“ऐ सूरज देवता के फ़रज़ंद, हमारी मदद कर!” गाहक यकदम उछलकर पंजों के बल खड़े होते हुए कहने लगा। वह बुरी तरह काँपने लगा, “बस अब हम मरे के मरे।” उसकी नाक और हलक़ में गर्द जमके रह गई। “इसराईलियों का ख़ुदा हम सबको हलाक करने के लिए आ

गया है। उनके ख़ुदा ने हमारे देवताओं को उनकी अपनी सरज़मीन पर शिकस्त दी है। और सबसे आख़िर में हमारे सबसे बड़े देवता आमून रा को भी पसपा कर दिया है जिसका फ़रज़ंद फ़िरऔन है। आज इसराईलियों के ख़ुदा ने सूरज देवता के फ़रज़ंद और उसके मोतक़िदों को तारीकी और मौत का क़ैदी बना रखा है। मैं यक़ीन से कहता हूँ कि आज के बाद न कोई निगरान न कोई सिपाही इसराईलियों को छूने की भी जुर्रत करेगा।"

नाई के हरकत करने की आवाज़ सुनाई दी। "मुझे तो ख़ुशी इस बात की है कि आजकल हमारे लोग इसराईलियों के साथ अच्छा सुलूक करते हैं," उसने लरज़ती हुई कमज़ोर आवाज़ में कहा। "अब मिसरी निगरान और उनके घरवाले भलाई करने के कोशाँ रहते हैं, क्योंकि वह उनके ग़ज़ब से डरते हैं।"

आख़िरकार रा देवता के फ़रज़ंद फ़िरऔन बादशाह ने हार मान ही ली। उसने हज़रत मूसा को बुलाकर कहा, "जाओ, रब की इबादत करो! तुम अपने साथ बाल-बच्चों को भी ले जा सकते हो। सिर्फ़ अपनी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल पीछे छोड़ देना।"[1]

लेकिन हज़रत मूसा ने बड़ी सख़्ती से जवाब दिया, "क्या आप ही हमें क़ुरबानियों के लिए जानवर देंगे ताकि उन्हें रब अपने ख़ुदा को पेश करें? यक़ीनन नहीं। इसलिए लाज़िम है कि हम अपने जानवरों को

1 ख़ुरूज 10:24

साथ लेकर जाएँ। एक खुर भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा, क्योंकि अभी तक हमें मालूम नहीं कि रब की इबादत के लिए किन किन जानवरों की ज़रूरत होगी। यह उस वक़्त ही पता चलेगा जब हम मनज़िले-मक़सूद पर पहुँचेंगे। इसलिए ज़रूरी है कि हम सबको अपने साथ लेकर जाएँ।"[1]

पहले तो फ़िरऔन की ज़बान गुंग हो गई। यह कैसी बात थी कि देवता रा का फ़रज़ंद एक ग़ैरमाबूद को क़ुरबानी के लिए जानवर दे? वह बड़े ग़ुस्से में चिल्ला उठा, "दफ़ा हो जा। ख़बरदार! फिर कभी अपनी शक्ल न दिखाना, वरना तुझे मौत के हवाले कर दिया जाएगा।"[2]

हज़रत मूसा ने बड़े आराम से जवाब में कहा, "ठीक है, आपकी मरज़ी। मैं फिर कभी आपके सामने नहीं आऊँगा।"[3]

फिर हज़रत मूसा वापस जुशन के इलाक़े में चले गए जहाँ लोग दिन की रौशनी से लुत्फ़अंदोज़ हो रहे थे।

---

1 ख़ुरूज 10:25-26
2 ख़ुरूज 10:28
3 ख़ुरूज 10:29

रवानगी

ख़ौफ़नाक तारीकी के बाद मिसरी निगरानों ने ग़ुलामों के साथ ही अपनी जगह छोड़ दी थी। उन निगरानों को फ़िरऔन के ख़ौफ़ से ज़्यादा क़ादिरे-मुतलक़ के क़हर का ख़ौफ़ था। अब इसराईली घरेलू मुलाज़िमों के साथ भी बड़ा अच्छा सुलूक हो रहा था।

शाम के धुँधलके में अहरनेस के घराने की तीन ग़ुलाम औरतें सरों पर घड़े उठाए दरियाए-नील से लौट रही थीं। हबशी दोशीज़ा फ़ीहा की बड़ी बड़ी आँखें हैरत से चमक रही थीं, "तुमने ग़ौर किया आजकल बेगम साहबा इसराईली ग़ुलामों से कितना अच्छा सुलूक करती हैं? जब पहले की तरह उनका छोटा बच्चा बेचारे शालिमोत को थप्पड़ मारने लगा तो उसकी माँ ग़ुस्से में आकर उसे मना करने लगी कि फिर कभी ऐसा न करना।' वह उस पर बरस ही तो पड़ी। 'शालिमोत का ख़ुदा तुम्हें मार डालेगा। चलो शालिमोत से माफ़ी माँगो।' बेगम साहबा तो अब उनके घरवालों की भी ख़ैरियत पूछती रहती है और बयाबान में

होनेवाली इसराईलियों की ईद के बारे में बतो बातें ख़त्म ही नहीं होतीं। उनके साथ अचानक ही इनसानों जैसा सुलूक होने लगा है और यह सिर्फ़ इसलिए कि मिसरी अल्लाह के ग़ज़ब से डरते हैं।"

ख़ूबरू अदाह चश्मे की तरह उबल पड़ी, "हमारा मालिक तो हर वक़्त शालिमोत, सारा और बिनयमीन बाबा को यक़ीन ही दिलाता रहता है कि वह भट्टे पर उनके रिश्तेदारों से बड़े तहम्मुल से पेश आता है और किस तरह से उनकी छोटी-मोटी ख़ामियों को नज़रंदाज़ कर देता है, कि जब लोग उस लड़के को उसके पास पकड़कर लाए जो अभी तक छुपा हुआ था तो उसने उसे सिपाहियों के हवाले न किया बल्कि चुपके से दूसरों में शामिल कर लिया।" सब जानते थे कि अहरनेस इतना नरमदिल नहीं है। सिर्फ़ अल्लाह के ग़ज़ब के डर से अब वह इसराईलियों पर क़ीमती तोह्फ़े निछावर करने लगा है।

फ़ीहा कहने लगी, "इबरानियों का ख़ुदा सिर्फ़ इस क़ौम का ही ख़ुदा नहीं बल्कि हर उसका जो उसकी आरज़ू रखता है। मुझे यह बातें बिनयमीन बाबा ने समझाई हैं। मेरी रूह इस सच्चे ख़ुदा के लिए बेचैन है। जब इसराईली ख़ुदा के वादे के मुताबिक़ अपने वतन लौटेंगे तो मैं भी उनके साथ जाऊँगी।"

जब इसराईली अपने सफ़र की तैयारियों में लग गए तो बड़ी हैरतअंगेज़ बातें रूनुमा होने लगीं। उनका ख़ुदा उन्हें ख़ाली हाथ नहीं ले जा रहा था बल्कि वह मिसरियों को राज़ी कर रहा था कि वह उनको

कुछ देकर रवाना करें। असल में हज़रत मूसा ही ने इसराईलियों को उकसाया था कि वह मिसरियों से सोना, चाँदी और क़ीमती चीज़ों का मुतालबा करें। आख़िर उन्होंने सालों उनके लिए बिलामुआवज़ा काम किया था।

ग़ुलामाना निज़ाम ख़त्म होने लगा तो तमाम इसराईली रामसीस और पितोम से अपनी अपनी बस्ती में लौटे। मुद्दत से बिछड़े ख़ानदान फिर से मुत्तहिद हो गए। हर तरफ़ गप-शप, क़हक़हों और हसरतों का बाज़ार गरम था।

बीबी मरियम का चेहरा ख़ुशी से तमतमा रहा था। हज़रत हारून की एक पोती सालन पका रही थी जबकि घराने के दीगर लोग आराम कर रहे थे। इतने में किसी ने कहा, "चलो आख़िरकार फ़िरऔन को पता तो चल गया कि क़ादिरे-मुतलक़ कौन है। उसका तो बस एक ही सवाल होता था, यह कि अल्लाह कौन है कि मैं उसकी बात मानूँ? आख़िर उसे इसका बड़ा अच्छा जवाब मिल गया है।"

हज़रत हारून एक ठंडी साँस भरते हुए बोले, "मरियम, यह तो ठीक है कि वह अल्लाह को जान गया है। लेकिन वह अभी तक उसका मुक़ाबला कर रहा है। अगर आज भी तुम्हारी उससे मुलाक़ात हो जाए तो तुम काँपकर रह जाओगी। जितना ज़्यादा उसके इख़्तियारात को झटका लगता है उतना ही ज़्यादा वह अपनी ताक़त और जाहो-जलाल का मुज़ाहरा करने की कोशिश करता है। अगर तुम्हारे भाई मेरे साथ न

होते तो शायद ही मैं कभी उसके रूबरू होने की जुर्रत करता। लेकिन भाई मूसा चटान की तरह खड़े रहे। जितना ज़्यादा उनको वहाँ जाना पड़ता उतना ही ज़्यादा उनके क़दम मज़बूत होते गए।"

बिला-शुबहा इस तनाज़े में हज़रत मूसा के ईमान ने बड़ा किरदार अदा किया। उस तमाम अरसे में उनका ख़ुदा के साथ बड़ा क़रीबी राबता रहा।

बीबी मरियम को वह बच्चा मूसा याद आ गया जो कि मौत के मुँह में था। वह कहने लगी, "हारून! मुझे अकसर अपने वालिदैन के मज़बूत ईमान पर हैरत होती है और यह कि देखो अल्लाह कैसे मूसा को सीधा महल में ले गया जहाँ वह शाही ख़ानदान का फ़रद बन गया। रब ने फ़िरऔन ही से उसे आला तालीम दिलवाई। इसी वजह से मूसा उनकी सोच और बोल-चाल के ढंग से ख़ूब वाक़िफ़ है। बादशाह से बात करते वक़्त तुम्हें उससे बहुत ज़्यादा मदद मिलती होगी।"

हज़रत हारून ने इस बात को तसलीम करते हुए कहा, "कनान जाते वक़्त मूसा को अपनी फ़ौजी तरबियत को अमल में लाने के बहुत ज़्यादा मौक़े मिलेंगे। हमें कनान जानेवाले अपने बड़े हुजूम पर क़ाबू पाने के लिए उसकी सलाहियतों को इस्तेमाल करने की सख़्त ज़रूरत पड़ेगी।"

हज़रत मूसा पुरअज़म डग भरते हुए आ पहुँचे। यों लगता था उनकी सारी क़ुव्वत बहाल हो चुकी है।

"सलाम, मेरे लिए भी कुछ खाने को बचा है कि नहीं?" उन्होंने मुसकराते हुए पूछा। चौके पर से उनकी भाभी ने उनको यक़ीन दिलाया

कि खाना मौजूद है और कहने लगी, “बेचारा! बाल-बच्चों के बग़ैर तुम पर कितना बड़ा बोझ होगा। तुमने अच्छा किया जो उन्हें घर भेज दिया है। वरना वह भी ग़ुलाम बन जाते।”

“रब ज़रूर मुझे मेरे बाल-बच्चों से मिलाएगा।” हज़रत मूसा ने बड़े एतमाद से जवाब दिया। “इस वक़्त तो इसराईली ही मेरा घराना हैं, और मुझे सबसे ज़्यादा उनकी फ़िकर है। आज रात बुज़ुर्ग जमा होकर हिदायात लेंगे कि मिसर से रवाना होने से पहले इसराईलियों को क्या कुछ करना होगा।” उनके चेहरे पर एक साया छा गया।

“अब तक इसराईलियों को कुछ भी नहीं करना पड़ा बल्कि वह सिर्फ़ अल्लाह के क़ादिर हाथ ही को काम करते देखते रहे। आख़िरी आफ़त का हाल ज़रा मुख़्तलिफ़ होगा। हर एक को बचने के लिए रब की हिदायात पर अमल करना होगा। लिहाज़ा हर एक के लिए यह जानना बहुत ज़रूरी है कि उसे क्या करना है।” उन्होंने अपने भाई पर एक पुरमानी नज़र डालते हुए कहा, “मेरा दिल मुझे मजबूर कर रहा है कि मैं एक बार फिर फ़िरऔन को ख़बरदार कर दूँ अगरचे मुझे पहले से मालूम है कि वह मेरी बात हरगिज़ न सुनेगा।”

उस शाम हज़रत मूसा ने बुज़ुर्गों से मुलाक़ात की। इसराईली निगरानों और चंद बुज़ुर्गों के अलावा नौजवानों की एक बड़ी तादाद भी वहाँ मौजूद थी। वह सब अपने सरदार की हिदायात सुनने और उन पर अमल करने के लिए बेचैन थे।

हज़रत मूसा ने उनको बड़ी संजीदगी से कहा, "जाओ, अपने ख़ानदानों के लिए भेड़ या बकरी के बच्चे चुनकर उन्हें फ़सह की ईद के लिए ज़बह करो। ज़ूफ़े का गुच्छा लेकर उसे ख़ून से भरे हुए बासन में डुबो देना। फिर उसे लेकर ख़ून को चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाएँ-बाएँ के बाज़ुओं पर लगा देना। सुबह तक कोई अपने घर से न निकले। जब रब मिसरियों को मार डालने के लिए मुल्क में से गुज़रेगा तो वह चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाएँ-बाएँ के बाज़ुओं पर लगा हुआ ख़ून देखकर उन घरों को छोड़ देगा। वह हलाक करनेवाले फ़रिश्ते को इजाज़त नहीं देगा कि वह तुम्हारे घरों में जाकर तुम्हें हलाक करे।"[1]

इस पर सुननेवाले झुककर उस अनदेखे ख़ुदा की परस्तिश करने लगे जिसकी बातें उन्होंने पहली बार हज़रत मूसा की ज़बानी सुनी थीं।

हर घराने ने एक एक सेहतमंद और बेऐब लेला चुन लिया। बच्चे आ आकर उसके साथ खेलने लगे। वह बड़ी संजीदगी से कहते, "यह फ़सह का लेला है। उसे ज़बह कर दिया जाएगा। इसके बाद हम एक लंबे सफ़र पर रवाना हो जाएँगे।" बड़ों को सामान इकट्ठा करते हुए देखकर वह बड़े ख़ुश हुए। कुछ गठड़ियाँ उन्हें अपनी पीठ पर लादना थीं और कुछ गधों पर ढोने के लिए बाँधी जा रही थीं। भेड़-बकरियाँ, मवेशी, बटेरों के पिंजरे, शहद और तेल से भरे हुए मरतबान, फलों की टोकरियाँ, आटे

1 ख़ुरूज 12:21-23

की बोरियाँ सब कुछ इकट्ठा किया जा रहा था। मिसरियों के दिए हुए तोह्फ़े कितने शानदार दिखाई दे रहे थे।

फिर फ़सह का दिन तुलू हुआ। उस रोज़ इसराईलियों के घरों में बड़ी चहल-पहल थी। उनकी रिहाई का दिन आ पहुँचा था। इसके मुक़ाबले में शाही दरबार में फ़िरऔन का रंग ग़ुस्से से फ़क़ था, क्योंकि उसके मुलाज़िमों ने उससे हाथ जोड़कर मिन्नत की थी कि वह इसराईलियों को ईद मनाने की इजाज़त दे। "इन ग़ुलामों ने काम करना छोड़ दिया है, क्योंकि उनके मिसरी निगरानों के दिल उनके ख़ुदा के ख़ौफ़ से पिघल चुके हैं। दीगर ग़ुलाम भी इस सूरते-हाल का फ़ायदा उठाकर काम करने से इनकार कर रहे हैं। मिसरी उनकी ईद के लिए उन पर सोने-चाँदी के तोह्फ़े निछावर कर रहे हैं। मुल्क का सारा नज़मो-ज़ब्त पामाल हो चुका है। यहाँ तक कि फ़ौज उनकी तरफ़ उँगली तक नहीं उठाती।"

फ़िरऔन ग़ुस्से से खौल रहा था। इसमें कुछ शक नहीं था कि इसराईलियों का ख़ुदा फ़िरऔन की बरबादी के दरपै है। यह देखकर दरबारी और उसके दोस्त तक उसे मजबूर कर रहे थे कि अल्लाह के आगे हार मान ले। लेकिन फ़िरऔन को उससे बला की नफ़रत थी। जो ख़ुद मिसरियों का अज़ीमतरीन देवता था वह कभी भी अपने ग़ुलामों के ख़ुदा से हार मानने को तैयार न था। अब वह दुबारा ख़ुदा के एलचियों से मिलने पर रज़ामंद न था। मुहाफ़िज़ों को फ़िरऔन की जान की क़सम देकर कहा गया था कि मूसा अब महल में दाख़िल न होने पाए।

लेकिन फिर भी दिन के दौरान मूसा असा हाथ में लिए दाख़िल हुआ। कमज़ोरी के आलम में फ़िरऔन की आँखें फटी की फटी रह गईं। हज़रत मूसा के नूरानी चेहरे ने उसे मज़ीद ख़ौफ़ज़दा कर दिया। अल्लाह के बंदे के तंबीहआमेज़ अलफ़ाज़ फ़िरऔन के कानों में हथोड़े की तरह वार करने लगे। "रब फ़रमाता है, आज आधी रात के वक़्त मैं मिसर में से गुज़रूँगा। तब बादशाह के पहलौठे से लेकर चक्की पीसनेवाली नौकरानी के पहलौठे तक मिसरियों का हर पहलौठा मर जाएगा। चौपाइयों के पहलौठे भी मर जाएँगे।"[1]

उसी वक़्त फ़िरऔन का पहलौठा बेटा अंदर आ गया। तख़्त का यह वारिस अपने ऐन आलमे-शबाब में था। यह सब बातें सुनकर उसने ख़ौफ़ज़दा आँखों से अपने बाप पर नज़र डाली। बाप की निगाहें उस पर फ़ख़्र से जमी रहती थीं। तो क्या वह अपने बेटे की ख़ातिर भी राज़ी नहीं होगा? लेकिन यों लगता था जैसे फ़िरऔन किसी शैतानी ताक़त के तहत काम कर रहा हो। गो उसने क़ादिरे-मुतलक़ के हाथ को देख लिया था तो भी वह अभी तक उसका मुक़ाबला कर रहा था। बादशाह ने अपने बेटे के साथ आँख मिलाने से गुरेज़ किया जो मरने को था। वह अपने ख़ौफ़ज़दा मुलाज़िमों की तरफ़ भी देख न पाया, क्योंकि इस बार उनकी आँखें अपने बादशाह की बेहिस्सी और ख़ुदपरस्ती के बारे में खुल चुकी थीं।

---

1 ख़ुरूज 11:4-5

हज़रत मूसा फ़िरऔन के दरबार से इंतहाई ग़ुस्से में बाहर निकल आए। अब फ़िरऔन के साथ सभी मिसरियों को इलाही ग़ज़ब का निशाना बनना था।

सिहपहर के वक़्त इसराईली घराने लेलों को ज़बह करने में मसरूफ़ हो गए। जैसे ही ख़ून का धार उबलकर फूटा उसे बड़ी एहतियात से बासनों में इकट्ठा किया गया। फिर उसे ज़ूफ़े के गुच्छे के साथ दरवाज़े के दोनों बाज़ुओं और ऊपर की चौखट पर लगा दिया गया। हर पहलौठा जानता था कि रब उस ख़ून को देखकर गुज़र जाएगा और मौत का फ़रिश्ता मुझे नुक़सान नहीं पहुँचाएगा। मिसरी दूर से इसराईलियों को अपने घरों के बाहर आग जलाते और पूरा लेला भूनते हुए देखते रहे। बहार के मौसम की उस शाम को जब जुशन के इलाक़े में भुने हुए गोश्त की ख़ुशबू फैल गई तो हर एक के मुँह में पानी भर आया।

हज़रत मूसा अपने भाई हारून को इस मुक़द्दस रस्म को अदा करते हुए देख रहे थे। जैसे ही ख़ून तेज़ी से बह निकला वह सोचने लगे, "रब कितना भला है जो अपने पहलौठे इसराईल को मौत के ख़ौफ़ में नहीं रखता बल्कि चाहता है कि वह ख़ुशी मनाए और अपने ख़ुदा की मुहब्बत, शफ़क़त और वफ़ादारी को पहचाने।"

अल्लाह की मुहब्बत और नूर के बरअक्स फ़िरऔन के दिल में कितनी तारीकी और ख़ुदग़रज़ी थी। हज़रत मूसा ने ठंडी आह भरी। वह ज़हीन बादशाह इतना भी नहीं पहचान सका कि वह किसके ताबे

है। कोई भी इनसान अपना मालिक नहीं हो सकता। उस पर अल्लाह की हुकूमत होती है या शैतान की। इनसान की तख़लीक़ का मक़सद ही ख़ुदा से मुहब्बत करना और उसकी ख़िदमत करना है। उसकी ज़िंदगी का और कोई मक़सद नहीं होता।

औरतों ने रोटियाँ पकाने के लिए आटा गूँध कर सफ़र पर ले जाने के लिए बाँध लिया, क्योंकि वक़्त नहीं था कि सफ़र के लिए रोटियाँ पकाएँ। जब रात के साय फैलने लगे तो तमाम इसराईली घरों के अंदर ग़ायब हो गए और बड़ी एहतियात से दरवाज़े बंद कर लिए। बच्चों को बाहर जाने से सख़्ती से मना कर दिया गया। फिर ईद मनाई गई। सब जानते थे कि रब का फ़रिश्ता अब किसी वक़्त भी मिसर में उतर आएगा। वह उनके दरवाज़े के पास से भी गुज़रेगा। उस मुक़द्दस घड़ी में बड़ी संजीदगी छाई हुई थी। उन्होंने कमर कसकर पाँवों में जूते और हाथ में असा पकड़कर खाना खाया। खाना खाते वक़्त वह रवाना होने के इशारे का शिद्दत से इंतज़ार करते रहे।

बहार के मौसम की यह एक आम-सी रात थी। मेंढक टर्रा रहे थे, झींगुर गुनगुना रहे थे। चलती हवा से खजूर के पत्तों की सरसराहट साफ़ सुनाई देती थी। लेकिन आन की आन में हर तरफ़ एक ख़ामोशी छा गई। हज़रत मूसा का दिल मिसर में मरनेवाले सब पहलौठों के लिए तड़प उठा। उनका देवता फ़िरऔन उनके पहलौठों की जान बचाने पर राज़ी न हुआ था। हज़रत मूसा का दिल अपने रब के प्यार से सरशार होकर

अल्लाह के उस शदीद दुख को महसूस कर रहा था जो उसे मिसरियों की बरबादी से हो रहा था। लेकिन अब उनके इनसाफ़ का वक़्त आ पहुँचा था। जिस वक़्त ख़ुदा के लोग मुसीबत के बाइस चिल्ला उठे थे उस वक़्त किसी ने भी उनकी परवा नहीं की थी। अब उन्हें उनकी सख़्तदिली का मज़ा चखाया जा रहा था।

अचानक कहीं दूर दिल को चीरनेवाला कुहराम मचा और फिर यों लगा जैसे सारे मिसर में सफ़े-मातम बिछ गई है। हज़रत हारून और मूसा को फ़िरऔन के सामने पेश होने के लिए बुलाया गया। बादशाह, उसके मुलाज़िम और महल के तमाम अफ़राद बड़ी बेचैनी से उनके आने का इंतज़ार कर रहे थे। महल में भी सफ़े-मातम बिछी हुई थी। अदना से अदना मुलाज़िम से लेकर फ़िरऔन तक सब नोहा कर रहे थे। सदमे के बाइस फ़िरऔन बरसों का बूढ़ा दिखाई दे रहा था। उसकी आँखें रो रोकर सूजी हुई थीं। हज़रत मूसा और हारून को देखते ही वह हाथ जोड़कर मिन्नत करने लगा कि इसराईलियों को फ़ौरन मेरे मुल्क से बाहर ले जाओ। तमाम हाज़िरीन उन पर तोह्फ़े निछावर करने लगे। अब फ़िरऔन में इतनी आजिज़ी का एहसास था कि उसने उनसे इल्तिजा की कि जाने से पेशतर मुझे बरकत दो। अचानक वह मिसर पर नाज़िल होनेवाली लानत की जगह अल्लाह की बरकत का ख़ाहिशमंद हुआ।

सुबह-सवेरे इसराईली रवाना होने के लिए जमा होने लगे। हर तरफ़ से ग़म के मारे हुए ख़ौफ़ज़दा मिसरी उन्हें जल्द अज़ जल्द रवाना करने

के लिए आ पहुँचे और उनसे मिन्नत करने लगे, "ख़ुदा के लिए जल्दी से चले जाओ। हम सब मौत के मुँह में हैं।" वह गधों पर सामान लादने, लोगों के कंधों पर गठड़ियाँ उठाने में इसराईलियों की मदद करने लगे। मिसरियों ने तो जानो इसराईलियों को उनके रास्ते पर धकेल ही दिया।

इतनी जल्दी के बावुजूद हज़रत मूसा अपना एक ज़रूरी काम करना न भूले। उन्होंने पूरी तरह तसल्ली कर ली कि मिसर के साबिक़ हाकिम हज़रत यूसुफ़ की हनूत-शुदा लाश उनके साथ ही जा रही है। गो बुज़ुर्ग याक़ूब का बेटा मिसर में बड़े आला ओहदे पर फ़ायज़ था तो भी अपने बाप की तरह उसने भी मिसर को कभी अपना वतन तसलीम नहीं किया था। ग़ुलामी के मायूसकुन बरसों के दौरान हज़रत यूसुफ़ का ताबूत वापस जाने की उम्मीद को ज़िंदा रखे हुए था।

तमाम गली मुहल्लों से लोग रवाना होने के लिए उमडे चले आ रहे थे। यह मुसाफ़िर सिर्फ़ जुशन के इलाक़े ही से नहीं थे बल्कि रामसीस और दूसरी जगहों से भी आ गए थे। जैसे जैसे वह बढ़ते जाते थे हर गाँव से भारी तादाद में मुसाफ़िर उस क़ाफ़िले में शरीक होते जाते थे।

उस ख़ुशगवार रात में जब वह जल्दी जल्दी चौधवें के चाँद की भरपूर रौशनी में आगे बढ़ने लगे तो उन्हें बिलकुल पता नहीं था कि अगला पड़ाव कहाँ होगा। उनके लिए इतना जान लेना ही काफ़ी था कि हज़रत मूसा हमारे आगे आगे चल रहे हैं, ऐसी हस्ती जिसके ईमान ने हमारे ईमान को नए सिरे से जगा दिया है।

क़ादिरे-मुतलक़ का हाथ

इतने में बादशाह सदमे पर क़ाबू पा चुका था। इसराईलियों के ख़ुदा का ख़ौफ़ घटने लगा। इतने ज़्यादा कारिंदों के चले जाने से वह ग़ुस्से से पागल हो रहा था। खोजी इसराईलियों का अता-पता मालूम करने के लिए रवाना हो चुके थे।

ज्योंही फ़िरऔन की नज़र वापस आते हुए खोजियों पर पड़ी उसकी ढारस बँध गई। उनके सरदार ने आदाब बजा लाते हुए कहा, "बादशाह का इक़बाल बुलंद हो! ऐ ताक़तवर फ़िरऔन! दुश्मन ज़ेर हों।" उसने अपना बयान जारी रखते हुए कहा, "इबरानियों का हुजूम अपने माले-ग़नीमत समेत फ़ातेह लशकर की तरह जुशन के इलाक़े से बाहर चला गया है।"

"उनके आदमी फ़ौजी तरतीब से आगे बढ़ रहे हैं क्या?"

"नहीं! नहीं! ऐसी फ़ौज नहीं बल्कि उनके मर्द, औरतें बच्चे और मवेशी इकट्ठे आगे बढ़ रहे हैं। सुक्कात पर उनका पहला पड़ाव था जहाँ

उन्होंने खाना पकाया और खाकर आराम किया। वहाँ से वह कूच करके बयाबान के किनारे एताम तक गए। मूसा और हारून उनकी क़ियादत कर रहे हैं। और उनके आगे आगे एक अजीब चीज़ चल रही है।"

फ़िरऔन बेसब्री से फट पड़ा, "वह क्या है? ऐ मियाँ बोलो। क्या कोई फ़रिश्ता है या देवता?"

"वह कुछ बादल जैसी चीज़ है ... "

फ़िरऔन तंज़ भरी हँसी हँसते हुए बोला, "लोगों का इतना बड़ा हुजूम जब गर्द में से गुज़रेगा तो धूल का बादल तो उठेगा ही।"

"ज़ाहिर है कि वह सीधी सड़क से नहीं जा रहे जो उनको 10 दिन में कनान पहुँचा सकती है। हाँ मूसा अच्छी तरह से जानता है कि सीधे रास्ते पर हम मिसरियों ने जगह जगह चौकियाँ क़ायम की हैं। हमारी फ़ौज आने-जानेवालों का बड़ी एहतियात से जायज़ा लेती है। अब वह कहाँ हैं?"

"एक अजीब बात हुई जब मूसा उनको इधर-उधर लिए फिरता रहा तो वह उस रास्ते पर चल दिए जिस पर बहरे-क़ुलज़ुम उनको आगे बढ़ने से रोके हुए है।"

फ़िरऔन ने फ़ातेहाना अंदाज़ में ताली बजाते हुए कहा, "तो फिर आख़िर वही हुआ। उनका ख़ुदा इतना बेबस निकला कि उसे अपने लोगों को उनके हाल पर छोड़ना ही पड़ा। अंजामे-कार मिसर पर उसकी आरिज़ी ताक़त का ख़ातमा हो ही गया। अब हमारे देवता हमारी मदद के

लिए आएँगे।” उसके उम्ररसीदा चेहरे पर मुसकराहट से शिकनें बिखर गईं।

ईंटें बनाने का ज़्यादातर काम अब रुका हुआ था। इसके अलावा इसराईलियों में आला महारत रखनेवाले मर्द और औरतें थीं जिनकी मिसर को ज़रूरत थी। हज़रत मूसा का ख़याल आते ही बादशाह के दिल में बदले की जहन्नुमी आग भड़क उठी। यह वह शख़्स है जिसने मुझे बार बार नीचा दिखाया है। यही मेरे बेटे की मौत का ज़िम्मेदार है। अब सबसे पहले इसराईलियों के ख़ुदा को शिकस्त देना ज़रूरी है ताकि रा देवता की बालादस्ती हो।

फ़िरऔन ने फ़ौरन अपने आला ओहदेदारों को जमा कर लिया और कहने लगा, “मेरे दोस्तो! सुनो, इसराईली परेशानी के आलम में इधर-उधर भटकते फिर रहे हैं, क्योंकि उनके देवता के पास उन्हें समुंदर पार ले जाने की ताक़त नहीं है। अब हमारे देवता उन पर ग़ालिब आ जाएँगे।” फिर रथसवार दस्तों के सालार की तरफ़ पलटकर कहने लगा, “रथ जमा करके फ़ौरन उनका पीछा करो।”

“ऐ रा के बेटे! तू ही हमारा अज़ीमतरीन देवता है। अगर तेरी किरनें हमारे सामने चमकती रहें तो फ़तह हमारी है। हमारे साथ आ।”

बादशाह की बूढ़ी आँखें चमक उठीं। लोगों को मेरी ज़रूरत है। वह मुझे चाहते हैं। अब भी मैं अज़ीमतरीन देवता माना जाता हूँ। थोड़ी ही देर मैं सुनहरी साज़ में चार सफ़ेद घोड़े लाए गए जो जाने के लिए बेचैनी

से अपने सुम पटख़ रहे थे। बादशाह के आगे आगे उसके सिलाहबरदार सुनहरी ढाल पकड़े चल रहे थे। बूढ़े और कमज़ोर फ़िरऔन को रथ में सवार होते ही यक़ीन हो चला था कि वह दुनिया का सबसे ताक़तवर आदमी और देवता है।

उधर हज़रत मूसा इस हक़ीक़त से अच्छी तरह वाक़िफ़ थे कि अब तक हमारी हर नक़लो-हरकत पर मिसरियों की कड़ी नज़र है। अभी तक हम फ़िरऔन की पहुँच में हैं। लेकिन अल्लाह ने इसराईलियों को नहीं छोड़ा था। दिन के वक़्त जब सूरज अपनी पूरी तमाज़त से उन पर चमकता तो उनको कोई नुक़सान नहीं पहुँचाता था। दिन को रब उन पर बादल का साया करता और रात को सफ़र करने के लिए आग के एक सतून की रौशनी देता था। बादल में रब की मौजूदगी बड़ी तसल्ली का बाइस थी। इससे हज़रत मूसा को एक ऐसे बाप की याद आती थी जो बड़ी ग़ैरत से अपने बच्चों की निगहबानी कर रहा हो। रब उनकी राहनुमाई भी करता, उन्हें रास्ता दिखाता था। जब कुछ लोग रास्ते के बारे में बुड़बुड़ाते तो हज़रत मूसा उन्हें तसल्ली देते कि रास्ता ग़लत नहीं बल्कि रब ने ख़ुद हमें इस रास्ते पर चलने को कहा है। फ़िकर मत करना कि सामने समुंदर की रुकावट है।

मिसर से निकलने के पाँचवें रोज़ सूरज के डूबते वक़्त इसराईलियों ने अचानक देखा कि मिसरी हमारा ताक़्क़ुब कर रहे हैं। मिसरी फ़ौज बड़ी सुरअत से तवील फ़ासला तय करने के बाद रेगिस्तानी पहाड़ियों

पर से चली आ रही थी। वहाँ से उनको बिलकुल नीचे समुंदर के किनारे इसराईलियों के ख़ैमे दिखाई दे रहे थे। उनको अपनी फ़तह का यक़ीन था।

यह देखकर इसराईली सख़्त घबरा गए। ख़ौफ़ के मारे वह रब को पुकारने लगे। हर तरफ़ से हज़रत मूसा पर इलज़ामात की बौछाड़ पड़ने लगी। "क्या मिसर में क़ब्रों की कमी थी कि आप हमें रेगिस्तान में ले आए हैं? हमें मिसर से निकालकर आपने हमारे साथ क्या किया है? क्या हमने मिसर में आपसे दरख़ास्त नहीं की थी कि मेहरबानी करके हमें छोड़ दें, हमें मिसरियों की ख़िदमत करने दें? यहाँ आकर रेगिस्तान में मर जाने की निसबत बेहतर होता कि हम मिसरियों के ग़ुलाम रहते।"[1]

उन साबिक़ निगरानों में से एक बड़े सख़्त लहजे में पुकार उठा, "यह रास्ता रब का चुना हुआ नहीं हो सकता। हम एक सर-फिरे आदमी के पीछे पीछे चल रहे हैं।" दुश्मन के रूबरू उनकी नज़रों में उस रब की जो उनको दिन में साया और रात को रौशनी देता था कोई हक़ीक़त न थी।

हज़रत मूसा का मामला इससे बिलकुल मुख़्तलिफ़ था। बेशक उन पर अवाम का ग़ुस्सा टूट पड़ा। लेकिन उन्होंने अल्लाह की वफ़ादारी पर भरोसा करना सीख लिया था, इसलिए वह जानते थे कि जो ख़ुदा हमको ऐसे चंगुल में फँसाने को ले जा रहा है वह हमको उसमें से बाहर भी निकालेगा। वह बिलकुल न घबराए बल्कि मुतलातिम समुंदर में ठोस

1 ख़ुरूज 14:11-12

चटान की तरह बोले, "मत घबराओ। आराम से खड़े रहो और देखो कि रब तुम्हें आज किस तरह बचाएगा। आज के बाद तुम इन मिसरियों को फिर कभी नहीं देखोगे। रब तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम्हें बस, चुप रहना है।"[1]

तब एक अजीब बात हुई। बादल का सतून जो कि हवा में तैर रहा था ज़मीन पर आकर ठहर गया और मिसरी ख़ैमागाह और इसराईली ख़ैमागाह के दरमियान दीवार बन गया। अब मिसरियों की जानिब तारीकी थी जबकि इसराईलियों की तरफ़ दिन की तरह रौशनी थी। पुर-ख़तर माहौल के बावुजूद इसराईलियों को रब की हुज़ूरी और हिफ़ाज़त का शदीद एहसास हुआ। इसी तरह रात आराम से बीत गई और मिसरी इसराईलियों के क़रीब न आ सके।

एक बार फिर हज़रत मूसा हक्का-बक्का रह गए कि गो रब हमारा साथ दे रहा है तो भी उसे कोई जल्दी नहीं। इस कामिल यक़ीन के साथ हज़रत मूसा ने अपना हाथ समुंदर की तरफ़ बढ़ा दिया तो आन की आन में मशरिक़ी हवा चलने लगी। इसराईलियों की आँखें हैरत से फैल गईं। रब एक बार फिर अपने लोगों को बचाने के लिए अपने ख़ादिम के वसीले से काम कर रहा था। उनके दहशतज़दा दिल अपने रब की मुहब्बत और उस पर ईमान से लबरेज़ हो गए। वह अपने आपको कोसने लगे कि हम रब के ख़ादिम मूसा पर किस तरह शक कर सकते थे? उनकी आँखों

1 ख़ुरूज 14:13-14

के ऐन सामने बहरे-क़ुलज़ुम में एक कुशादा रास्ता बन गया। उनके दाएँ और बाएँ तरफ़ लहरें शीशे की दीवारों की तरह खड़ी हुईं जो कि आग के सतून की रौशनी में जगमगा रही थीं।

और फिर यकदम जैसे भीड़ में जान पड़ गई। उनके राहनुमा के लबों से निकले हुए लफ़्ज़ सब तरफ़ फैल गए, "इसराईलियों से कहो कि वह आगे बढ़ें।" जो ज़्यादा जुर्रतमंद थे उन्होंने सहमे हुओं को साथ लेकर मिसर के इलाक़े को हमेशा के लिए ख़ैरबाद कहते हुए समुंदर को उबूर कर लिया। गो दुश्मन उनके सर पर सवार था फिर भी उनके दिल थम गए। रब उनका मुहाफ़िज़ और राहनुमा था। उनके लिए इतना ही काफ़ी था।

मिसरी लशकर जिसने तारीकी में रात बसर की थी अभी तक मुस्तैद था। उनकी तरफ़ से ज़रा-सी ला-परवाई उनके लिए मौत का परवाना हो सकती थी। उन्होंने दिल में ठान रखी थी कि हम इसराईलियों और उनके ख़ुदा पर फ़तह पाकर ही लौटेंगे। अचानक उन्हें कुछ फ़ासले से बहुत-से क़दमों की आवाज़ सुनाई दी।

लशकर का सालार ग़ौर से सुनने लगा, "क्या तुमने यह शोर सुना? इसराईलियों के ख़ैमे में कुछ हो रहा है।" तारीकी औसान भुला देनेवाली थी। वह गरज उठा, "आग को रौशन रखने की ज़िम्मेदारी किसकी है? सारी आग क्यों बुझ गई है?"

“आलीजाह! यह सब कुछ तूफ़ाने-बादबाराँ का किया-धरा है। हर चीज़ गीली हो गई है। अब नहीं चल सकती।” अभी वह दम बख़ुद होकर सब बातें ग़ौर से सुन रहे थे कि एक बादल के टुकड़े के पीछे से चाँद नमूदार हुआ और दूर समुंदर में बादल के सतून की मोटी दीवार साफ़ नज़र आने लगी।

सालार ग़ुस्से से गरजा, “इसराईली बचकर निकले जा रहे हैं। मिसर की सरज़मीन पर उनको पकड़ने का हमारे पास यह आख़िरी मौक़ा है।” इसराईलियों का ताक़्क़ुब करते हुए रथ समुंदरी रास्ते पर चढ़ दौड़े। उनके पीछे प्यादा लशकर आगे बढ़ने लगा। सालार की नज़रें बादल की दीवार पर जमी हुई थीं जिसके पीछे वह जानता था कि इसराईली आगे बढ़े जा रहे हैं। मिसरी लशकर बढ़ते बढ़ते उनके क़रीबतर आ पहुँचा था।

“जवानो! अपने देवताओं और बादशाह की ख़ातिर आगे बढ़ो। हम उनके सर पर सवार हैं। हम अभी उन्हें जा पकड़ेंगे।”

अचानक सब घबरा गए। सुबह-सवेरे ही रब ने बादल और आग के सतून से मिसर की फ़ौज पर निगाह की और उसमें अबतरी पैदा कर दी। उनके रथों के पहिये निकल गए तो उन पर क़ाबू पाना मुश्किल हो गया। यह देखकर मिसरी चिल्ला उठे, “आओ, हम इसराईलियों से भाग जाएँ, क्योंकि रब उनके साथ है। वही मिसर का मुक़ाबला कर रहा है।”[1] वह अपने देवताओं को मदद के लिए पुकारने लगे लेकिन

1 ख़ुरूज 14:25

उनकी फ़रियाद चिंघाड़ते तूफ़ान के शोर में दबकर रह गई। वह बेबस रहकर अपने रथों को समुंदर की नरम रेत में धँसते हुए देखते रहे। बच निकलना नामुमकिन हो गया था।

तब चारों तरफ़ चीख़ें बुलंद हुईं, "हाय, हाय! पानी का रेला आ रहा है!" उनके देखते देखते पानी में से रास्ता अचानक बंद हो गया। बड़ी बड़ी लहरें आपस में मिल गईं, और फ़ौजी अपने हथियारों समेत एकदम पानी में डूब मरे।

ख़ुश्क ज़मीन पर के इसराईली हुजूम को तो यह सब कुछ ख़ाब-सा लग रहा था। अब आख़िरकार वह अपने वतन की राह पर जा रहे थे। हर तरफ़ ख़ुशी के आँसू चमकते रहे, और लोग आपस में एक दूसरे से गले मिलने लगे। अमराम के बच्चों ने अल्लाह का शुक्र करते हुए अपने नेकसीरत वालिदैन को याद किया। दराज़क़द, पतले जिस्मवाला याकूब बाबा अपनी बीवी दबोरा के पास खड़ा रो पड़ा। उन्हें अपना बेटा रूबिन और उसकी बीवी याद आई जो जवानी में ख़ुदा को प्यारे हो गए थे। उन्हें वह ख़ौफ़नाक साल भी याद आया जब वह रूबिन के बेटे जाद को छुपाते फिरते थे। आँसुओं के परदे में से उन्होंने देखा कि जाद ने अपने बाज़ू अपनी बीवी मिलकाह और बच्चे के गिर्द हमायल किए हुए हैं। अल्लाह ने जाद को कितनी बरकत दी है। अब हमारे सामने मुस्तक़बिल रौशन है।

जब उन्होंने अपने दुश्मनों की लाशों को समुंदर के किनारे पड़ा हुआ देखा तो उन्हें यक़ीन नहीं आ रहा था कि ग़ुलामी से आज़ादी का लमहा आ पहुँचा है। क्या उन्हें एहसास हुआ था कि ताक़तवर दुश्मन के चंगुल से उनकी आज़ादी हज़रत मूसा के ईमान और दुआओं के जवाब में ख़ुदाए-क़ादिर का काम था? एक बात ज़रूर वाज़िह थी कि फ़तह के इस मौक़े पर इसराईली अल्लाह पर ईमान और हज़रत मूसा पर एतमाद रखे हुए थे। बिला-शुबहा इस वक़्त ख़ुदा का बंदा उनकी नज़रों में सरफ़राज़ था।

सहरा में

इसराईली फ़तह की ख़ुशी में कुछ देर और ठहरना चाहते थे, लेकिन अल्लाह ने उन्हें कूच का इशारा दे दिया। चलते चलते दिन गुज़रते गए और रास्ता ज़्यादा दुश्वार होता गया। अब फ़तह के गीत उनके होंटों से जाते रहे। हज़रत मूसा और हारून नौजवानों के साथ तेज़ी से आगे आगे चलते गए जबकि पीछे आनेवाले दूर दूर तक फैले आहिस्ता आहिस्ता आ रहे थे। औरतें, बच्चे और उम्ररसीदा लोग गधों पर बैठे थे जबकि कुछ बुज़ुर्ग और नौजवान मवेशियों को हाँक रहे थे। दूसरे लोग सामान से लदे गधों के साथ साथ चल रहे थे।

“अरे पालू!” तुला ने पुकारा। “मिसरी असला से आरास्ता हमारे सामनेवाले आदमी फ़ौज ही लग रहे हैं। है ना?”

पालू हँस पड़ा, “यार, तुम्हारी नज़र बड़ी तेज़ है कि मीलों दूर आदमियों को देख सकते हो।”

तुला अपनी छड़ी से दूर फ़ासले की तरफ़ इशारा करते हुए कहने लगा, "उनकी तलवारों को धूप में चमकते हुए देख रहे हो ना? जब से हमारे लोगों को मुरदे मिसरियों का सामान मिला है वह फ़ख़्र से फूले नहीं समाते।"

उसका दादा पोपले मुँह से हँसता हुआ बोला, "पहले अपने आपको पिछले दस्तों में तो वफ़ादार साबित करो। फिर अगले दस्तों में भी तरक़्क़ी मिल ही जाएगी। मैं ठीक कह रहा हूँ ना मरियम बीबी?"

मरियम बीबी ने ज़ोरदार छींक मारी, "तौबा यह मिट्टी! हमें तो ख़ुशी है कि पीछे हमारे साथ कुछ मर्द हैं जहाँ इतने ज़्यादा छोटे बच्चे और बूढ़े भी हैं। आशर बाबा! मैं कहती हूँ कि शूर के बयाबान में से गुज़रते हुए बड़ी हैरत हुई कि गो चरागाह अच्छी न थी तो भी रेवड़ों और मवेशियों को घास-फूस के अलावा झाड़ियों में मुँह मारने के लिए कुछ न कुछ मिल ही जाता था।"

एक पिंजरे में से मुर्ग़ ने बाँग दी, और बाबा की आवाज़ चंद बकरियों की आवाज़ में दबकर रह गई। "हमारा सबसे बड़ा मसला पानी की कमी होगा। आह! सफ़र के पहले तीन दिन तो बहुत ही ख़ौफ़नाक थे। लेकिन हमें गिला नहीं करना चाहिए। रब ने अपनी भलाई में हमारे लिए यही रास्ता चुना है। उसका एक एक क़दम उसकी मरज़ी के मुताबिक़ है।" उसने अपने बाज़ू बड़े ड्रामाई अंदाज़ में ऊपर उठाए और कहने लगा, "अल्लाह हमें तौफ़ीक़ दे कि फ़रमाँबरदार बच्चों की तरह उसके पीछे

पीछे चलें। मरियम बीबी, हमें किसी चीज़ से इनकार करेगा भला? रब ने कितने हैरतअंगेज़ तरीक़े से हमें मिसरियों से बचा लिया है!"

आशर ने गहरी साँस भरते हुए कहा, "अफ़सोस! हम अभी तक फ़तह के गीत ही गा रहे थे कि लोगों ने बुड़बुड़ाना शुरू कर दिया।"

तुला शिकायत करने लगा, "दादा जी, आप लोगों पर बहुत सख़्ती करते हैं। आप भूल जाते हैं कि पहले दिन हर एक कितनी बहादुरी से चला जा रहा था। सब अल्लाह की तारीफ़ कर रहे थे और इस बात को याद कर रहे थे कि किस तरह रब ने इसराईलियों की नजात के लिए समुंदर में से रास्ता बनाया था।"

आशर बाबा ने तंज़न कहा, "हाँ, हाँ! जब तक लोगों के पास खाने-पीने का काफ़ी सामान था तब तक वह गीत भी गाते और अल्लाह की तारीफ़ भी करते थे, लेकिन जैसे ही पानी न मिला वह हज़रत मूसा के ख़िलाफ़ हो गए जिनकी मारिफ़त अल्लाह ने हमें रिहाई दिलाई है। मुझे डर लगता है कि लोगों को अपने पेट की ज़्यादा और ख़ुदा की कम फ़िकर है।"

"लेकिन दादा जी! क्या भूल गए दूसरे दिन हम किस तरह पहाड़ी इलाक़े से गुज़रे? पहाड़ों के दरमियान का मैदान चूने के पत्थर का था। उस पर चलते हुए पैर जल गए। सारे दिन तेज़ रौशनी में चलते हुए आँखें बुरी तरह जला करती थीं।"

पालू ने इज़ाफ़ा किया, "कोई नख़लिस्तान भी नहीं था। गर्द-आलूद वीराने में कोई आराम मुयस्सर न आया। बाबा जी, दिन-भर की अज़ियत के बाद हम टिमटिमाते सितारों के नीचे गठड़ी बनकर रह गए। हम ठंड के लिए अल्लाह का शुक्र करते हुए सो गए। हमने सोचा कि आनेवाला दिन बेहतर होगा।" उसने एक क़हक़हा लगाया। "लेकिन दूसरे दिन तो फ़तह के सारे नग़मे भी भूल गए। बच्चे पानी के लिए बिलबिलाने लगे। यह देखकर उनकी माएँ रो ही पड़ीं। मवेशी भी निढाल हो गए। बकरियाँ क़ाबिले-रहम हालत में मिमियाने लगीं। मेरा अपना हलक़ ख़ुश्क हो गया और होंटों पर पपड़ियाँ जम गईं।"

उसकी आँखों में शरारत नाचने लगी। "जब तीसरे दिन उफ़ुक़ पर हरियाली नज़र आई तो हर एक ख़ुशी से पागल हुआ जा रहा था।" पालू हँसने लगा। "जब हम उस जगह पहुँचे तो एक जोहड़ मिला। पानी से भरे हुए कुएं भी थे। मवेशियों और लोगों ने क्या दौड़ लगाई। लेकिन जब पीने लगे आख़-थू—" वह हँसने लगा। "वह पानी इतना कड़वा था कि सबने घूँट भरते ही थूक दिया।"

बाबा जी हाँ में सर हिलाते हुए बोले, "हम ऐसे लोगों को जो दरियाए-नील का पानी चख चुके थे तो उस पानी से घिन आई।"

"बाबा जी! ऐसे में मायूस हो जाना तो फ़ितरी बात थी।"

"बेटा जी! लेकिन आख़िर हज़रत मूसा की मुख़ालफ़त क्यों? वह भी तो हमारी तरह बेबस ही हैं। जो ख़ुदा हमें मिसर से बाहर निकाल

लाया है वही हमारा ज़िम्मेदार है। अगर फ़िरऔन ऐसा शैतानी इनसान हमें कोड़ों की अज़ियत देने के बावुजूद ख़ुराक मुहैया करना जानता था तो फिर हमारा वफ़ादार ख़ुदा क्या हमारे लिए ख़ुराक मुहैया नहीं करेगा? क्यों बच्चे? और ज़रा देखो वह कितने ख़ुलूस से हमारा ख़याल करता है। हमारे आगे आगे चलता है। दिन के दौरान साया और रात को रौशनी मुहैया करता है। जब पानी का मसला पैदा हुआ तो रब ने हज़रत मूसा को हुक्म दिया कि वह एक ख़ास दरख़्त की लकड़ी पानी में फेंक दें ताकि पानी की कड़वाहट ख़त्म हो जाए।"

मरियम बीबी ने हाँ में सर हिला दिया। "बाद में पानी कितना मीठा और साफ़-शफ़्फ़ाफ़ हो गया। सबने अपनी प्यास बुझा ली और सफ़र के लिए अपनी मशकें भी भर लीं। तुम्हें अभी तक वह पैग़ाम याद है ना जो रब ने उस वक़्त हज़रत मूसा की मारिफ़त दिया?"

आशर बाबा काँपती हुई आवाज़ में पुकार उठे, "रब ने हम पर अपना एक नया नाम ज़ाहिर किया, वह हमारा शाफ़ी है। उसने फ़रमाया है, 'मैं रब हूँ जो तुझे शफ़ा देता हूँ।'[1] उस वक़्त हज़रत मूसा ने अपनी लाठी उठाकर कहा, 'उस पेड़ की लकड़ी ने नहीं बल्कि क़ादिरे-मुतलक़ ने पानी को अच्छा किया है। रब ने उसकी कड़वाहट निकाल दी है।'"

लोगों को एलीम पर आख़िरी पड़ाव की ख़ास याद थी जहाँ पानी के 12 चश्मे और खजूर के 70 दरख़्त थे। वहाँ वह कितने ताज़ादम

1 ख़ुरूज 15:26

हुए। बच्चे राहतबख़्श पानी में नहाने लगे। औरतों को तो कपड़े धोने का सुनहरी मौक़ा हाथ लगा। बच्चे इधर-उधर घूमने-फिरने खेलने-कूदने लगे। यहाँ तक कि लोगों ने मुरग़ियों को भी पिंजरों से निकलने दिया। एक बार फिर उन्हें ज़िंदगी का लुत्फ़ मिला। वहाँ उन्होंने खाने के उन ज़ख़ाइर को इस्तेमाल किया जो उन्होंने अब तक बचाए रखे थे।

खजूर के उन दरख़्तों के साय तले एक बार फिर फ़तह के नग़मे गाए गए। क़ादिरे-मुतलक़ के वह तमाम अजायब जो कि उसने मिसर और रास्ते में उनको दिखाए थे, उनका बार बार ज़िक्र होता गया। जब वहाँ से कूच करना पड़ा तो वह बड़ी बेदिली से अपने ख़ैमे उखाड़कर बादल के सतून के पीछे चल पड़े। मुसाफ़िरों ने ठंडी आह भरी। क्या रब पर इतना अंधा एतमाद करना चाहिए कि उसकी हर बात पर अमल किया जाए? क्या नख़लिस्तान में इस पड़ाव की मुद्दत कुछ और बढ़ाई नहीं जा सकती थी?

एलीम के नख़लिस्तान से इसराईलियों को सीन के बयाबान में ले जाया गया। सहरा की गरम हवा मुसाफ़िरों के जिस्मों पर गरम गरम तीरों की तरह चुभने लगी। जब हदे-निगाह तक वीराना ही वीराना नज़र आया तो बीबी मरियम का दिल भी डूब गया। सीन का बयाबान पथरीला था। उसमें से चलना औरतों और बच्चों के लिए मुश्किल था। अब वह तीन दिन से इस ख़ौफ़नाक बयाबान में सफ़र कर रहे थे। रेवड़ भूक और प्यास से तड़प रहे थे। आशर के लिए उन्हें सब्र से आगे चलाना मुश्किल

हो रहा था। “रब हमारे आगे आगे जा रहा है,” वह ख़ुद से कहता रहता था। “वह जल्द ही हमें जो कुछ दरकार है मुहैया करेगा।”

लेकिन तुला ज़मीन पर पाँव पटख़कर कहने लगा, “दादा जी, मैं तो हिम्मत हार चुका हूँ। बहुत ज़्यादा थक गया हूँ। और यह ढीठ भेड़ें एक क़दम भी आगे जाने को तैयार नहीं हैं। उन्होंने तो लेट जाने की ठान ली है। मुझे लगता है कि मैं भी उनकी तरह ही करूँ।” आँसुओं से उसकी आँखें चमकने लगीं।

“बेटे तुला!” आशर बाबा ने उसे ग़ौर से देखते हुए कहा। “अगर तुम रब के अच्छे सिपाही बनना चाहते हो तो तुम्हें अभी से तरबियत शुरू कर देनी चाहिए। सिपाही अपने सरदार का हुक्म पूछे बग़ैर करता है। उसे धूप हो या बारिश, हर हाल में आगे बढ़ना पड़ता है। दलदलों में से गुज़रना पड़े या पहाड़ पर चढ़ाई करना पड़े, भूका रहना पड़े या प्यासा, बढ़ते ही जाना जाता होता है। इन औरतों और बच्चों का असर क़बूल न करना। वह तो अब तक ग़ुलामों की-सी हरकतें कर रहे हैं। अभी भी मशकीज़ों में कुछ पानी बाक़ी है और खाना भी बचा हुआ है। इस वक़्त मवेशी ही सबसे ज़्यादा तकलीफ़ में हैं।”

आशर को बहुत ख़ुशी हुई जब तुला ने उसकी बात मानकर अपने ऊपर क़ाबू पा लिया और दुबारा भेड़ों की देख-भाल करने लगा। तो भी अवाम में बग़ावत के रुझान से माहौल बोझल हो रहा था। गधों पर बैठे

हुए बच्चे बेसब्र हो रहे थे। माएँ उन्हें बहलातीं या फिर बुरा-भला कहतीं और मिन्नत-समाजत करतीं कि थोड़ी देर और सब्र करो।

तीसरी बार सेहतमंद लियाह ने खाने की टोकरी को टटोला, "देखो सारा जानी! रोटी का बस यह छोटा-सा टुकड़ा ही बचा है।" उसकी बेटी चिल्ला उठी, "अम्मी जी मुझे प्यास लगी है।"

बेचारी लियाह अंदर ही अंदर खौल रही थी। उसके सब्र का पैमाना लबरेज़ हो चुका था। वह फट पड़ी, "काश हम इस सफ़र पर रवाना ही न हुए होते! इस ख़ौफ़नाक बयाबान में हमारा ज़िम्मेदार कौन है? हमारे बच्चों की फ़िकर किसे है?"

लियाह के गिर्द जमा औरतों के आँसू जो काफ़ी देर से रुके हुए थे टप-टप गिरने लगे। नौजवान रिबक़ा सिसकियाँ भरते हुए बोली, "मुझे मिसर बहुत याद आ रहा है। जब हम बड़ी-सी देगची में गोश्त पकाया करते थे तो हमारा घर कितना महक जाता था । और वह लज़ीज़ मीठा और ठंडा दरियाए-नील का पानी जो हम पिया करते थे। आह! मिसर!"

याक़ूब बाबा मवेशी चरा रहे और अपने ख़ानदान की देख-भाल कर रहे थे। अब वह एक खा जानेवाली निगाह उन पर डालते हुए रुक गए। "लगता है तुम सब जिस मिसर से हम आए हैं उससे किसी मुख़्तलिफ़ मिसर से आए हो। मेरा बेटा और बहू ऐन शबाब में वहाँ मारे गए। यह तो अल्लाह का बड़ा करम है कि उनका इकलौता बेटा आगे की सफ़ में बढ़ा चला जा रहा है। हम तो ऐसे किसी लज़ीज़ खाने के बारे में नहीं

जानते जिसके तुमने इतने ज़्यादा मज़े लिए हैं। हमारा तो रोज़ का कूटा नमकीन आँसू और आहें हुआ करता था। हमारा तो मिसर में जाने को बिलकुल जी नहीं चाहता।" उनकी बीवी ने उनकी ताईद में सर हिलाया।

मरियम बीबी और हज़रत हारून की बीवी माओं की मदद किया करती थीं। वह उनको तसल्ली देतीं और बच्चों को सँभालने में उनका हाथ बटाती थीं। वह उनको याद दिलाया करती थीं कि एलीम में अच्छा खाना खाए उन्हें अभी ज़्यादा अरसा नहीं गुज़रा। रब यक़ीनन खाना मुहैया करेगा।

आशर बाबा याक़ूब को इतनी मुसबत बातें करते सुनकर बहुत ख़ुश हुआ। जब अवाम का बुड़बुड़ाना बंद न हुआ तो उन्होंने अपने इर्दगिर्द के लोगों को ताकीद करते हुए कहा, "अब तक तुम्हारी ग़ुलामों की-सी ज़हनियत है। याद रखो कि तुम अब आज़ाद हो। क्या तुम इसकी क़दर नहीं कर सकते। अब तुम्हें आज़ाद लोगों के तौर-तरीक़े सीखने हैं। खाना ही सब कुछ नहीं होता। रब हमारी ज़िंदगियों का मरकज़ और ख़ुशी बनना चाहता है, ख़ाह हमारे पास खाना हो या न हो। वह हमें ख़ुद अपने मुनासिब वक़्त पर सब कुछ मुहैया करेगा। उस पर भरोसा रखो।" आशर बाबा की आवाज़ इर्दगिर्द के लोगों के चीख़ने चिंघाड़ने और झगड़ने में दबकर रह गई।

तीसरे दिन की शाम ढलते ही वह एक पथरीली वादी में आ पहुँचे। ज़्यादातर लोग थके-माँदे और चिड़चिड़े होकर अपनी गठड़ियों के पास

ही ढेर हो गए। लेकिन लियाह को यों लुढ़कने से पहले अपने शौहर से बहुत कुछ कहना था, "सल्लू के अब्बा, मैं इससे ज़्यादा अब बरदाश्त नहीं कर सकती। इस बयाबान में न पानी है न गोश्त। और है क्या गरमी, पसीना। बच्चे तो पागल हुए जा रहे हैं। तुम मर्द ख़ुद तो आगे आगे चलते हो और हम औरतों को उनके साथ निपटने को छोड़ जाते हो। देखो तो सारा को फिर ज़िद का दौरा पड़ा है।"

इस तरह से वह मुसाफ़िर एक दूसरे का मूड ख़राब करने में लगे रहे कि आख़िर में ख़ैमाबस्ती से आहो-ज़ारी की आवाज़ें बुलंद होने लगीं। "मूसा और हारून हमें इस बयाबान में मार देने के ख़तरनाक इरादे से लेकर आए हैं।"

मरियम बीबी ने देखा कि लोग छोटे छोटे गुरोहों में बटे बड़े ज़ोर-शोर से सूरते-हाल पर तबसिरा कर रहे हैं। उनका दिल धक से रह गया। क्या ग़ुस्से में बिफरा हुआ यह हुजूम उनके भाइयों को संगसार कर देगा? बीबी मरियम का दिल ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा। वह आदमी तो वहशी हुए जा रहे थे। हुजूम ने बुरी तरह से उनके भाइयों को घेर रखा था। उनसे न देखा गया। इस ख़ौफ़नाक मंज़र से आँखें हटाकर उन्होंने अपनी नज़रें बादल के सतून पर गाड़ दीं। फ़ौरन उनका दिल इतमीनान से भर गया।

उधर लोगों ने चीख़ चीख़कर आसमान सर पर उठा लिया, "काश रब हमें मिसर में ही मार डालता! वहाँ हम कम अज़ कम जी भरकर

गोश्त और रोटी तो खा सकते थे। आप हमें सिर्फ़ इसलिए रेगिस्तान में ले आए हैं कि हम सब भूके मर जाएँ।”[1]

बीबी मरियम को अपने कानों पर यक़ीन नहीं आ रहा था। कैसी बग़ावत थी! क्या यही वह लोग थे जिन्हें ख़ुदा मेरे लोग कहा करता था? रब से उनकी मुहब्बत कहाँ गई?

जब यह सब कुछ हो रहा था तो हज़रत मूसा दिल-ही-दिल में रब से फ़रियाद कर रहे थे। फिर वह हज़रत हारून से मुख़ातिब होकर बोले, “इसराईलियों को बताना, ‘रब के सामने हाज़िर हो जाओ, क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं।’”[2]

हज़रत हारून सारी जमात से बातें कर ही रहे थे कि एकाएकी लोगों की तवज्जुह पलटी। उन्होंने नज़र उठाकर बयाबान की तरफ़ देखा तो भौंचक्के-से रह गए। रब का जलाल वहाँ बादल में आ ठहरा। रब के रूह ने उनके दिलों को छू दिया, और वह फ़ौरन समझ गए कि हमारा ख़ुदा हर चीज़ मुहैया कर सकता है। वह मुहैया करेगा और वह अपने वादे और ज़रूरत के मुताबिक़ मुहैया करता है। अल्लाह की हुज़ूरी ने सारी बुड़बुड़ाहट ख़त्म कर दी और सब अंदेशे दूर हो गए। हज़रत मूसा ने एक बार फिर विज़ाहत करते हुए फ़रमाया, “आज जब सूरज ग़ुरूब

1 ख़ुरूज 16:3
2 ख़ुरूज 16:9

होने लगेगा तो तुम गोश्त खाओगे और कल सुबह पेट भरकर रोटी। फिर तुम जान लोगे कि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।"[1]

अब लोग पुरउम्मीद होकर भरपूर तवक़्क़ो से इंतज़ार करने लगे। उनकी निगाहें सूरज का ताक़्क़ुब करती रहीं जो धीरे धीरे पहाड़ों के पीछे ओझल हो रहा था। अब उनकी आँखें पहाड़ की दमकती चोटी पर जम गईं। अचानक बहुत-से परों के फड़फड़ाने की आवाज़ सुनाई दी। बटेरों के झुंड के झुंड पहाड़ की तरफ़ आ उतरे। वह परिंदे इतने निढाल थे कि देखते ही देखते वह इसराईलियों के सामने ज़मीन पर आ गिरे। "देखो देखो, रब की तरफ़ से गोश्त आया है।" लोग मोटे-ताज़े बटेरों को जमा करते गए और साथ साथ ख़ुशी से पागल होकर हँसने और बातें करने लगे। फिर आन की आन में सारी ख़ैमाबस्ती बटेरों के भूनने और पकाने की ललचा देनेवाली ख़ुशबू से महक उठी।

बाबा याक़ूब ने हाथ-मुँह साफ़ करते हुए कहा, "जाद बेटा! फ़लस्तीन में ख़ुदा की क़ुरबत और शानदार ज़िंदगी हमारी राह देख रही है। आह! काश अपने वतन जाते हुए तुम्हारे माँ-बाप भी हमारे साथ होते।"

इस बार तो सब अपने रब से पूरी तरह मुतमइन होकर बिस्तरों में दबक गए। यहाँ तक कि लियाह मुसकराकर अपने शौहर से कहने लगी, "कल हमें रोटी मिलेगी। आसमान से रोटी उतरेगी! कैसा मज़ा होगा भला इसका!"

---

1 ख़ुरूज 16:12

सारी ख़ैमाबस्ती पर गहरी ख़ामोशी तारी थी। हज़रत मूसा और जवानी के जोश से मामूर हज़रत यशुअ तारों भरे आसमान के नीचे महवे-गुफ़्तगू थे। हज़रत मूसा हमेशा उन्हें अपने क़रीब रखते थे। लमहे-भर की ख़ामोशी के बाद यशुअ ने कहा, "आज का दिन तो बड़े ही हैरतअंगेज़ अंदाज़ में ढला। मैं तो समझ रहा था कि यह लोग आप दोनों को जान से ही मार डालेंगे। क्या अल्लाह उसी वक़्त इसराईलियों को खाना मुहैया करके इस सारी मुसीबत से नहीं बचा सकता था? ग़ुस्से में इतना ज़्यादा उनके बिफरने का उसने इंतज़ार क्यों किया?"

पहले तो हज़रत मूसा ने जवाब न दिया। आख़िरकार जब उन्होंने धीरे धीरे ज़बान खोली तो यों लगा जैसे बड़े मुहतात अंदाज़ में हर बोल को तोलकर बोल रहे हों। "इसराईलियों को यह सीखना है कि अल्लाह उनके लिए नहीं बल्कि वह ख़ुदा के लिए जी रहे हैं। उनकी मिसाल एक जंगली गधे की-सी है जिसे सिधाने की ज़रूरत है। अब तक वह सिर्फ़ अपनी मनमानी करते रहे हैं और अब जबकि रब ने उनको अपने हाथों में ले लिया है, अब जहाँ वह चाहेगा उनको ले जाएगा। वह उनके लिए ख़ुद खाना भी अपनी पसंद का मुहैया करेगा और जब मुनासिब होगा देगा। अगला मरहला यह है कि वह ख़ुदा के हुक्मों पर अमल करना सीखें। अभी तक इसराईलियों को इस बात का अंदाज़ा ही नहीं है कि वह कितने ख़ुशक़िसमत हैं कि अल्लाह ने उन्हें चुनकर अपनी चुनी हुई उम्मत बना लिया है। ख़ुदा को जानना और उसके साथ चलना ही ज़िंदगी

है। ऐ बेटे! अल्लाह का मुझको अपना जलवा दिखाना ही मेरी ज़िंदगी का बेहतरीन वाक़िया था। रोज़ बरोज़ मैं ख़ुदा को बेहतर तौर पर जानने लगा हूँ। अब मैं उसे पहले से भी ज़्यादा प्यार करता हूँ, क्योंकि वह सरासर मुहब्बत और शफ़क़त है। मैंने बड़ी ख़ुशी से अपनी क़ौम का बोझ अपने कंधों पर लिया है। मैं उन्हें दिल की गहराइयों से प्यार करता हूँ, और मेरी दिली आरज़ू यह है कि वह भी अपने रब और नजातदहिंदा से प्यार करें।"

अगली सुबह सूरज अपनी पूरी आबो-ताब के साथ पहाड़ों की चोटियों पर नमूदार हुआ। जब लोग नींद से बेदार हुए तो उन्होंने उस पथरीली ज़मीन को धनिये के दाने के बराबर छोटी छोटी गोल चीज़ से ढका हुआ पाया जो सूरज की रौशनी में दमक रही थी। मर्द, औरतें और बच्चे उसको अपने हाथों में लेते हुए एक दूसरे से पूछने लगे, "यह क्या है?"

हज़रत मूसा ने उनको समझाते हुए कहा, "यह वह रोटी है जो रब ने तुम्हें खाने के लिए दी है। रब का हुक्म है कि हर एक उतना जमा करे जितना उसके ख़ानदान को ज़रूरत हो। अपने ख़ानदान के हर फ़रद के लिए दो लिटर जमा करो।"[1]

इसराईलियों ने उस आसमानी रोटी का नाम "मन" रखा। लोगों की आँखें लालच से चमकने लगीं। इतना लज़ीज़ खाना और इतना ज़्यादा! लियाह अपनी बेटियों से कहने लगी, "फ़ौरन काम में लग

1 ख़ुरूज 16:15-16

जाओ। मौक़ा है कि ज़रूरत के वक़्त के लिए खाना जमा कर लें। फिर जाने कब अल्लाह यों रोटी बरसाए।"

"अम्मी जी, बुज़ुर्गों ने अभी अभी हमें इससे ज़्यादा जमा करने से मना किया है। यह रब की रोटी है। उन्होंने कहा है, 'अल्लाह ने तुम्हें सिर्फ़ दो लिटर भर लेने को कहा है और वह चाहता है कि तुम उसका हुक्म मानना सीखो।'"

लियाह बड़ी ज़िद्दी औरत थी। वह इस बात पर अड़ी रही, "जिसको मेरा हाथ लगे वह मेरा है।" हैरत की बात तो यह हुई कि जब मन को नापा गया तो वह पूरे 2 लिटर फ़ी कस ही था। हज़रत मूसा मुसकराकर बोले, "अल्लाह जानता है कि तुम्हारे लिए क्या कुछ काफ़ी है।" लियाह अंदर ही अंदर भुना कर रह गई और सख़्ती से कहने लगी, "बच्चो! अगर यह बात है तो फिर हम सारा खाना एक वक़्त में नहीं खाएँगे बल्कि कल के लिए कुछ बचा लेंगे। कौन जाने अगर ख़ुदा हमसे नाराज़ हो गया तो वह हमारे लिए मन को रोक ले।"

एक बच्चे के दिल में ख़याल आया कि जाकर चुपके से थोड़ा-सा मन और जमा कर ले। लेकिन अफ़सोस, सूरज ने सब कुछ पिघला दिया। अगली सुबह लियाह की आँखें यह देखकर फटी की फटी रह गईं कि जो मन उसने बचाकर रखा था उसमें कीड़े पड़ गए हैं, और उससे सख़्त बदबू निकल रही है।

छटे रोज़ एक और अजीब वाक़िया हुआ। जो मन उन्होंने जमा किया था वह मामूल से दुगुना था। जब वह इसके बारे में हैरतज़दा हुए तो हज़रत मूसा ने लोगों को बताया, "फ़िकर न करो। आज तुम जो तनूर में पकाना चाहते हो पका लो और जो उबालना चाहते हो उबाल लो। जो बच जाए उसे कल के लिए महफ़ूज़ रखो।"[1] हज़रत मूसा की आँखें जज़बात से चमक रही थीं। अल्लाह अपने लोगों को समझा रहा था कि उनको जिस्मानी ख़ुराक से बढ़कर भी कुछ दरकार है। उन्हें एक दिन के आराम की ज़रूरत है ताकि वह अपने रब की रहमत के बारे में सोचें और इसके लिए उसकी तारीफ़ करें।

लेकिन लियाह के दिल में बहुत-से ख़दशात सर उठाने लगे। "मुझे पता है कि कल तक पहले की तरह हर चीज़ सड़-गल जाएगी।" लेकिन उसकी हैरत की इंतहा न रही जब उसने अगली सुबह देखा कि बचा हुआ खाना वैसा ही ताज़ा है। नाश्ता करते वक़्त लियाह को एक और तजवीज़ सूझी। वह अपनी बेटियों से कहने लगी, "लड़कियो! हज़रत मूसा ने हमें सबत के दिन मन बटोरने से मना किया है। लेकिन तुम चुपके से खिसक जाओ और देखो कि कुछ मिलता है कि नहीं।" लेकिन लड़कियाँ ख़ाली हाथ लौट आईं।

कुछ देर बाद हज़रत मूसा ने ख़ैमाबस्ती पर नज़र दौड़ाई और सुख का साँस लिया। ख़ुदा ख़ुदा करके वह लोग हुक्म की तामील करते हुए

---

1 ख़ुरूज 16:23

आराम कर रहे थे। इन साबिक़ ग़ुलामों के लिए यह छोटा-सा हुक्म मानना भी बहुत मुश्किल था। उनकी तरबियत के लिए अभी अल्लाह को बहुत ज़्यादा सब्र से काम लेना था। उन्हें ख़ुदा की मरज़ी के मुताबिक़ ढालने के लिए ख़ुद हज़रत मूसा को उनकी मदद करना थी।

ख़ौफ़नाक दुश्मन

एक सुबह एक तेज़रफ़्तार ऊँटसवार अमालीक़ी क़बीले के सरदार के ख़ैमे पर पहुँचा। उसे बिला-ताख़ीर सरदार के हुज़ूर पेश कर दिया गया। भारी-भरकम सरदार अपने कमरे में नरम गद्दे पर दराज़ था। एक नौउम्र कनीज़ पास खड़ी उसकी मोटी-सी गरदन पर मालिश कर रही थी।

“जय-तूर! उम्मीद है तुम कोई अच्छी ख़बर लाए हो,” सरदार ने अपने फूले हुए पेट पर हाथ फेरते हुए कहा। “कहो हम भी तो सुनें क्या ख़बर लाए हो। यह ग़ुलाम अपने मिसरी ख़ज़ानों समेत कहाँ तक पहुँचे हैं?” फिर वह बड़े ड्रामाई अंदाज़ में दोनों बाज़ू आसमान की तरफ़ उठाते हुए कहने लगा, “ढेरों लोग अपने रेवड़ों के साथ मेरे पीने के पानी को गंदा करते और उनके जानवर मेरी चरागाहों में चरते रहते हैं। यह मेरे अच्छे नख़लिस्तान में सब्ज़े को टिड्डी दल की तरह हड़प कर रहे हैं। कुछ एलीम से बाक़ी बचा क्या?”

“इसराईली रफ़ीदीम की तरफ़ बढ़ रहे हैं जहाँ बिलकुल पानी नहीं है। वह बहुत थके-माँदे और प्यासे हो रहे हैं। जनाब! अब मौक़ा है। अब हमको जल्द कुछ कर लेना चाहिए। जब तक हमारा लशकर जमा होता है हमें इन मुसाफ़िरों को हिरासाँ करते रहना होगा,” उसने जवाब दिया।

अमालीक़ ने अपनी मोटी मोटी उँगलियों के सिरे आपस में मिलाते हुए कहा, “इसमाईली और लूत की औलाद ने हमारे लशकर में शामिल होने से इनकार कर दिया है। वह उनके ख़ुदा से डरते हैं जिसने इसराईलियों के सामने बहरे-क़ुलज़ुम को दो हिस्से कर दिया था और जो उनको बयाबान में भी ख़ुराक मुहैया करता है। वह यह उज़्र भी पेश करते हैं कि इसराईलियों से हमारा रिश्ता है और ख़ानदानी अहद का एहतराम करना हमारा फ़र्ज़ है।” उसकी आँखें चमक उठीं। “चलो, इसमें हमारा फ़ायदा है। वह लूट के माल से महरूम रहेंगे। मेरे अज़ीज़ जय-तूर, मेरा नाम अमालीक़ है। मैं उनके ख़ुदा से नहीं डरता। मैं उसका डटकर मुक़ाबला करूँगा। यह कैसा रब है जो अपने लोगों को भूक और प्यास से अध-मुआ छोड़ देता है? मैं इस तवह्हुम-परस्त फ़िरऔन को दिखा दूँगा कि जुर्रत किसे कहते हैं। मैं इसराईलियों के ख़ुदा से नहीं डरता। मुझे किसी ख़ुदा की ज़रूरत नहीं है।” अमालीक़ ने ताली बजाते हुए गरजकर पुकारा, “ज़ीरा, कुछ खाने-पीने के लिए लाओ! कहाँ मर गया कमबख़्त?”

एक ग़ुलाम दबे पाँव अंदर आया। उसकी छोटी छोटी आँखें साँप की तरह चमक रही थीं। “जी हुज़ूर, बंदा हाज़िर है।”

“तो तुम परदे के पीछे से हमारी बातें सुन रहे थे। कमबख़्त, मैं तुम्हारी खड़े खड़े खाल खींच लूँगा। जल्दी करो, हमारे खाने के लिए कुछ लेकर आओ।”

ख़ैमे की दीवार के पीछे से देगचियों की खड़खड़ाहट में किसी ख़ातून की करख़्त आवाज़ सुनाई दे रही थी। रोटियाँ पकाने और मज़ेदार खानों की ख़ुशबू आ रही थी। दोनों खाने में लग गए तो सरदार ने ज़ोर से अपने घुटनों पर हाथ मारते हुए कहा, “हम इस तरह करेंगे। हम उनके पीछे हलके असला से लैस दस्ते अपने तेज़रफ़्तार ऊँटों पर भेजेंगे जो उनका रास्ता काट लेंगे। वह उनका सामान लूट लेंगे और उनका हर मुमकिन नुक़सान करेंगे। उनमें से जितने भी मारे जाएँ उतना ही अच्छा है। न तो मुझे इसराईलियों का कोई फ़ायदा है और न उनके ख़ुदा ही का। उनका ख़ातमा जितनी जल्दी हो जाए उतना ही अच्छा है। मैं उनके ख़ुदा को दिखा दूँगा कि यहाँ का मालिक कौन है।”

उसने अपने छल्लों से भरे हाथ ऊपर उठाए, “जब तुम लोग उनको ख़ौफ़ज़दा करोगे तो उस वक़्त लशकर असल लड़ाई के लिए तैयार हो जाएगा। देर न करो। वह डर के मारे प्यासे और भूके ग़ुलाम हैं। इसके अलावा उन्हें अभी अपना दिफ़ा करना भी नहीं आता। ज़ाहिर है हमारे

लिए तो यह एक मामूली-सा काम होगा। समझो मिसरियों का ख़ज़ाना अपनी मुट्ठी में है।”

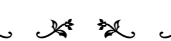

हज़रत मूसा इन दुश्मनों के ख़तरे से बा-ख़बर थे। रफ़ीदीम की तरफ़ बढ़ते वक़्त वह सोच रहे थे कि अल्लाह हमको इस जगह क्यों ले आया है जहाँ बिलकुल ही पानी नहीं है? वह जितना आगे बढ़ते जाते थे उतना ही मुसाफ़िरों की बुड़बुड़ाहट बढ़ते बढ़ते एक ही मुतालबे पर ख़त्म होती थी, “पानी! हमें पानी चाहिए।” नन्हे बच्चे फूलों की तरह मुरझा गए थे। माएँ मातम कर रही थीं और रेवड़ तो बेहाल हो गए थे।

हज़रत यशुअ और दीगर जवानों ने चप्पा-चप्पा छान मारा लेकिन पानी न मिला। रहमदिल हज़रत मूसा भी उनके साथ अज़ियत उठा रहे थे। मुसाफ़िरों का पहला जत्था अभी रफ़ीदीम में पहुँचा ही था कि कोई ज़ोर से पुकार उठा, “पानी न होने की वजह से मेरा सारा जिस्म जल रहा है। यह आग दिमाग़ तक पहुँच रही है। मेरा सारा ख़ून बुख़ार से सुलग रहा है। अल्लाह की शफ़क़त कहाँ है? उसने हमें इतना दुख क्यों दे रखा है?”

एक औरत दीवाना हालत में अपने बाल नोच नोचकर चिल्ला उठी, “क्या कोई ख़ुदा उन लोगों को जिनसे वह प्यार करता है इस क़िस्म के हालात का शिकार होने दे सकता है?”

एक और फट पड़ा, “मैं तो इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि रब हमारे साथ नहीं है। वह कहाँ है?”

फिर चारों तरफ़ से करख़्त आवाज़ें आने लगीं कि अल्लाह ने हमें छोड़ दिया है।

फिर आशर बाबा पुकार उठा, “सुनो! तुम इसलिए मायूस हो कि रब तुम्हारी अपनी तवक़्क़ो के मुताबिक़ अमल नहीं करता। हम ख़ुदाए-क़ादिर को बतानेवाले कौन होते हैं कि वह क्या करे? मैं तुम्हें बताता हूँ कि हमारे साथ ऐसा होने में भी इसका कोई अच्छा मक़सद होता है। ऐसा मत कहो कि अल्लाह ने हमें छोड़ दिया है।”

जल्द ही हज़रत मूसा के गिर्द एक मुश्तइल हुजूम जमा हो गया। वह इस हक़ीक़त को नज़रंदाज़ कर रहे थे कि बादल में अल्लाह ही उन की राहनुमाई कर रहा था।

“हमें पीने के लिए पानी दे,” वह मुँह बिगाड़कर चिल्लाने लगे। “वरना हम सब हलाक हो जाएँगे।”

हज़रत मूसा का हलक़ भी ख़ुश्क हो रहा था। उन्होंने करख़्त आवाज़ में कहा, “तुम मुझसे क्यों झगड़ रहे हो?” क्या वह ख़ुद भी उनकी तरह मुसाफ़िर न थे जो कि रब के पीछे चलते हुए प्यास की अज़ियत और भूक की तकलीफ़ बरदाश्त कर रहे थे? वह कहने लगे, “रब को क्यों आज़मा रहे हो?”[1]

1 ख़ुरूज 17:2

हुजूम चिल्ला उठा, “आप हमें मिसर से क्यों लाए हैं? क्या इसलिए कि हम अपने बच्चों और रेवड़ों समेत प्यासे मर जाएँ?”[1]

हज़रत मूसा का ईमान मज़बूत था, इसलिए उन्होंने उस हस्ती से रुजू किया जिसके बारे में वह जानते थे कि वह अपनी उम्मत की हमदर्द है और हमेशा उनकी सुनने को तैयार रहती है। उन्होंने फ़रियाद की, “मैं इन लोगों के साथ क्या करूँ? हालात ज़रा भी और बिगड़ जाएँ तो वह मुझे संगसार कर देंगे।”[2]

अल्लाह का जवाब फ़ौरन नाज़िल हुआ, “कुछ बुज़ुर्ग साथ लेकर लोगों के आगे आगे चल। वह लाठी भी साथ ले जा जिससे तूने दरियाए-नील को मारा था। मैं होरिब यानी सीना पहाड़ की एक चटान पर तेरे सामने खड़ा हूँगा। लाठी से चटान को मारना तो उससे पानी निकलेगा और लोग पी सकेंगे।”[3]

तब हज़रत मूसा ने इसराईलियों को अल्लाह की हमदर्दी की तसल्ली दिलाते हुए कहा, “रब ने तुम्हारा बुड़बुड़ाना सुन लिया है। वह तुम्हें पानी देगा।” यह सुनकर पूरी जमात पर ख़ामोशी तारी हो गई। आँखों में नई उम्मीद की चमक लिए वह सब हज़रत मूसा और बुज़ुर्गों को दूर होरिब की चटान की तरफ़ जाते हुए देखने लगे।

---

1 ख़ुरूज 17:3
2 ख़ुरूज 17:4
3 ख़ुरूज 17:5-6

एक नौजवान बड़े जोश से पुकार उठा, “हज़रत मूसा की लाठी हमें पानी देगी।” लेकिन आशर बाबा ग़ुस्से से बोले, “बेटा न तो मूसा की लाठी कोई चीज़ है और न हम बारिश और दरियाओं पर ही भरोसा कर सकते हैं। यह भी हमें मायूस कर सकते हैं। सिर्फ़ अल्लाह ही है जिससे हम अपने खाने-पीने की उम्मीद रख सकते हैं।”

अपनी लाठी हाथ में थामे हज़रत मूसा उन बुज़ुर्गों के आगे आगे चलते गए। वह भी प्यास से निढाल हो रहे थे। जिस्मानी तकलीफ़ के साथ साथ वह अपने आपको बिलकुल तनहा महसूस कर रहे थे। उन्हें अपने पीछे बुज़ुर्गों की आपस में बातें सुनाई दे रही थीं।

“चटान में से पानी निकल आए तो मोजिज़ा ही हो जाएगा। पानी का तो कहीं नामो-निशान तक नज़र नहीं आता। यहाँ तो चटानें ही चटानें हैं।”

पहाड़ के दामन में पहुँचकर हज़रत मूसा ने अपनी लाठी ज़ोर से चटान पर मारी। आन की आन में साफ़ चटान से शफ़्फ़ाफ़ ठंडे पानी का धारा फूट निकला। सभों पर सकता-सा तारी हो गया। किसी को यक़ीन नहीं आ रहा था। क्या यह ख़ाब है या हक़ीक़त? लमहे-भर के लिए फ़िज़ा में सिर्फ़ पानी का ही शोर गूँजता रहा। फिर जैसे हर एक में जान पड़ गई सब दीवानावार उसकी तरफ़ दौड़ पड़े और अपनी प्यास बुझाई। थोड़ी देर बाद सारा रेला और मवेशी भी आ गए। सबने ख़ूब जी भरकर पानी पिया।

हज़रत मूसा सोचों में डूबे हुए अपने ख़ैमे में तशरीफ़ ले गए। रब ने अपने आपको मेरी ज़िंदगी की चटान की सूरत में ज़ाहिर किया है। अगर बाग़ी मेरी ज़िंदगी हराम भी कर दें तो मेरे क़दम इस चटान पर महफ़ूज़ रहेंगे।

इस आख़िरी मोजिज़े ने इसराईलियों पर अनमिट नुक़ूश छोड़े। अगर रब चटान में से पानी निकाल सकता है फिर तो वह कुछ भी कर सकता है। उन्हें एहसास हुआ कि अगर रब हमारे दरमियान है तो हमें ख़ौफ़ खाने की कोई ज़रूरत नहीं।

लेकिन थोड़ी ही देर बाद फिर मुसीबत का बादल उनके सरों पर मँडलाने लगा। कुछ बंदे एक दहशतनाक ख़बर लेकर आए, "हमारे पीछे आनेवाले लोग जो कमज़ोरी के बाइस आहिस्ता आहिस्ता चल रहे हैं अमालीक़ के क़ब्ज़े में हैं।" सबको बड़ा धचका लगा। तो भी इसराईलियों ने हवास क़ायम रखे। पानी के मोजिज़े के साथ उनका रब पर ईमान मज़बूत हो गया था। "हमारा ख़ुदा हमारी मदद कर सकता है," वह एक दूसरे का हौसला बढ़ाने लगे। "वह हज़रत मूसा को हिदायत देगा ताकि इस मूज़ी दुश्मन को शिकस्ते-फ़ाश हो।"

रब और उसके ख़ादिम पर लोगों का ईमान देखकर हज़रत मूसा ख़ुश हुए। गुज़श्ता सख़्ती उन पर किसी मक़सद के तहत आई थी। अल्लाह अरसे से अमालीक़ियों को जंग की तैयारी करते देखता रहा था। इसी

लिए उसने अपनी उम्मत को इतनी सख़्ती झेलने दी। अमालीक़ियों के रूबरू जंग करने से पहले इसराईलियों का रब के रूबरू आना ज़रूरी था ताकि वह उस पर भरोसा करना सीखें।

हज़रत मूसा अरसे से अमालीक़ियों से वाक़िफ़ थे। सबसे पहले उनसे उनका सामना मिदियान के कुएँ पर हुआ था जहाँ उन्होंने कुछ अमालीक़ियों को मार भगाया था। चरवाहे की हैसियत से वह हमेशा राहसज़नों और चोरों से ख़बरदार रहा करते थे। ऐसे दुश्मनों का मुक़ाबला तो सिर्फ़ कोई बेहतरीन जंगजू ही कर सकता है। इस बार लोगों को अपना दिफ़ा ख़ुद करना था। अगर रब अपने फ़रज़ंदों के लिए सब कुछ ही करता रहता तो वह कभी भी अपने पाँवों पर खड़ा होना न सीखते। उनकी ग़ुलामाना फ़ितरत को अंजाम पर पहुँचना ज़रूरी था। लाज़िम था कि इसराईलियों में आज़ादी की रूह पैदा हो जाए।

हज़रत मूसा ने हज़रत यशुअ को बुलाकर कहा, "यशुअ! जाओ और बड़ी एहतियात से अपने ऐसे लोग चुन लो जो रब के लिए लड़ने को तैयार हों। किसी निगरान के कोड़े के डर से नहीं बल्कि अपनी ख़ुशी से।"

मिसर की असकरी तरबियतगाह में हज़रत मूसा की ट्रेनिंग अब काम आ रही थी। उन्होंने हज़रत यशुअ के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "बेटे, इसमें शक नहीं कि हमें रब की मदद की ज़रूरत है। अमालीक़ एक ताक़तवर दुश्मन है, और वह अल्लाह से बग़ावत करनेवाले हर एक

का साथ देता है। लेकिन कल जब तुम दुश्मन से लड़ने जाओगे तो मैं पहाड़ की चोटी पर खड़ा हो जाऊँगा जहाँ से सब कुछ नज़र आता है। हारून और हूर मेरी मदद करेंगे। यशुअ, ख़ौफ़ न करना। रब और उसका लशकर हमारी तरफ़ से लड़ेगा।"

अगली सुबह लशकर निकल पड़ा। रास्ते में दोनों तरफ़ रोती हुई औरतें, हाथ हिलाते हुए बच्चे और बहादुरों के नौउम्र लड़के खड़े हुए। बुज़ुर्ग हज़रात इसराईल की उम्मीद को बड़े फ़ख़्र से देखते रहे। जो पीछे रह गए थे वह तालियाँ बजा बजाकर ज़ोर ज़ोर से चिल्लाते रहे, "अल्लाह तुम्हारे साथ हो। वह तुम्हारी हिफ़ाज़त करे।"

याक़ूब बाबा और दबोरा अपने पोते जाद को देखकर नम-आलूद आँखों से हाथ हिलाते रहे। उनकी ज़िंदगी का सरूर जंग करने जा रहा था। उनकी निगाहें पुरउम्मीद थीं कि रब उससे काम लेगा और उसे बहिफ़ाज़त वापस लाएगा।

मिलकाह ने नन्हे इसहाक़ को बाज़ुओं में उठा रखा था। वह जाद को जाता हुआ ख़ौफ़ज़दा आँखों से देखती रही। लेकिन याक़ूब और दबोरा का ईमान उसकी ढारस बँधाता था। लशकर इसराईलियों की आज़ादी के लिए जान तक देने के लिए तैयार था। पीछे उनके मुंतज़िर लोगों को एक दूसरी क़िस्म की जंग लड़ना पड़ रही थी। शुबहात के ख़िलाफ़ जंग। अगर हमारी फ़ौज हार गई तो हमें फिर से ग़ुलाम बनना पड़ेगा। अमालीक़ के ग़ुलाम। लेकिन वह बार बार इस क़िस्म के ख़यालात को

झटक देते थे। रब यक़ीनन हमें फ़तह अता करेगा। जिस ख़ुदा ने चटान में से पानी निकाला था यक़ीनन वही ख़ुदा अमालीक़ को शिकस्त देने में मुआवनत करेगा।

जैसा कि हज़रत मूसा ने पहले ही अंदाज़ा लगा लिया था दुश्मन ने पहाड़ियों के बीच में से हमला किया। इसराईलियों पर पत्थरों की बारिश होने लगी। साथ साथ ताने भी जारी रहे, "यह रहे रब के ख़ादिम।" दुश्मन अपने नेज़े भी बड़ी महारत से फेंक रहे थे। मुक़ाबला बड़ा सख़्त था। हज़रत यशुअ के लोग एक दूसरे की हिम्मत बढ़ाते रहे, "पहाड़ पर हज़रत मूसा को देखो, उन्होंने अपनी लाठी ऊपर उठा रखी है ताकि हमें याद रहे कि रब हमारे साथ है।"

लड़ाई जितना ज़्यादा तूल पकड़ रही थी उतना ही ज़्यादा दुश्मन घबराने लगा। आख़िर यह ग़ुलाम इतने निडर जंगजू क्यों साबित हो रहे हैं? अचानक ही उनमें से एक ने पहाड़ पर हज़रत मूसा को देखा।

"साथियो! वह देखो पहाड़ी पर सफ़ेद दाढ़ीवाला बूढ़ा जादूगर खड़ा है। हर बार जब उसका लाठीवाला हाथ नीचे होता है हम जीतने लगते हैं। जब तक उसके हाथ ऊपर उठे रहते हैं वही जीतते रहते हैं।" उन्होंने देखा कि जैसे ही हज़रत मूसा नीचे बैठे हारून और हूर उनके दोनों तरफ़ खड़े हो गए और उनके बाज़ुओं को ऊपर उठाकर सहारा दिया।

अमालीक़ियों ने भरपूर मुक़ाबला किया। वह मुट्ठी-भर ग़ुलामों से किसी सूरत मात खानेवाले नहीं थे। लड़ाई सारा दिन जारी रही।

आख़िरकार दुश्मन ने नीचे मैदान में इसराईलियों का मुक़ाबला करने का फ़ैसला किया। यह वह लमहा था जिसका इसराईली शिद्दत से इंतज़ार कर रहे थे। पीछे से छुपे हुए तलवारबाज़ों ने बड़ी फुरती से दुश्मन पर हल्ला बोल दिया। हज़रत यशुअ और उनके साथियों ने देखते ही देखते अमालीक़ियों का सफ़ाया कर दिया।

हज़रत मूसा ने अपने लोगों के साथ ख़ुशी मनाई। रब ने उन्हें फ़तह बख़्शी थी। रब ने उनको अपने पाँवों पर खड़ा करने के लिए बड़ी संगीन सूरते-हाल का इंतख़ाब किया था। और वह अपने लिए बड़ी बहादुरी से लड़े थे। उस वक़्त मूसा ने क़ुरबानगाह बनाकर उसका नाम 'रब मेरा झंडा है' रखा।[1]

1 ख़ुरूज 17:15

शरीअत का नफ़ाज़

“अब मेरे सरताज कहाँ हैं?” बीबी सफ़्फ़ूरा ने जोश से पूछा। नौजवान जैरसोम तो साफ़ कहने लगा, “नाना जी! हम जाकर अपने अब्बू जी के पास क्यों नहीं रह सकते? हम उनके रास्ते की रुकावट नहीं बनेंगे। हम उनका ख़ानदान हैं। हम अपने अब्बू के पास रहना चाहते हैं।”

इलियज़र जो बिलकुल नौउम्र था फट पड़ा, “लगता है कि अब्बू जी हमें भूल गए हैं। उन्हें तो बस इसराईलियों की फ़िकर लगी रहती है।”

“बस भई बस,” यितरो अपने नवासों के गिर्द बाज़ू हमायल करते हुए बोला। “अपने बाप के बारे में ऐसी बात कहना ज़्यादती है। बच्चो! उनके सर पर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारियाँ हैं। तुम्हें तो अपने बाप पर बड़ा फ़ख़्र होना चाहिए, क्योंकि वह इसराईलियों के सरदार बन गए हैं। उन पर बड़ी बड़ी सलतनतों की नज़रें लगी हुई हैं। बहरहाल तुम लोग तैयार रहना। जैसे ही वह लोग हमारे इलाक़े में पहुँचेंगे मैं तुम सबको उनके पास

ले जाऊँगा।” यितरो इसराईलियों की नक़लो-हरकत को बड़ी दिलचस्पी से देख रहा था। ज्योंही उसे मालूम हुआ कि वह साथवाले इलाक़े में हैं उसने हज़रत मूसा को अपनी आमद की ख़बर देने के लिए फ़ौरन ही एक क़ासिद रवाना कर दिया।

जब क़ासिद को हज़रत मूसा के सामने पेश किया गया उसने अहम एलान करते हुए कहा, “मैं, आपका सुसर यितरो आपकी बीवी और दो बेटों को साथ लेकर आपके पास आ रहा हूँ।”[1]

यों लगा जैसे हज़रत मूसा गहरे ख़ाब से जाग उठे हों। कितनी हैरत की बात थी कि वह अपने बीवी-बच्चे ही भूल बैठे थे। जब से जलती झाड़ी में अल्लाह हज़रत मूसा से हमकलाम हुआ था वह बहुत मसरूफ़ हो गए थे। अब क़ासिद की ख़बर सुनते ही उनका दिल अपनी वफ़ादार बीवी सफ़्फ़ूरा से मिलने के लिए तड़प उठा जो उनके साथ मिसर जाने को भी राज़ी थी। वह यितरो के भी बहुत ममनून थे जो बड़ी शफ़क़त से उनके घराने का ख़याल रखता। जब वह पहुँचे तो हज़रत मूसा ख़ैमे से बाहर आकर उनसे मिले। सफ़्फ़ूरा पर एक प्यार भरी नज़र डालते हुए उनका दिल मचल उठा। जैरसोम और इलियज़र ने क़दरे शरमीली नज़रों से अपने बाप को देखा। यितरो अपना चौपानी लिबास पहने और हाथ में असा लिए बज़ाहिर अपने आपको फ़ालतू-सा महसूस कर रहा था। लेकिन हज़रत मूसा उससे बड़ी गरमजोशी से मिले।

---

1 ख़ुरूज 18:6

हज़रत मूसा यितरो के आगे आदाब बजा लाए और फिर दोनों गले मिले। फिर हज़रत मूसा और सफ़्फ़ूरा की आँखें चार हुईं जिनमें अब भी मुहब्बत के शोले भड़क रहे थे। "लशकरगाह में आना मुबारक हो। इतना ज़रूर कहूँगा कि आपका आना यकसर अचंभे की बात है। बुज़ुर्गवार, मेरे घराने का ख़याल रखने का बहुत बहुत शुक्रिया।" अपना दायाँ हाथ जैरसोम के कंधे पर और बायाँ हाथ इलियज़र के गुदाज़ हाथों में देते हुए वह उनको अपने ख़ैमे में ले गए। जिस किसी की भी नज़र हज़रत मूसा के चमकते हुए चेहरे पर पड़ती वह ख़ुश हो जाता।

ख़ैमागाह में यह ख़बर जंगल की आग की तरह फैल गई। आन की आन में बीबी मरियम हज़रत हारून की बीवी और ख़ानदान के दीगर अफ़राद को लेकर आ पहुँची। "ख़ुशआमदीद। भाभी जी, अल्लाह आपको बरकत दे।" बीबी मरियम और सफ़्फ़ूरा की आँखें डबडबा गईं। एक बहादुर बहन थी जिसने नन्हे मूसा की रखवाली की थी। और एक चाहनेवाली बीवी थी जिसने अकेले भाई का ख़याल रखा था। "अरे हाँ यह रहे वह लड़के! कितने ख़ुशशक्ल हैं यह! वाह जैरसोम, तुम तो अब बड़े हो गए हो।" बीबी मरियम ने अपने भतीजों को अपने बाज़ुओं में समेट लिया। देखते ही देखते औरतों ने मिलकर आग भड़का ली। आन की आन में मन के तैयार किए हुए ख़ास खाने मेहमानों के लिए तैयार थे। इससे बात रब के ज़िक्र की तरफ़ पलट गई जो उन्हें ख़ुराक मुहैया करता और उनकी हिफ़ाज़त किया करता था।

“अब्बू जी! जब ख़ुदा इसराईलियों से नाराज़ होता है तो वह मन बरसाना रोक लेता है क्या?” जैरसोम परेशान-सा लग रहा था।

“नहीं, बेटे! रब ऐसा बाप है जिसके ज़मीनी बाप साय से ज़्यादा हैसियत नहीं रखते। वह अपने फ़रज़ंदों से ज़मीनी बाप से कहीं ज़्यादा मुहब्बत रखता है। बेशक रब के पास मन बरसाना बंद कर देने की बहुत-सी वुजूहात हैं तो भी वह ऐसा कभी नहीं करता।”

सफ़्फ़ूरा को इलियज़र के चेहरे पर मायूसी की झलक नज़र आई तो वह मुसकराकर कहने लगी, “जैरसोम के अब्बा! आपके छोटे बेटे के दिमाग़ में यह बात बैठ गई है कि आप सिर्फ़ रब से मुहब्बत करते हैं और बेटे की तरफ़ क़तअन कोई तवज्जुह नहीं देंगे।”

“बेटा, इधर आओ!” हज़रत मूसा इलियज़र की तरफ़ अपने बाज़ू फैलाते हुए कहने लगे, “अब मेरी तरफ़ देखो, मैं तुम्हें एक बड़ी ही ज़रूरी बात समझाता हूँ। देखो! अगर कोई रब से ज़्यादा मुहब्बत करे तो वह अपने साथियों से भी इतनी ही ज़्यादा मुहब्बत करेगा। रब ही हमें दूसरों से मुहब्बत करना सिखाता है। इलियज़र, मैं तो तुम्हें पूरे दिल से प्यार करता हूँ। इधर देखो। अल्लाह ने एक बहुत बड़ा काम तुम्हारे बाप को सौंपा है जिस पर उसका बेशतर वक़्त ख़र्च होता है। तुमको बहादुर बच्चा बनना पड़ेगा। अब्बू को अपना काम करने दो। बहादुर बनोगे ना?”

हज़रत मूसा उनको वह तमाम बातें सुनाने लगे जो रब ने उनके लिए की थीं, और यितरो बड़े ग़ौर से सुनते रहे। वह ग़मगीन साबिक़ मिसरी

शहज़ादा अब कितना ख़ुदएतमाद बन चुका था। रब में उनका ईमान कितना पुख़्ता हो गया था! उनके दिल ने ज़िंदा ख़ुदा को पा लिया था। साथ ही उनकी ज़िंदगी का मक़सद भी पूरा हो गया था। सब मुतअज्जिब थे कि जो आदमी रब के इतना क़रीब है किस क़दर ग़ुरूर और ख़ुदग़रज़ी से पाक है।

अलबत्ता सफ़्फ़ूरा क़दरे दिलशिकस्ता हो रही थी। उसे महसूस हो रहा था कि मेरा शौहर तो सिर्फ़ रब और इसराईलियों से ही मुहब्बत रखता है। क्या उसके दिल में मेरे लिए कोई जगह रही भी या नहीं? बहरहाल एक बात साफ़ थी। उसकी इज़्दिवाजी ज़िंदगी में बहुत-सी तबदीलियाँ रूनुमा होने को थीं। क्या वह उनको निभा पाएगी?

अगली सुबह यितरो की शदीद ख़ाहिश थी कि वह अपने दामाद के साथ दिन गुज़ारे। हज़रत मूसा हैरान थे। ख़ुसर क्या ख़ास आदमी है जो यों मेरे काम में दिलचस्पी ले रहा है। उन्होंने कहा, "जल्द ही लोग अपनी अपनी शिकायतें लेकर मेरे पास आएँगे। ओह! यह इसराईली बड़े सख़्त और बेढब हैं। जब यह मिसर में थे तो कई नसलों तक उनको कोड़े मार मारकर नज़मो-ज़ब्त सिखाया जाता रहा। और अब जब निगरानों और साँटे का ज़ोर नहीं रहा यह समझते हैं कि जो चाहें कर सकते हैं।"

यितरो लोगों के एक बड़े हुजूम को हज़रत मूसा के ख़ैमे के सामने इतनी जल्दी जमा होते देखकर हैरान रह गया। तब हज़रत मूसा सुबह से शाम तक उनके फ़ैसले करते गए। यितरो हज़रत मूसा को यों हर

छोटे-बड़े पर बिला-इम्तियाज़ तवज्जुह देते हुए देखकर बहुत ख़ुश हुए। झगड़े, फ़साद और चोरियों के मुक़दमे लातादाद थे। ज़िनाकारी का एक मुक़दमा था और एक हामिला औरत का भी जिसे किसी के बैल ने सींग मारा था।

लेकिन फिर वह मूसा से कहने लगे, "यह क्या है जो आप लोगों के साथ कर रहे हैं? सारा दिन वह आपको घेरे रहते और आप उनकी अदालत करते रहते हैं। आप यह सब कुछ अकेले ही क्यों कर रहे हैं? ... आपका तरीक़ा अच्छा नहीं है। काम इतना वसी है कि आप उसे अकेले नहीं सँभाल सकते। इससे आप और वह लोग जो आपके पास आते हैं बुरी तरह थक जाते हैं। मेरी बात सुनें! मैं आपको एक मशवरा देता हूँ। अल्लाह इसमें आपकी मदद करे। लाज़िम है कि आप अल्लाह के सामने क़ौम के नुमाइंदा रहें और उनके मामलात उसके सामने पेश करें। यह भी ज़रूरी है कि आप उन्हें अल्लाह के अहकाम और हिदायात सिखाएँ, कि वह किस तरह ज़िंदगी गुज़ारें और क्या क्या करें। लेकिन साथ साथ क़ौम में से क़ाबिले-एतमाद आदमी चुनें। वह ऐसे लोग हों जो अल्लाह का ख़ौफ़ मानते हों, रास्तदिल हों और रिश्वत से नफ़रत करते हों। उन्हें हज़ार हज़ार, सौ सौ, पचास पचास और दस दस आदमियों पर मुक़र्रर करें। उन आदमियों की ज़िम्मेदारी यह होगी कि वह हर वक़्त लोगों का इनसाफ़ करें। अगर कोई बहुत ही पेचीदा मामला हो तो वह फ़ैसले के लिए आपके पास आएँ, लेकिन दीगर मामलों का फ़ैसला

वह ख़ुद करें। यों वह काम में आपका हाथ बटाएँगे और आपका बोझ हलका हो जाएगा।[1]

हज़रत मूसा को यों महसूस हुआ जैसे अल्लाह यितरो की मारिफ़त मेरे से हमकलाम हो रहा है। उन्होंने यह मामला रब के सामने पेश किया और फिर 70 मुंसिफ़ चुन लिए जो इस अज़ीम काम में उनका हाथ बटाने पर मुक़र्रर हुए।

हज़रत मूसा ने सुसर को इसराईलियों के साथ रुकने पर इसरार किया, क्योंकि उससे उनको बहुत मदद मिल सकती थी। उस इलाक़े के कुओं और पानी भरे गढ़ों के बारे में उससे ज़्यादा कोई नहीं जानता था। लेकिन यितरो ने घर वापस जाने की ठान ली, और इसराईली अपने रास्ते पर चल दिए। बादल का सतून बदसतूर उनके आगे आगे चल रहा था।

मिसर से निकलने के बाद के तीसरे महीने में हज़रत मूसा और इसराईली दश्ते-सीना पर पहुँचे। वह कितने ख़ुश थे कि बीवी-बच्चे मेरे हमराह हैं। ख़ुद वह अपने ख़ानदान के साथ साथ तो नहीं चल सकते थे, लेकिन वह इतना ज़रूर जानते थे कि क़ाफ़िले में सफ़्फ़ूरा दोनों बेटों के साथ शरीक है। हज़रत मूसा इलियज़र की बात याद करके मुसकरा

1 ख़ुरूज 18:14,17-22

दिए जिस पर अभी तक मन के बारे में हैरत तारी थी। "देखिए अब्बू जी! आसमान से रोटी गिर रही है।" फिर कभी उसकी नज़रें देर तक सामने चलनेवाले बादल के सतून पर गड़ जातीं, "अब्बू जी! बादल में ख़ुदा है! है ना? अल्लाह हमें कभी अकेला नहीं छोड़ता। रात को तो यह चमकता हुआ सतून देखकर मुझे महसूस होता है कि मैं बिलकुल महफ़ूज़ हूँ।" जब बादल के सतून इसराईलियों को ख़ैमा उखाड़ने का इशारा देता तो लड़का परेशान हो जाता। "अब्बू जी! जल्दी कीजिए वरना बादल चला जाएगा और हम बयाबान में भटकते फिरेंगे।"

हज़रत मूसा ने मुसकराते हुए उसे यक़ीन दिलाया, "बेटा जी! फ़िकर की कोई बात नहीं है। रब साबिर है। जब तक सब तैयार न हो जाएँ वह हमारा इंतज़ार करेगा। रास्ते में वह इतना आहिस्ता चलेगा कि सुस्त से सुस्तरफ़्तार मुसाफ़िर भी पीछे नहीं रहेंगे।"

सफ़्फ़ूरा और उसके बच्चे हज़रत मूसा को आगे चलते हुए देखकर फ़ख़्र से फूले न समाते थे। वह ख़ुशी ख़ुशी हज़रत हारून के घराने के साथ हो लिए। असल में सफ़्फ़ूरा और वह लड़के सीना पहाड़ पर होनेवाले वाकिये के बारे में पुरउम्मीद थे। हज़रत मूसा भी बहुत ख़ुश थे कि जब रब इसराईलियों को अपनी शरीअत देगा तो मेरे बीवी-बच्चे भी मौजूद होंगे।

आख़िरकार वह दश्ते-सीन को पीछे छोड़ आए। सीना पहाड़ के चटानी सिलसिले के साथ साथ एक ज़रख़ेज़ नख़लिस्तान था जहाँ

बुलंदी से नीचे नदियाँ बहती थीं। वहाँ मवेशियों के चरने के लिए सरसब्ज़ चरागाहें थीं और खजूर के दरख़्तों के साएदार झुंड। इतने बड़े हुजूम के लिए यह एक मिसाली नख़लिस्तान था।

यहाँ पहुँचकर हज़रत मूसा को जल्द ही रब से मुलाक़ात के लिए जाना पड़ा। तो भी जाने से पेशतर उन्होंने लशकरगाह को हज़रत हारून और हूर के हवाले कर दिया। आधे दिन का सफ़र मज़े से कटा क्योंकि पासबानी के दिनों से उस इलाक़े से वह मानूस थे।

आख़िर वह अपनी मनज़िल तक पहुँच ही गए। उनकी मुतलाशी निगाहों ने आसानी से वह मक़ाम ढूँड लिया जहाँ रब जलती हुई झाड़ी में से उनसे हमकलाम हुआ था। यहाँ पहली बार हज़रत मूसा की रब से मुलाक़ात हुई थी। उस वक़्त से हज़रत मूसा के दिल में अल्लाह को बेहतर तौर पर जानने की शदीद आरज़ू ज़ोर मारती रहती थी।

यकायक ऊपर से आवाज़ ने ख़ामोशी को तोड़ दिया। "याक़ूब के घराने इसराईलियों को बता, 'तुमने देखा है कि मैंने मिसरियों के साथ क्या कुछ किया, और कि मैं तुमको उक़ाब के परों पर उठाकर यहाँ अपने पास लाया हूँ। चुनाँचे अगर तुम मेरी सुनो और मेरे अहद के मुताबिक़ चलो तो फिर तमाम क़ौमों में से मेरी ख़ास मिलकियत होगे। गो पूरी दुनिया मेरी ही है, लेकिन तुम मेरे लिए मख़सूस इमामों की बादशाही और मुक़द्दस क़ौम होगे।"[1] इन अलफ़ाज़ में अज़ीम ख़ुशी की लहर दौड़

1 ख़ुरूज 19:3-6

रही थी क्योंकि रब अपने लोगों पर बड़ी मेहरबानी निछावर करने को था।

वापस ख़ैमाबस्ती के रास्ते पर हज़रत मूसा का दिल जोश से भरा हुआ था, क्योंकि वह एक गिराँक़दर ख़बर के पयांबर थे। इसराईल को ख़ुदा अपनी ख़ास मिलकियत बनानेवाला था। एक बेशक़ीमत ख़ज़ाना जो बादशाहों के बादशाह की ज़ाती मिलकियत था। इसका मतलब था ख़ास अहमियत, ख़ास रिश्ता और ख़ास ज़िम्मेदारी। जिस क़ौम को दूसरी क़ौमों से अलहदा कर दिया गया था अब वह रब की मिलकियत थी। मिसर से रिहाई हासिल करने के लिए इसराईलियों को अल्लाह की मख़लसी को क़बूल करना ज़रूरी था। क्योंकि अल्लाह के अहद का तक़ाज़ा था कि वह उस पर ईमान लाएँ और उसके फ़रमाँबरदार हों।

कमाल ख़ुलूस के साथ हज़रत मूसा ने तमाम बातें बुज़ुर्गों से बयान कर दीं, "दुनिया की तमाम क़ौमों में से ख़ुदा हमें चुन लेना चाहता है ताकि हम उसकी ख़ास उम्मत हों, इमामों की मिलकियत, एक मुक़द्दस क़ौम, ताकि हम दूसरी क़ौमों के लिए एक नमूना साबित हों। हमने जो उसके चुने हुए लोग हैं सबसे पहले ज़िंदा ख़ुदा को क़बूल किया है। क्या तुम उस शरीअत की बातों को मानोगे जो वह तुम्हें देगा ताकि उसकी ख़ाहिश के मुताबिक़ उसकी मुक़द्दस क़ौम बनो?"

सब लोगों ने मिलकर जवाब में कहा, “हम रब की हर बात पूरी करेंगे जो उसने फ़रमाई है।”[1]

हज़रत मूसा ने उन्हें इस ख़ास मौक़े की तैयारी के लिए फ़रमाया कि अपने आपको पाक रखो। फिर तीसरे दिन ख़ुद रब पहाड़ पर उतरेगा। इनसान या हैवान जो भी इस पहाड़ के क़रीब आएगा वह जान से मारा जाएगा। लिहाज़ा कोई भी पहाड़ के क़रीब न जाए।

औरतें अकेली अकेली और गुरोह की सूरत में पहाड़ पर से गिरनेवाले पानी में कपड़े धोने लगीं। उन पर इस दर्जे ख़ौफ़ तारी हो चुका था कि वह पेश आनेवाले इस वाकिये का ज़िक्र भी दबी दबी ज़बान से ही कर रही थीं। मिलकाह और दादी दबोरा कपड़े धोते हुए एक दूसरे की रिफ़ाक़त से लुत्फ़अंदोज़ होरही थीं। उनकी नज़रें नन्हे इसहाक़ पर जमी हुई थीं जो पानी में खेल रहा था। दोनों जंग में जाद के बच जाने के सबब से रब की बहुत ज़्यादा शुक्रगुज़ार थीं।

दादी जी नन्हे इसहाक़ को सीने से चिमटाते हुए कहने लगीं, “मेरा मुन्ना जब बड़ा होगा तो उसे अच्छी तरह से मालूम होगा कि अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक़ ज़िंदगी किस तरह बसर करना है। क्या तुम सोच सकती थीं कि ख़ुदा हम कमज़ोर इनसानों से यों हमकलाम होगा?”

---

1 ख़ुरूज 19:8

मिलकाह की आँखें चमकने लगीं। "अम्मी जी, वह आवाज़ कैसी हो गई? मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आता। लेकिन इतना ज़रूर कहूँगी कि मुझे इस मुलाक़ात से डर लगता है।"

दीना अपने कपड़ों को निचोड़ते हुए ग़ुस्से से बोली, "हर एक मान गया है कि रब ने जो कुछ कहा है वैसा ही किया जाएगा। लेकिन मैंने कुछ लोगों को बुड़बुड़ाते हुए सुना है। वह नहीं चाहते कि उन्हें बताया जाए कि किस तरह रहना है और क्या क्या करना है। बस वह चाहते हैं कि उनको सीधा उस मुल्क में ले जाया जाए जिसका वादा रब ने किया है।"

मरियम सर झटककर कहने लगी, "मैंने भी उनकी बातें सुनी हैं। वह दूसरी क़ौमों से मिले-जुले लोग हैं। रब उनको अपना बनाना चाहता है और वह अल्लाह को ग़ुलामों का निगरान होने का इलज़ाम दे रहे हैं। वह इतने अंधे हो गए हैं कि उन्हें इसमें रब की भलाई नज़र ही नहीं आती।"

दीना सख़्ती से बोली, "मरियम, यह मत भूलो कि हमारे अपने लोग भी इतने ही बुरे हैं।"

तीसरे दिन सुबह-सवेरे ही बादल गरजने और बिजली चमकने लगी। पहाड़ पर काली घटा छा गई और नरसिंगे की आवाज़ बुलंद हुई। सब लोग काँप गए। तब हज़रत मूसा गरमजोशी से लोगों को अल्लाह से मिलाने के लिए ख़ैमाबस्ती से बाहर ले गए। सब पहाड़ के दामन में खड़े हो गए। इसराईलियों की हालत उस वक़्त देखनेवाली थी। ख़ुदा

की देख-भाल में तीन महीने गुज़ारने के बाद उनके चेहरों से ग़ुलामी के आसार मिट चुके थे। पहाड़ के क़रीब लोगों की क़तारों की क़तारें खड़ी थीं और आज़ाद क़ौम की तरह नज़रें पहाड़ पर जमी हुई थीं। वह सब नहाए हुए थे और चमकते बालों और ख़ूबसूरत मिसरी लबादों में मलबूस खड़े काँप रहे थे।

फिर सीना पहाड़ ऊपर से नीचे तक धुएँ में छुप गया, क्योंकि रब आग में होकर वहाँ नाज़िल हुआ। धुआँ भट्टे के धुएँ की तरह उठने लगा। सारा पहाड़ ज़ोर से हिलने लगा। ऊपर से धुआँ मज़ीद बढ़ता गया, और तेज़ नरसिंगे की आवाज़ निहायत बुलंद होती गई।

फिर एक आवाज़ सुनाई दी। "मूसा! मूसा!"

लोगों ने हज़रत मूसा को पहाड़ पर चढ़ते और ग़ायब होते देखा। उनकी हैरत की इंतहा न रही जब वह थोड़ी ही देर के बाद दुबारा ज़ाहिर हुए। उनकी हैरत मज़ीद बढ़ गई कि हज़रत मूसा ने इमामों को ख़बरदार किया कि वह भी पहाड़ पर क़दम न रखें अगरचे पहाड़ को छूने से रोकने के लिए उसके गिर्द हद बाँधी गई थी। लोग ख़ुदा की पाकीज़गी से कितने मुतअस्सिर हुए! सिवाए हज़रत मूसा के जो कि दरमियानी थे कोई भी अल्लाह की हुज़ूरी में आने का मजाज़ न था।

और फिर अचानक हुजूम पर गहरी ख़ामोशी छा गई जिससे वह और भी ख़ौफ़ज़दा हुए। इतने में एक बुलंद आवाज़ सुनाई दी, "मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्के-मिसर की ग़ुलामी से निकाल लाया।" यह

आवाज़ इर्दगिर्द की पहाड़ी चोटियों में गूँज गई। अल्लाह ने फिर बुलंद आवाज़ में कहा,

"मेरे सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना।

अपने लिए बुत न बनाना। किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना ...

रब अपने ख़ुदा का नाम बेमक़सद या ग़लत मक़सद के लिए इस्तेमाल न करना ...

सबत के दिन का ख़याल रखना। उसे इस तरह मनाना कि वह मख़सूसो-मुक़द्दस हो।

अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना ...

क़त्ल न करना।

ज़िना न करना।

चोरी न करना।

अपने पड़ोसी के बारे में झूटी गवाही न देना।

अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना ... "[1]

हर हुक्म के दरमियान एक वक़्फ़ा था। इसराईल ख़ौफ़ के मारे काँप उठे और दूर खड़े होकर हज़रत मूसा से मिन्नत करने लगे, "आप ही हमसे बात करें तो हम सुनेंगे। लेकिन अल्लाह को हमसे बात न करने दें वरना हम मर जाएँगे।"[2]

---

1 ख़ुरूज 20:2-17

2 ख़ुरूज 20:19

लेकिन हज़रत मूसा कहने लगे, “मत डरो, क्योंकि रब तुम्हें जाँचने के लिए आया है, ताकि उसका ख़ौफ़ तुम्हारी आँखों के सामने रहे और तुम गुनाह न करो।”[1]

हज़रत मूसा एक बार फिर उनसे जुदा हो गए ताकि अल्लाह से मज़ीद हिदायात पाएँ। लोग खड़े इंतज़ार करते रहे कि सुनें कि अब हमें क्या करना है। ख़ासी देर के बाद उनकी क़तारों में हैरानी की आवाज़ उभरी। उनकी आँखें हज़रत मूसा पर जमकर रह गईं जो एक चटान पर खड़े उन्हें वह बातें बताने लगे जो रब ने कही थीं। वह पुकारकर कहने लगे, “यह वह अहकाम हैं जो रब ने तुम्हारे लिए दिए हैं। क्या तुम उनको क़बूल करोगे?”

सब लोगों ने हम-आवाज़ होकर जवाब दिया, “हम रब की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे।”[2]

फिर हज़रत मूसा ने उनको रुख़सत कर दिया।

अल्लाह के बंदे के पास अभी आराम करने का बिलकुल वक़्त नहीं था क्योंकि अहद की किताब को तैयार करना ज़रूरी था जो उन्हें अगले रोज़ लोगों को पढ़कर सुनानी थी। लिहाज़ा उन्होंने अपने कातिबों को बुला भेजा कि वह बड़े बड़े तूमार लेकर आ जाएँ। उनके जमा होने तक हज़रत मूसा अपने घराने से मिलने के लिए चले गए। उनका दिल ख़ुशी से झूम रहा था। आख़िर लोग ख़ुदा और उसके ख़ादिम मूसा पर ईमान ले

1 ख़ुरूज 20:20
2 ख़ुरूज 24:3

आए थे। उन्होंने ख़ुद ख़ुदा की आवाज़ अपने ख़ादिम मूसा से हमकलाम होते भी सुनी थी।

जब वह घर पहुँचे तो सबसे पहले इलियज़र ने उनसे बात की, "अब्बा! रब की बात सुने बग़ैर भी हम सब जानते हैं कि क़त्ल नहीं करना चाहिए, चोरी नहीं करनी चाहिए।"

हज़रत मूसा ने मुसकराकर जवाब दिया, "बेटे! इलाही शरीअत हर एक के दिल पर नक़्श होती है। अल्लाह की शरीअत वह रास्ता है जिस पर हमें चलना होता है। यह वह निशान है जिसकी पैरवी ज़रूरी है। अगर हम शरीअत पर चलें तो हम उम्र-भर इस रास्ते पर महफ़ूज़ रहेंगे।"

उन्होंने लमहे-भर तवक़्क़ुफ़ किया फिर इलियज़र के सर पर हाथ फेरते हुए बोले, "बेटा, सिर्फ़ शरीअत के मुताबिक़ काम करना ही काफ़ी नहीं होता। नहीं, बल्कि हमेशा याद रखना चाहिए कि हम एक शफ़ीक़ ख़ुदा के हुक्म मानते हैं जो हमें महफ़ूज़ और पाक रखना चाहता है।"

आज़माइश

जब हज़रत मूसा की आँख सुबह-सवेरे ही खुल गई तो उन्होंने पहाड़ के दामन में एक क़ुरबानगाह बनाई। नौजवानों ने रब के हुज़ूर भस्म होनेवाली क़ुरबानियाँ चढ़ाईं और बैलों को सलामती की क़ुरबानी के तौर पर पेश किया। हज़रत मूसा ने ज़बह किए हुए जानवरों का आधा ख़ून बासनों में रखा और बाक़ी क़ुरबानगाह पर छिड़क दिया। जब उन्होंने लोगों को अहदनामा पढ़कर सुनाया तो सब चेहरों पर बड़ी संजीदगी तारी हुई।

हज़रत मूसा ने तिलावत ख़त्म की तो इसराईली सब एक आवाज़ होकर बोले, “हम रब की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे। हम उसकी सुनेंगे।” इस पर मूसा ने बासनों में से ख़ून लेकर उसे लोगों पर छिड़का और कहा, “यह ख़ून उस अहद की तसदीक़ करता है जो रब ने तुम्हारे साथ किया है और जो उसकी तमाम बातों पर मबनी है।”[1]

---

1 ख़ुरूज 24:7-8

अल्लाह अपने अहद का वफ़ादार रहेगा। शर्त यह है कि इसराईली उसके फ़रमाँबरदार फ़रज़ंद बने रहें। अभी इब्राहीम की औलाद कामिलियत के दर्जे से बहुत दूर थी। तो भी ख़ुदा ने उनको इसी हालत में क़बूल कर लिया था ताकि जैसे जैसे वह उसकी राहों पर चलें वह उन्हें एक पाक क़ौम बनाए। लेकिन उन लोगों का बहुत बुरा अंजाम होनेवाला था जो क़ादिरे-मुतलक़ के जलाल का तजरिबा करने, उसकी आवाज़ सुनने और उसकी भेजी हुई रोटी खाने के बाद उसकी राहों से भटक जाएँगे।

रब के कहने पर हज़रत मूसा, हज़रत हारून और उनके बेटे नदब और अबीहू और 70 बुज़ुर्ग ऊपर चढ़े। उन्हें हिदायत दी गई थी कि वह दूर से रब की परस्तिश करें। उनके अलावा किसी और को वहाँ आने की इजाज़त न थी। लोगों की निगाहें उनका पीछा करती रहीं। सबके सब दहशतज़दा थे कि कहीं अल्लाह का ग़ज़ब हमें भस्म न कर दे।

बुज़ुर्ग भी ख़ौफ़ज़दा ही थे। उन्होंने सोचा कि कहीं हमें काले बादल में दाख़िल होना न पड़े या फिर उस पुर-जलाल हुज़ूरी में पुर-ख़ौफ़ लमहे गुज़ारने न पड़ें। लेकिन उनके सारे ख़दशात बेबुनियाद निकले, क्योंकि अल्लाह एक हैरतअंगेज़ रौशनी के बीच में ठहरा रहा। अगरचे वह उसे देख न सके तो भी वह उसकी पाक हुज़ूरी को महसूस कर रहे थे। ख़ुदा की हुज़ूरी से वक़ार, इतमीनान और शफ़क़त फूट रही थी। इस मौक़े पर अल्लाह का एक और पहलू उन पर वाज़िह हुआ। शरीअत की दहशत

की जगह उन्हें रब की मुहब्बत, फ़ज़ल और मग़फ़िरत का गहरा एहसास हुआ। उन्होंने अपने आपको ख़ुदा के अबदी प्यार में डूबा हुआ पाया। उनका सारा ख़ौफ़ जाता रहा।

वह अल्लाह को देखते रहे और उसके हुज़ूर अहद का खाना खाते और पीते रहे। खाने और पीने की रिफ़ाक़त भी अहद का एक अहम हिस्सा था।

पहाड़ से उतरने के बाद वही मानूस आवाज़ पुकारती हुई सुनाई दी, "मेरे पास पहाड़ पर आकर कुछ देर के लिए ठहरे रहना। मैं तुझे पत्थर की तख़्तियाँ दूँगा जिन पर मैंने अपनी शरीअत और अहकाम लिखे हैं और जो इसराईल की तालीमो-तरबियत के लिए ज़रूरी हैं।"[1]

बाक़ियों को रोक दिया गया। सिर्फ़ रब के ख़ादिम हज़रत मूसा को अल्लाह की ख़ास हुज़ूरी में जाने की इजाज़त थी। इतनी अहम मुलाक़ात के बावुजूद हज़रत मूसा बिना सोचे-समझे ग़ायब न हुए बल्कि उन्होंने हारून और हूर को इसराईलियों के सामने अपना नुमाइंदा मुक़र्रर कर दिया। सिर्फ़ उनका ख़ादिम यशुअ उनके साथ गया। चढ़ते चढ़ते मुलाक़ात की जगह नज़र आने लगी। अभी वह उस मक़ाम पर पहुँचे ही थे कि उन्होंने देखा कि ख़ुदा का जलाल पहाड़ की चोटी पर आकर ठहर गया।

---

1 ख़ुरूज 24:12

हज़रत यशुअ ख़ौफ़ से काँप उठे, क्योंकि बादल भस्म कर देनेवाली आग लग रहा था। उनका दिल वहाँ से भागने के लिए करता था। लेकिन उनका आक़ा और उस्ताद वहीं रुक गए और अल्लाह की बुलाहट का इंतज़ार करने लगे।

उतने में ख़ैमाबस्ती की ज़िंदगी मामूल के मुताबिक़ चल रही थी गो हज़रत मूसा की ग़ैरमौजूदगी शिद्दत से महसूस हो रही थी जिन्होंने फ़िरऔन का सामना करने की जुर्रत की थी। समुंदर में से गुज़रते वक़्त हज़रत मूसा ही चटान की तरह खड़े रहे थे। और जब ख़ुदा सीना पहाड़ पर से उनसे हमकलाम हुआ था तो हज़रत मूसा ही ने अल्लाह को जवाब दिया था। जब हज़रत मूसा उनके साथ होते थे तो लोगों को महसूस होता था कि ख़ुदा हमारे साथ है।

जब 70 बुज़ुर्ग वापस लौटे तो वह क़दरे मुतमइन थे, क्योंकि अब हज़रत हारून और हूर लशकरगाह के इंचार्ज थे। लेकिन दिन गुज़रते गए, फिर हफ़्ते। अब तक हज़रत मूसा का नामो-निशान तक नहीं था। हारून और हूर की मौजूदगी के बावुजूद उनकी बेचैनी बढ़ने लगी। वह अपने आपको एक बिछड़े हुए बच्चे की तरह समझने लगे। वह सोचने लगे कि हमारे सरदार का क्या बना जो भस्म कर देनेवाली आग के बादल में कहीं ग़ायब हो गया है।

सुबह के वक़्त मन जमा करते हुए बड़ी तलख़ आवाज़ें फ़िज़ा में बिखरने लगीं। एक बुढ़िया बोली, “ज़रा ठहरो तो, फिर देख लेना जब

हमारे दुश्मनों को हमारी बेबसी का पता चला तो वह हम पर ज़रूर चढ़ाई करेंगे।" दीगर औरतों के दिल इस मनहूस पेशगोई को सुन कर सहम गए। मोटी नओमी ने अपना शोशा छोड़कर उनको बिलकुल ही परेशान कर दिया, "मैं तो सच बात कहूँगी। बहनो! अपने आपको उस दिन के लिए अभी से तैयार कर लो जब अल्लाह हमें मन भेजना बंद कर देगा। उस वक़्त हमारे सरों पर मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ेगा।"

ऐसी ही बातें मर्दों में भी हो रही थीं। क्या अजब कि वह बड़ी तेज़ी से अख़लाक़ी घटाओ का शिकार होने लगे। हज़रत मूसा की ग़ैरमौजूदगी में तमाम अख़लाक़ी पाबंदियाँ भी ख़त्म हो चुकी थीं। इधर ख़ुदा पर उनका ईमान डाँवाँडोल हो रहा था तो उधर वह तमाम शैतानी मशाग़िल जो मिसर में उन पर ग़लबा पाए हुए थे अब यहाँ भी उनके दिलों में घर करने लगे।

हज़रत मूसा के बेटे जैरसोम और इलियज़र एक शाम अपने गधों पर ईंधन की लकड़ी लादे घर लौटकर आए तो उनकी आँखें अंगारे की तरफ़ दहक रही थीं। जैरसोम ग़ुस्से में फट पड़ा, "माँ जी! लोग तो पागल हो गए हैं। उन्होंने हारून ताया को मजबूर किया है कि वह उनके लिए सोने का एक बछड़ा बनवाएँ जिसको वह बुत की तरह पूजा करें। वह कहते हैं कि यह बछड़ा ही वह ख़ुदा है जो हमको मिसर से निकालकर लाया है।" जैरसोम की आवाज़ में तलख़ी थी। "हारून ताया ने उनके सारे मुतालबे पूरे भी कर दिए हैं यहाँ तक कि उस बुत के लिए क़ुरबानगाह भी बना

दिया है। कल ज़ियाफ़त होनेवाली है।" जैरसोम जज़बात की शिद्दत से काँप रहा था। "माँ जी! अब्बू क्या कहेंगे? काश हम न आए होते! रब यक़ीनन हम सबको नेस्तो-नाबूद कर देगा। हमने उसका जलाल देखा है और अभी हाल ही में वह हमसे हमकलाम भी हुआ है और अपने अहकाम दिए हैं। माँ जी! यह लोग आसमानी रोटी खाते हुए कैसे कह सकते हैं कि अल्लाह ने हमें छोड़ दिया है? यह किस तरह उस बुत को ख़ुदा की जगह रख सकते हैं जबकि ख़ुदा की आँखें बादल के सतून में से उनको देख रही हैं?"

सफ़्फ़ूरा ने गहरी साँस लेते हुए कहा, "बेटा मन अब एक आम-सी चीज़ बन के रह गई है। अब उसे आसमानी रोटी कोई नहीं कहता। बादल के सतून का भी यही हाल है। आह, अल्लाह की नेमतें भुला देना इनसानी फ़ितरत है। जब मैंने अपनी पड़ोसन फ़ीहा से पूछा कि वह बुत क्यों बनाना चाहते हैं तो आग-बगूला होकर बोली, 'हम रब के अलावा किसी और ख़ुदा को नहीं मानते। बछड़ा तो सिर्फ़ उसकी मुजस्सम सूरत है।' सफ़्फ़ूरा परेशान थी। "भला कोई कैसे सोच सकता है कि क़ादिरे-मुतलक़ एक बछड़े में रहना बरदाश्त करेगा। वह ख़ुदा जो इतना पाक है कि उसने अपने और लोगों के दरमियान हद बाँध दी थी कि कोई उसे पार करके उसके पास न आ सके क्या वह एक बछड़े में रहेगा? क्या वह अपने आपको इतना गिरा देगा कि ऐसी बेजान चीज़ में समा जाए जिसे छुआ और इधर-उधर ले जाया जा सकता है? मेरी बात याद रखना, कल

के जशन का नतीजा बद-अख़लाक़ी की सूरत में निकलेगा। ऐ मेरे बेटो! अपने बाप के अच्छे नमूने पर चलो और अल्लाह के सच्चे फ़रमाँबरदार बनो। हम यक़ीनन इस जशन में बिलकुल शरीक नहीं होंगे।"

अपनी माँ का अज़म देखकर इलियज़र की तबीयत कुछ सँभल गई। "अब्बू यक़ीनन लौट आएँगे और अगर हम अल्लाह के रास्ते पर चलते रहें तो हमें कुछ ख़ौफ़ नहीं होगा। अब्बू ने भी ऐसा ही कहा था।"

इतने में मरियम बीबी ज़ारो-क़तार रोती हुई आ पहुँचीं। "काश मूसा ही यहाँ होता! इस हुजूम को क़ाबू में रखने का इख़्तियार सिर्फ़ उसी को हासिल है। हारून को तो अपनी जान का ख़तरा है। उसने सोचा होगा कि जब मैं इस देवता को बनाने के लिए सोना माँगूँ तो वह अपना इरादा बदल लेंगे। लेकिन यह उसकी ग़लतफ़हमी थी। उनके नज़दीक उनके देवता से ज़्यादा क़ीमती कोई चीज़ नहीं। यह बदकार लोग ऐसा ख़ुदा माँगते हैं जिसके साथ वह जो चाहें सो करें। ख़ैमाबस्ती की फ़िज़ा तो पहले ही से बदी से आलूदा है। यह शैतान का दिन है। जब अल्लाह ने हमें शरीअत दे दी है और हमने उसको मानने का अहद कर लिया है तो इसके बाद वह किस तरह हमें बग़ैर सज़ा के छोड़ देगा? वह अपने अहकाम की अदूली को नज़रंदाज़ नहीं कर सकेगा। हम अपने दुश्मनों के सामने कैसा तमाशा बनेंगे!"

उधर हज़रत मूसा को पहाड़ की चोटी पर गए 40 दिन गुज़रते पता भी न चला। जिस वक़्त हज़रत हारून अफ़सोसनाक हद तक अल्लाह

से बेवफ़ा होने लगे उस वक़्त अल्लाह हज़रत मूसा के लिए इमामत के प्रोग्राम को तरतीब दे रहा था। उसने बड़ी तफ़सील के साथ मुलाक़ात के ख़ैमे यानी ख़ुदा के मक़दिस के बारे में बताया जिसे इसराईलियों को बनाना था।

फिर अचानक उनकी ख़ुशगवार शिराकत बुरी तरह बिगड़ गई। अल्लाह ने सख़्ती से हज़रत मूसा से कहा, "पहाड़ से उतर जा। तेरे लोग जिन्हें तू मिसर से निकाल लाया बड़ी शरारतें कर रहे हैं। वह कितनी जल्दी से उस रास्ते से हट गए हैं जिस पर चलने के लिए मैंने उन्हें हुक्म दिया था। उन्होंने अपने लिए ढाला हुआ बछड़ा बनाकर उसे सिजदा किया है। उन्होंने उसे क़ुरबानियाँ पेश करके कहा है, 'ऐ इसराईल, यह तेरे देवता हैं। यही तुझे मिसर से निकाल लाए हैं।'"

अल्लाह का क़हर भड़का। उसने पुकारकर मज़ीद कहा कि "मैंने देखा है कि यह क़ौम बड़ी हटधर्म है। अब मुझे रोकने की कोशिश न कर। मैं उन पर अपना ग़ज़ब उंडेलकर उनको रूए-ज़मीन पर से मिटा दूँगा। उनकी जगह मैं तुझसे एक बड़ी क़ौम बना दूँगा।"[1]

हज़रत मूसा सख़्त घबरा गए। यह कैसे हो सकता था जब इसराईल का सारा काम बड़े आराम से हो रहा था। उनके दिल की धड़कन तेज़ हो गई। अब इसराईल सज़ाए-मौत के लायक़ हो चुका था। हाय वह कितने गरदन कश लोग थे। उन्होंने कितनी ही बार हज़रत मूसा को तंक़ीद का

1 ख़ुरूज 32:7-10

निशाना बनाया था बल्कि हुजूम इस हद तक बाग़ी हो गया था कि ख़ुद उनको संगसार करने पर उतर आया था। लमहे-भर के लिए हज़रत मूसा के ज़हन में एक ख़याल कौंद गया, यह कि क्या बेहतर नहीं होगा अगर मेरे अपने घराने में से ख़ुदा से डरनेवाली एक नई क़ौम बने? लेकिन नहीं! यह कभी नहीं होने का, गो अल्लाह ने यही पेशकश की थी। हज़रत मूसा को यह बिलकुल मंज़ूर न था। अपनी इसी क़ौम के साथ एक होने के लिए ही तो वह अपनी तमाम तरह की शानो-शौकत पीछे छोड़ आए थे। उन्होंने अपनी मिसरी माँ को भी छोड़ दिया था जिससे वह बहुत प्यार करते थे। उन्होंने सोचा, अब मैं अपने भाइयों को किस तरह उनके हाल पर छोड़ सकता हूँ! वह तो मेरा एक हिस्सा बन चुकें हैं। अब न मैं उन्हें छोड़कर अपने अलग वुजूद का तसव्वुर कर सकता हूँ न ही मैं अपनी शानो-शौकत का ख़ाहाँ हूँ। मैं हर सूरत में अपनी क़ौम के दुख-सुख में बराबर का शरीक हूँगा।

जैसे ही उन्होंने अपने आपको उनमें से एक मान लिया उनकी ख़ामियाँ ख़ुद हज़रत मूसा की ख़ामियाँ और गुनाह बन गए। चुनाँचे उन्होंने पूरे दिल के साथ ख़ुदा से इसराईलियों के लिए मिन्नत करते हुए कहा, "ऐ रब, तू अपनी क़ौम पर अपना ग़ुस्सा क्यों उतारना चाहता है? तू ख़ुद अपनी अज़ीम क़ुदरत से उसे मिसर से निकाल लाया है। मिसरी क्यों कहें, 'रब इसराईलियों को सिर्फ़ इस बुरे मक़सद से हमारे मुल्क से निकाल ले गया है कि उन्हें पहाड़ी इलाक़े में मार डाले और यों उन्हें रूए-

ज़मीन पर से मिटाए'?" और फिर हज़रत मूसा की मिन्नत ज़ोरदार रंग पकड़ गई। "अगर तू उनको मार देगा तो उस वादे का क्या होगा जो तूने उनके बापदादा से किया है जिनके साथ तूने उनकी औलाद को फ़लस्तीन में ले जाने की क़सम खाई है?"[1]

हज़रत मूसा की मिन्नत-समाजत ने अल्लाह के ग़ुस्से की भड़कती आग को ठंडा कर दिया। ख़ुदा के बंदे ने यह जानकर सुख का साँस लिया कि वक़्ती तौर पर इसराईलियों के सर से मौत का हुक्म टल गया है। तो भी वह बोझल दिल के साथ अहद की दोनों लौहें सीने से लगाए पहाड़ पर से नीचे उतरे। अल्लाह ने अपने हाथ से उनकी दोनों तरफ़ दस अहकाम लिखे थे। हज़रत मूसा ने यह ख़ज़ाना बड़ी एहतियात से उठा रखा था।

रास्ते से कुछ नीचे हज़रत यशुअ ने एक मानूस शख़्स को नमूदार होते देखा। वह पूरे 40 दिन तक मुसलसल इंतज़ार करते आए थे। उनकी नज़र हज़रत मूसा के बाज़ुओं में सिमटे उस गिराँक़दर बोझ पर पड़ी तो उनके मुँह से ख़ुशी की चीख़ निकल गई, और वह हज़रत मूसा से मिलने के लिए दौड़कर बोले, "मालिक!" लेकिन फिर यकायक वह ठिठक गए। कोई बड़ी गड़बड़ हो गई होगी। हज़रत मूसा ने इशारे से अपने ख़ादिम के सलाम का जवाब दिया, लेकिन वह बड़ी तेज़ी से चलते गए। हज़रत यशुअ की मुतजस्सिस निगाहें अपने मालिक पर टिकी हुई थीं।

---

1 ख़ुरूज 32:11-13

रब के साथ गुज़ारे हुए उस तवील अरसे की मोहर अल्लाह के बंदे के चेहरे पर सब्त थी। उनसे जलाल और पाकीज़गी की रौशनी फूट रही थी। उस चमक और अपने मालिक के ग़मनाक तअस्सुरात से हज़रत यशुअ पर ख़ौफ़ तारी हो गया। उन्होंने अंदाज़ा लगाया कि रब के ख़ादिम के ज़हन पर कोई संजीदा बात सवार है।

उनका अंदाज़ा बिलकुल दुरुस्त निकला। अभी हज़रत मूसा को इस बात की पूरी तसल्ली नहीं थी कि अल्लाह इसराईलियों के इतने बड़े गुनाह को माफ़ भी करेगा कि नहीं। जब वह ख़ैमाबस्ती के बिलकुल क़रीब आ गए तो हज़रत यशुअ के कान खड़े हो गए। वह पुकार उठे, "ख़ैमागाह में जंग का शोर मच रहा है!"[1]

हज़रत मूसा इस शोर के बारे में ज़्यादा जानते थे। उन्होंने जवाब दिया, "न तो यह फ़तहमंदों के नारे हैं, न शिकस्त खाए हुओं की चीख़-पुकार। मुझे गानेवालों की आवाज़ सुनाई दे रही है।"[2]

अभी वह ख़ैमाबस्ती के बाहर ही थे कि उनकी नज़रों में एक अजीब मंज़र घूम गया। लोग नीम-दीवानगी के आलम में बछड़े के गिर्द नाच रहे थे। जब हज़रत मूसा ने यह सब कुछ देखा और उनके ख़ुशी से चीख़ने-चिल्लाने की आवाज़ें सुनीं तो वह आपे से बाहर हो गए। उन्होंने क़हर बरसाती नज़रों से उस घटिया हुजूम को देखा जिसके लिए वह अल्लाह के अहकाम का ख़ज़ाना लेकर आए थे। उनके हलक़ से एक ख़ौफ़नाक

1 ख़ुरूज 32:17
2 ख़ुरूज 32:18

चिंघाड़ निकली जिसको सुनते ही लोगों का दीवानापन हवा हो गया। ख़ौफ़ से फटी फटी नज़रों से उन्होंने रब के ख़ादिम को देखा जिसने इंतहाई ग़ुस्से में शरीअत की दोनों लौहें ज़मीन पर दे मरीं कि वह टुकड़े टुकड़े होकर बिखर गईं।

हुजूम के क़दम ज़मीन पर जमे रह गए। हज़रत मूसा लंबे लंबे डग भरते हुए उनकी तरफ़ बढ़े चले आए। बिना कुछ कहे उन्होंने इस क़ाबिले-नफ़रत मुजस्समे को घसीटा और इतने ज़ोर से पटख़ दिया कि वह पाश पाश हो गया। फिर उन्होंने लकड़ी और सोने के टुकड़े आग में फेंक दिए। लकड़ी तो जल गई जबकि सोना पिघल गया। ग़ुस्से से भड़कती हुई आँखों के साथ हज़रत मूसा ने राख और पिघले हुए सोने को चक्की के पाट में पेश कर सफ़ूफ़ बना दिया। उन्होंने इस सफ़ूफ़ को एक तालाब पर छिड़का और वही पानी इसराईलियों को पिलवाया।

हज़रत हारून जो क़ुरबानगाह पर खड़े काँप रहे अपने भाई की नफ़रत से भरी नज़रों के नीचे कुचल के रह गए। क्या हारून उनका वही भाई था जो कभी फ़िरऔन के पास उनके साथ गया था? अपने भाई की यह कैफ़ियत देखकर हज़रत मूसा का दिल फटकर ख़ून हो गया। उन्होंने अपने भाई से गरजकर कहा, “इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया कि तुमने उन्हें ऐसे बड़े गुनाह में फँसा दिया?”

हज़रत हारून ने सर नीचे लटकाए हुए जवाब दिया, “मेरे आक़ा। ग़ुस्से न हों। आप ख़ुद जानते हैं कि यह लोग बदी पर तुले रहते हैं।

उन्होंने मुझसे कहा, 'हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस बंदे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिसर से निकाल लाया।' इसलिए मैंने उनको बताया, 'जिसके पास सोने के ज़ेवरात हैं वह उन्हें उतार लाए।' जो कुछ उन्होंने मुझे दिया उसे मैंने आग में फेंक दिया तो होते होते सोने का यह बछड़ा निकल आया।"[1]

हज़रत मूसा के होंटों पर एक तलख़ मुसकराहट फैल गई। क्या बच्चों का-सा बहाना था! उनके भाई का फ़ैसला तो रब के हाथ में था। सबसे पहले एक काम फ़ौरी तौर पर करना था। उनकी मुतलाशी निगाहें मर्दों और औरतों के उस हुजूम पर ठहर गईं जो मैदान में जा बजा बिखरा हुआ था। बहुतों ने तो सरमस्ती में नाचते नाचते कपड़े भी उतार फेंके थे। कितना शर्मनाक मंज़र था!

क्या यही वह लोग थे जिनके लिए ख़ुद रब आसमान से नीचे उतर आया था? हज़रत मूसा को कितना अफ़सोस था! साबिक़ ग़ुलामों की इस भीड़ ने रब की कितनी तौहीन की थी! अपने दुश्मनों के सामने वह कैसा तमाशा बने रहे थे!

हज़रत मूसा लंबे लंबे डग भरते हुए लशकरगाह के दरवाज़े तक आए और नरसिंगे की-सी गरजदार आवाज़ से पुकारकर कहा,"जो भी रब का बंदा है वह मेरे पास आए।" जवाब में लावी के क़बीले के तमाम

1 ख़ुरूज 32:22-24

लोग उनके पास जमा हो गए। फिर मूसा ने उनसे कहा, “रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘हर एक अपनी तलवार लेकर ख़ैमागाह में से गुज़रे। एक सिरे के दरवाज़े से शुरू करके दूसरे सिरे के दरवाज़े तक चलते चलते हर मिलनेवाले को जान से मार दो, चाहे वह तुम्हारा भाई, दोस्त या रिश्तेदार ही क्यों न हो। फिर मुड़कर मारते मारते पहले दरवाज़े पर वापस आ जाओ।’”[1]

बनी लावी मुजरिमों को अच्छी तरह जानते थे। उन्होंने बेरहमी से मर्दों, औरतों और बूढ़ों को घसीट घसीटकर मारा। हर तरफ़ लशकरगाह में आहो-बका का शोर बुलंद हुआ। दिन ग़ुरूब होने तक 3000 मर्द-ख़वातीन मारे जा चुके थे।

इस क़त्ले-आम के बाद हज़रत मूसा ने बनी लावी से कहा, “आज अपने आपको मक़दिस में रब की ख़िदमत करने के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करो, क्योंकि तुम अपने बेटों और भाइयों के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए तैयार थे। इसलिए रब तुमको आज बरकत देगा।”[2]

उस रात हज़रत मूसा की आँखों से नींद कोसों दूर रही। वह बेचैन थे कि क्या रब इसराईलियों को ज़िंदा छोड़ेगा कि नहीं। पहाड़ पर गुज़ारे हुए 40 दिनों में रब ने अपने ख़ादिम से कफ़्फ़ारे के बारे में बहुत-सी बातें की थीं। उस वक़्त अपनी उम्मत से उनकी वालिहाना मुहब्बत ने

1 ख़ुरूज 32:26-27
2 ख़ुरूज 32:29

उनके ख़यालात के धारे का रुख़ सिर्फ़ एक तरफ़ ही मोड़ दिया। “मैं उनके गुनाहों का ख़ुद कफ़्फ़ारा दूँगा।”

अगली सुबह रवाना होने से पहले हज़रत मूसा ने इसराईलियों से मुख़ातिब होते हुए कहा, “तुमने निहायत संगीन गुनाह किया है। तो भी मैं अब रब के पास पहाड़ पर जा रहा हूँ। शायद मैं तुम्हारे गुनाह का कफ़्फ़ारा दे सकूँ।”[1] यह बात बड़ी मुहब्बत से कही गई थी लेकिन कोई भी उनके इरादे से वाक़िफ़ न था। हज़रत मूसा फ़ैसला कर चुके थे। सवाल सिर्फ़ यह था कि आया अल्लाह इस ख़ताकार क़ौम की जगह उनको क़बूल करेगा भी कि नहीं।

जब वह दुबारा अपने रब के हुज़ूर खड़े हुए तो बड़े दुख के साथ कहने लगे, “हाय, इस क़ौम ने निहायत संगीन गुनाह किया है। उन्होंने अपने लिए सोने का देवता बना लिया। मेहरबानी करके उन्हें माफ़ कर ...” उनसे जुमला पूरा न हो सका। उनके दिल में जज़बात का तूफ़ान उमड रहा था और फिर अपनी उम्मत के लिए मुहब्बत छलक ही पड़ी, “लेकिन अगर तू उन्हें माफ़ न करे तो फिर मुझे भी अपनी उस किताब में से मिटा दे जिसमें तूने अपने लोगों के नाम दर्ज किए हैं।”[2]

अपनी उम्मत से ऐसी वालिहाना मुहब्बत को देखकर रब को हज़रत मूसा पर बहुत प्यार आ गया। तो भी उसने जवाब दिया, “मैं सिर्फ़

1 ख़ुरूज 32:30
2 ख़ुरूज 32:31-32

उसको अपनी किताब में से मिटाता हूँ जो मेरा गुनाह करता है।"[1] और फिर कहा, "इस जगह से रवाना हो जा। उन लोगों को लेकर जिनको तू मिसर से निकाल लाया है उस मुल्क को जा जिसका वादा मैंने इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से किया है। उन्हीं से मैंने क़सम खाकर कहा था, 'मैं यह मुल्क तुम्हारी औलाद को दूँगा।' मैं तेरे आगे आगे फ़रिश्ता भेजकर कनानी, अमोरी, हित्ती, फ़रिज़्ज़ी, हिव्वी और यबूसी अक़वाम को उस मुल्क से निकाल दूँगा। ... तुम इतने हटधर्म हो कि अगर मैं साथ जाऊँ तो ख़तरा है कि तुम्हें वहाँ पहुँचने से पहले ही बरबाद कर दूँ।"[2]

मतलब था कि अल्लाह इसराईलियों में काम करता रहेगा। फिर भी हज़रत मूसा को सख़्त परेशानी हुई, क्योंकि अल्लाह ने इसराईल को "तेरे लोग" कहकर पुकारा था। इससे भी परेशानकुन बात यह थी कि ख़ुदा मज़ीद उनके साथ चलने पर राज़ी न था। भला एक फ़रिश्ता अल्लाह की हुज़ूरी का बदल क्योंकर हो सकता था? लोग इस अफ़सोसनाक ख़बर को सुनकर निहायत ग़मगीन हुए। सभों ने अपने ज़ेवर उतारे। क्योंकि रब ने मूसा से कहा था, "इसराईलियों को बता कि तुम हटधर्म हो। अगर मैं एक लमहा भी तुम्हारे साथ चलूँ तो ख़तरा है कि मैं तुम्हें तबाह कर दूँ। अब अपने ज़ेवरात उतार डालो। फिर मैं फ़ैसला करूँगा कि तुम्हारे साथ क्या किया जाए।"[3]

---

1 ख़ुरूज 32:33
2 ख़ुरूज 33:1-3
3 ख़ुरूज 33:5

उस वक़्त मूसा ने ख़ैमा लेकर उसे कुछ फ़ासले पर ख़ैमागाह के बाहर लगा दिया। उन्होंने उसका नाम 'मुलाक़ात का ख़ैमा' रखा। उन्हें यक़ीन था कि सिर्फ़ दुआ ही से सज़ा को रोका जा सकता है। उनका ख़ैमा पहाड़ की चोटी पर अल्लाह के साथ मुलाक़ात करने का आरिज़ी मुतबादिल था। अब लशकरगाह को उनकी निगरानी की ज़रूरत थी। जब वह बाहर ख़ैमे की तरफ़ जाते तो सब लोग उठकर अपने अपने डेरे के दरवाज़े पर खड़े हो जाते और आपस में सरगोशियाँ करने लगते कि हज़रत मूसा हमारी शफ़ाअत करने जा रहे हैं।

जब हज़रत मूसा ख़ैमे के अंदर दाख़िल हो जाते और परदा गिर जाता तो बादल का सतून उतरकर ख़ैमे के दरवाज़े पर खड़ा रहता और रब अपने बंदे से बातें करने लगता जैसे कोई अपने दोस्त से बात करता है। जो भी अल्लाह का तालिब होता उस जगह आ जाता था। लोग हज़रत मूसा को ख़ैमे और लशकरगाह के दरमियान आते-जाते देखते रहते थे। लेकिन हज़रत यशुअ ख़ैमे ही में रहते थे।

अल्लाह से एक मुलाक़ात में हज़रत मूसा ने उस बात का ज़िक्र कर ही दिया जो उनके ज़हन पर बड़ा बोझ था। वह कहने लगे, "देख, तू मुझसे कहता आया है कि इस क़ौम को कनान ले चल। लेकिन तू मेरे साथ किस को भेजेगा? तूने अब तक यह बात मुझे नहीं बताई हालाँकि तूने कहा है, 'मैं तुझे बनाम जानता हूँ, तुझे मेरा करम हासिल हुआ है।' अगर मुझे वाक़ई तेरा करम हासिल है तो मुझे अपने रास्ते दिखा ताकि

मैं तुझे जान लूँ और तेरा करम मुझे हासिल होता रहे। इस बात का ख़याल रख कि यह क़ौम तेरी ही उम्मत है।”[1]

रब ने बड़े प्यार से हज़रत मूसा को जवाब में कहा, “मैं ख़ुद तेरे साथ चलूँगा और तुझे आराम दूँगा।”[2]

हज़रत मूसा ने सीधे कहा, “अगर तू ख़ुद साथ नहीं चलेगा तो फिर हमें यहाँ से रवाना न करना। अगर तू हमारे साथ न जाए तो किस तरह पता चलेगा कि मुझे और तेरी क़ौम को तेरा करम हासिल हुआ है? हम सिर्फ़ इसी वजह से दुनिया की दीगर क़ौमों से अलग और मुमताज़ हैं।”[3]

इस पर रब ने जवाब दिया, “मैं तेरी यह दरख़ास्त भी पूरी करूँगा, क्योंकि तुझे मेरा करम हासिल हुआ है और मैं तुझे बनाम जानता हूँ।”[4]

अब ख़ुदा के बंदे के दिल में उस पुर-जलाल हस्ती को देखने की शदीद ख़ाहिश पैदा हुई। गो रब हज़रत मूसा से रूबरू हमकलाम होता था तो भी उन्होंने अभी तक ख़ुदा का चेहरा नहीं देखा था। पस उन्होंने रब से मिन्नत करते हुए कहा, “बराहे-करम मुझे अपना जलाल दिखा।”[5]

रब ने बड़ी शफ़क़त से जवाब दिया, “मैं अपनी पूरी भलाई तेरे सामने से गुज़रने दूँगा और तेरे सामने ही अपने नाम रब का एलान करूँगा।

---

1 ख़ुरूज 33:12-13
2 ख़ुरूज 33:14
3 ख़ुरूज 33:15-16
4 ख़ुरूज 33:17
5 ख़ुरूज 33:18

...लेकिन तू मेरा चेहरा नहीं देख सकता, क्योंकि जो भी मेरा चेहरा देखे वह ज़िंदा नहीं रह सकता।"[1]

1 ख़ुरूज 33:19-20

ख़ैमाबस्ती में अल्लाह की हुज़ूरी

रौशनी की पहली किरन के साथ ही हज़रत मूसा ने मशहूर पहाड़ी रास्ते पर चढ़ना शुरू कर दिया। इसराईलियों की नज़रें उनका ताक़्क़ुब करती रहीं। काश हज़रत मूसा तोड़े हुए अहद की फिर से तजदीद कर पाएँ! अपने एक हाथ से उन्होंने दो पत्थर की लौहें थाम रखी थीं जबकि दूसरा बरकत देने के अंदाज़ में ऊपर उठा हुआ था। फिर वह इसी तरह नज़रों से ओझल हो गए। हज़रत मूसा ने वह दोनों लौहें ख़ुद अपने हाथों से तराशी थीं। अल्लाह नए सिरे से 10 अहकाम लिखने को राज़ी हुआ था।

सुबह की रौशनी से पहाड़ों की सुरमई चोटियाँ मुनव्वर हो रही थीं। अब सूरज पहाड़ की चोटी पर से पूरी तरह दिखाई देने लगा, गोया वह यह पैग़ाम लेकर तुलू हुआ कि “अल्लाह कितना भला है कि वह अपना सूरज बद और नेक दोनों पर चमकाता है।” दिल में ख़ुदा का जलाल देखने की शदीद ख़ाहिश लिए हज़रत मूसा अपने रास्ते पर चलते रहे।

काश वह इस मुलाक़ात की मारिफ़त रब को और भी बेहतर तौर से जान जाएँ। जितना ज़्यादा वह अल्लाह को जान जाता उतना ज़्यादा उसके साथ ज़्यादा गहरी रिफ़ाक़त की आरज़ू बढ़ जाती। उनके साथ कोई भी न था। न ही पहाड़ के क़रीब कोई था, न इनसान न हैवान। ख़ैमाबस्ती को हज़रत यशुअ के सुपुर्द करके हज़रत मूसा के दिल का बोझ उतर गया था।

आख़िर वह घड़ी भी आ पहुँची जिसका उन्हें शिद्दत से इंतज़ार था। जब उन्होंने बादल को उतरते हुए देखा तो वह जान गए कि उस बादल में से रब मुझ पर ज़ाहिर होगा। फिर उनको अपने पास उस पाक हस्ती की मौजूदगी का एहसास हुआ। अल्लाह ने हज़रत मूसा को चटान के शिगाफ़ में पनाह दे रखी ताकि वह बग़ैर किसी नुक़सान के उसके क़रीब खड़े हो सकें। फिर वह उनके सामने से यह पुकारता हुआ गुज़रा, "रब, रब, रहीम और मेहरबान ख़ुदा। तहम्मुल, शफ़क़त और वफ़ा से भरपूर। वह हज़ारों पर अपनी शफ़क़त क़ायम रखता और लोगों का क़ुसूर, ना-फ़रमानी और गुनाह माफ़ करता है। लेकिन वह हर एक को उसकी मुनासिब सज़ा भी देता है।"[1]

मूसा ने जल्दी से झुककर सिजदा किया। उसने कहा, "ऐ रब, अगर मुझ पर तेरा करम हो तो हमारे साथ चल। बेशक यह क़ौम हटधर्म है,

1 ख़ुरूज 34:6-7

तो भी हमारा क़ुसूर और गुनाह माफ़ कर और बख़्श दे कि हम दुबारा तेरे ही बन जाएँ।”[1]

अल्लाह ने अपने बारे में जो कुछ कहा था उसको साबित भी कर दिया। उसने अपने अहद को जो इसराईलियों ने तोड़ दिया था फिर से बाँधा। एक तरफ़ तो उसने अपने आपको अपने अहद का पाबंद कर लिया जबकि दूसरी तरफ़ इसराईलियों का फ़र्ज़ था कि वह उस पर भरोसा रखें और उसका हुक्म मानें।

जब हज़रत मूसा ने रब की रिफ़ाक़त में 40 दिन और 40 रातें गुज़ारीं तो इस दौरान उनको खाने-पीने की हाजत न हुई। इसके बजाए रब और हज़रत मूसा के दरमियान उन आईन के बारे में गुफ़्तगू होती रही जिनके मुताबिक़ इसराईलियों को ज़िंदगी गुज़ारनी थी। इस क़रीबी रिफ़ाक़त के दौरान हज़रत मूसा को बहुत-से सवालों के जवाब भी मिले। रब ने अपनी पूरी तसल्ली कर ली कि उसकी शरीअत समझ में आ गई है। और हज़रत मूसा ने भी जान लिया कि यह शरीअत लोगों पर बोझ बनाकर लादी नहीं गई बल्कि उनको महफ़ूज़ रास्ते पर चलाने के लिए एक मददगार की हैसियत रखती है। शरीअत के यह उसूल उन्हें एक दूसरे के साथ निपटने में मदद देंगे। हाँ, इससे पूरी दुनिया को बरकत मिलेगी। हज़रत मूसा रब की हुज़ूरी से इस क़दर मग़लूब हुए कि उनका चेहरा पाक ख़ुदा की मौजूदगी में चमकने लगा।

---

1 ख़ुरूज 34:8-9

आख़िरकार यह इलाही रिफ़ाक़त अंजाम को पहुँची और हज़रत मूसा बड़े ख़ुशबाश पहाड़ से नीचे उतरने लगे। इस बार वह अपने लोगों के लिए एक नई उम्मीद लेकर आ रहे थे। उनके हाथों में पत्थर की दो सिलें थीं जिन पर रब ने नए सिरे से 10 अहकाम लिखे थे। इसके अलावा वह अपने साथ अल्लाह के आईन भी लाए थे। उनके ज़हन में मुलाक़ात के ख़ैमे का नक़्शा भी था जिसमें इसराईलियों की ख़ुदा के साथ मुलाक़ात हो सकती थी।

इस बार हज़रत मूसा की वापसी कितनी मुख़्तलिफ़ थी। आज वह ख़ुशख़बरी के पयांबर बनकर आ रहे थे। इतनी बुलंदी से ख़ैमाबस्ती के लोग नन्ही नन्ही च्यूँटियों की तरह दिखाई दे रहे थे। हज़रत मूसा ने ठंडी आह भरकर सोचा अगर ख़ुद मेरी नज़र में वह इतने छोटे हैं तो फिर अल्लाह की नज़र में वह क्या होंगे। लेकिन यह कितनी अज़ीम बात है कि ख़ुदा की नज़र में नसले-आदम बहुत ही गिराँक़दर है। क्योंकि उसने उसको अपनी शबीह पर बनाया ताकि वह उससे मुहब्बत करने और उसके साथ रिफ़ाक़त रखने के क़ाबिल हो।

नीचे ख़ैमाबस्ती में जब हज़रत मूसा पहुँचे तो आन की आन में तमाम इसराईली जमा हो गए। अल्लाह के बंदे के चेहरे पर एक पिदराना मुसकराहट फैल गई। अचानक सारी जमात डर के मारे चीख़ते हुए दूर दूर तक बिखर गई, यहाँ तक कि वह 70 बुज़ुर्ग भी काँपते हुए पीछे

हट गए। उनमें से किसी ने पुकारकर कहा, "हम पर अफ़सोस, उनके चेहरे से तो ख़ुदा के जलाल का नूर फूट रहा है।"

अब हज़रत मूसा की समझ में आने लगा कि असल मामला क्या है। अल्लाह के बंदे ने उनको वापस बुलाते हुए कहा, "डरो नहीं मेरे पास आओ।" पहले बुज़ुर्ग झिजकते झिजकते वापस लौटे फिर आहिस्ता आहिस्ता बाक़ी लोग भी उनके पीछे पीछे आ गए जब उन्हें मालूम हुआ कि डरने की कोई बात नहीं है। ख़ुदा ने हमें माफ़ करके अहद की तजदीद कर दी है। इस ख़ुशख़बरी से उनके चेहरों पर मुसकराहट फैल गई। उन्हें यों महसूस हुआ जैसे कंधों से भारी बोझ उतर गया है। हज़रत मूसा क़ौम को अल्लाह के आईन बताने लगे तो सब बड़े ग़ौर से सुनते गए।

"अब सुनो कि हमारे बादशाह ने क्या फ़ैसला किया है," हज़रत मूसा ने मुसकराकर कहा। गो लोगों में उनकी तरफ़ देखने की हिम्मत न हुई तो भी वह उनकी बातों की तरफ़ और ज़्यादा मुतवज्जिह हो गए। जमात में हैरत फैल गई—अल्लाह चाहता है कि हम उसके लिए एक ख़ैमा बनाएँ ताकि वह हमारे दरमियान सुकूनत करे। हज़रत मूसा ने फ़रमाया, "रब ने नौजवान बज़लियेल को इस काम का मुख़तार ठहराया है। उसका मुआविन उहलियाब होगा।" यह सुनकर जमात ने लमहे-भर के लिए नज़रें उठाकर देखने की जुर्रत की। सबने इस बात को मंज़ूर करते हुए हाँ में सर हिला दिया। बज़लियेल को मिसर के बेहतरीन ज़रगरों और जवाहरात के माहिरीन ने तरबियत दी थी। उहलियाब क़िरमिज़ी कपड़ों

में नक़्श बुनने में माहिर था। दोनों को इख़्तियार दिया गया कि मुलाक़ात के ख़ैमे के लिए मज़ीद दस्तकारों का इंतख़ाब करें। लोगों को बताया गया कि तमाम नज़राने उनके हवाले करें। दोनों ने बड़ी ख़ुशी से अपनी सलाहियतों को इस ख़िदमत के लिए वक़्फ़ कर दिया।

हज़रत मूसा ने लोगों को उन ज़रूरी चीज़ों की फ़हरिस्त दी जो वह ला सकते थे। लेकिन ज़रूरी था कि वह क़ादिरे-मुतलक़ के हुज़ूर हर चीज़ को कमाल रज़ामंदी से पेश करें। जब सब छोटे-बड़े अपने नज़राने लाने लगे तो हज़रत मूसा इस गहमा-गहमी को बड़ी दिलचस्पी से देखने लगे। लेकिन लोगों के साथ बात करते वक़्त उनको अपने चमकते चेहरे को ढाँपना पड़ा। वह अपना निक़ाब सिर्फ़ उस वक़्त उतारते जब रब के साथ हमकलाम होते थे।

अब औरतें अपनी बेटियों के साथ सोने और चाँदी के ज़ेवरात से भरी हुई संदूक़चियाँ लिए आने लगीं। एक नन्ही बच्ची जो बड़े प्यार से अपनी उँगली में पड़ी हुई अंगूठी को सहला रही थी उसे उतारते हुए बोली, “अम्मी जी! मैं यह अंगूठी रब को देना चाहती हूँ।” उसकी माँ ने बड़े प्यार से उसे थपथपाया, और इर्दगिर्द खड़े हुए लोगों ने उसे भरपूर शाबाश दी। जब नौजवान राख़िल अपना सोने का हार लेकर आई तो सब लोग दम बख़ुद रह गए। राख़िल के शौहर ने चीज़ों के ढेर पर अपना सोने का कड़ा रखते हुए कहा, “क़ीमती से क़ीमती चीज़ ही रब के लायक़ है।”

दबोरा और मिलकाह भी बाबा याक़ूब और जाद के पीछे पीछे चली आईं। नन्हे इसहाक़ ने गोल-मटोल-से हाथ में एक थैली पकड़ी हुई थी जो उसकी माँ उससे लेने की कोशिश कर रही थी। जब उसके बाप ने एक चिड़िया की तरफ़ इशारा किया तो उसकी तवज्जुह बट गई और नन्हा-सा हाथ धीला पड़ गया। जब उस ख़ानदान ने थैली में से एक एक करके सोने की क़ीमती चीज़ें उस ढेर पर रखने के लिए निकालीं तो उनकी ख़ुशी का कोई ठिकाना न था। एक हार था जिसमें क़ीमती पत्थर बड़ी ख़ूबसूरती से जड़े हुए थे, असली मोतियों के आवेज़े और सोने के भारी कंगन भी थे। उनके पास दूसरों के मुक़ाबले में ज़्यादा ज़ेवर न था, लेकिन इस नाक़ाबिले-यक़ीन ख़याल ने उन्हें अपना सब कुछ देने पर उकसाया था कि क़ादिरे-मुतलक़ हमारे दरमियान सुकूनत करना चाहता है।

कई दिन तक लोगों का रेला सोना-चाँदी, ताँबा, आसमानी, अरग़वानी और सुर्ख़ रंग के कपड़े, बारीक बुना हुआ कतान, बकरियों का ऊन, मेंढों की सुर्ख़ रँगी हुई खालें और तख़स की खालें, कीकर की लकड़ी, शमादानों के लिए तेल, मसह करने के तेल के लिए मसाला, ख़ुशबूदार बख़ूर और इमामों के लिबास और सीनाबंद के लिए जवाहर लेकर आता रहा। आख़िरकार हज़रत मूसा ने तमाम लशकरगाह में एलान करवाया कि "ज़रूरत से कहीं ज़्यादा सामान और दस्तकार जमा हो गए हैं।" तब लोगों ने नज़राने लाने बंद कर दिए।

ख़ैमाबस्ती में पहले कभी इतनी मुसर्रत से मामूर फ़िज़ा नहीं देखी गई थी। उनकी बातें, उनका काम, उनके ख़यालात सबका मेहवर सिर्फ़ रब ही था। उनके बहुत-से झगड़े ख़त्म हो चुके थे। जो लोग एक दूसरे से कतराकर गुज़र जाया करते थे वह अब शाना बशाना काम करके आपस की कारकरदगी को सराह रहे थे।

खजूर की टहनियों से बने हुए सायबानों के नीचे जवान और बुज़ुर्ग औरतें बकरियों का ऊन कात रही थीं और मुलाक़ात के ख़ैमे के लिए परदे बुन रही थीं। चूँकि इस ख़ैमे को एक जगह से दूसरी जगह ले जाना था इसलिए परदे ग्यारह टुकड़ों के थे जिन्हें ताँबे के कुंडों के साथ जोड़ा जाता था।

औरतें बैठकर अपने गुज़रे वक़्त के क़िस्से दोहराया कर रही थीं जब मिसर में उनसे सख़्त काम करवाया जाता और सारा दिन उन पर कोड़े का ख़ौफ़ छाया रहता था। इसके मुक़ाबले में रब का काम गीत गाते, बातें करते और रब के अज़ीम कामों को याद करते हुए हो रहा था। एक औरत अपनी साथी को काम सिखाती या उसकी मदद कर देती थी। बहुत-से लोग काम में हाथ बटाना चाहते थे इसलिए उनकी बारी लगी हुई थी। मिलकाह भी रब का काम करने के लिए दिल के हाथों मजबूर होकर अपनी बारी से काम कर रही थी।

उसी दौरान दबोरा बच्चे की देख-भाल में मसरूफ़ थी। उसकी आँखें यह देखकर ख़ुशी से चमक उठीं कि ख़ैमाबस्ती में यक-जिहती की

पुरमुसर्रत फ़िज़ा छाई हुई है। यक़ीनन रब ख़ुद अपने फ़रज़ंदों से ख़ुश होगा।

हर शोबे के कारीगरों से ठनठनाने, हथोड़े चलने और मेहनत-मशक़्क़त की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं।

बज़लियेल मुसलसल हज़रत मूसा से मशवरा करता रहा ताकि हर चीज़ रब की हिदायत के मुताबिक़ बनाई जाए। लाज़िम था कि हर चीज़ अल्लाह की ऐन हिदायत के मुताबिक़ हो, क्योंकि मक़दिस की हर चीज़ किसी रूहानी हक़ीक़त की अक्कासी करती थी।

आख़िरकार यह अज़ीम काम अंजाम को पहुँचा। तमाम इसराईलियों को कितनी ख़ुशी हुई, क्योंकि इस काम में सबने हिस्सा लिया था। हज़रत मूसा को मुलाक़ात के ख़ैमे को खड़ा करते देखकर उनकी आँखें फ़ख़्र से चमक उठीं। अल्लाह के बंदे के लिए भी यह फ़ख़्र का मक़ाम था कि मुलाक़ात का ख़ैमा पूरी तरह से तैयार खड़ा है। उन्होंने रब के हुक्म के ऐन मुताबिक़ उसे बनवाया था। यह बेशक़ीमत और ख़ूबसूरत ख़ैमा रब के लिए इसराईलियों की मुहब्बत का शाहकार था।

फिर लोगों के देखते ही मुलाक़ात का ख़ैमा रब के जलाल से मामूर हुआ। हज़रत मूसा भी ख़ैमे में दाख़िल न हो सके। उस वक़्त से बादल का सतून मुलाक़ात के ख़ैमे पर छाया रहा जो कि रब की हुज़ूरी का निशान था।

यह वलवलाख़ेज़ दिन बीत गया, और ख़ैमागाह में ख़ामोशी छा गई। जब लोग सो गए तो बादल का सतून मुलाक़ात के ख़ैमे पर ठहरा रहा। ख़ैमाबस्ती उसकी रौशनी में डूबी रही—रब अपने लोगों की रखवाली करता रहा। वह उनके क़रीब आकर उनकी ज़िंदगी में शरीक होना चाहता था। मुलाक़ात का ख़ैमा और उसकी हर चीज़ से वह अपने बारे में कुछ गहरे ख़यालात सिखाना चाहता था।

फिर वह यादगार दिन भी आया जब हज़रत मूसा ने हज़रत हारून और उनके दोनों बेटों को इमाम की ख़िदमत के लिए मख़सूस किया। इस मौक़े पर सारी जमात मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर जमा हो गई। सबने बड़ी संजीदगी से देखा जब हज़रत मूसा ने हज़रत हारून को ग़ुस्ल दिया, मसह किया और फिर इमाम के मख़सूस कपड़े पहनाए। हज़रत हारून के बेटों के साथ भी ऐसा ही किया गया। इसराईली कितने मुतअस्सिर हुए जब हज़रत हारून ने कहानत के लिबास में आगे क़दम बढ़ाया और अपने हाथ ऊपर उठाकर कहने लगे, “रब तुझे बरकत दे और तेरी हिफ़ाज़त करे। रब अपने चेहरे का मेहरबान नूर तुझ पर चमकाए और तुझ पर रहम करे। रब की नज़रे-करम तुझ पर हो, और वह तुझे सलामती बख़्शे।[1]

लोगों ने एहतराम से सर झुका दिया, और उनके दिल रब के इतमीनान से मामूर हुए।

---

1 गिनती 6:24-26

शदीद मायूसी

इसराईलियों को दश्ते-सीना में रहते हुए पूरा एक साल हो चुका था। उन्हें इस जगह से प्यार हो गया था बल्कि वह तो अब उनका घर ही बन चुका था। उस रोज़ दोपहर के वक़्त औरतें मामूल के मुताबिक़ खजूर के दरख़्त के साय में ख़ुश-गप्पियों में मसरूफ़ अपने सुहाने सपनों में खोई हुई थीं। जाद की दादी दबोरा जो चरख़ा कातने में मगन थी बड़ी ही हैरत से सर झटकते हुए बोली, “मुझे तो अभी तक यक़ीन ही नहीं आता। इतना अरसा गुज़र जाने के बाद भी हमारे जूते, हमारे कपड़े बिलकुल वैसे के वैसे ही हैं। यह मोजिज़ा नहीं है क्या?”

जाद की बीवी मिलकाह अपनी छोटी बहन सारा के पास बैठी थी जो अपनी छोटी बेटी के लिए कपड़े सी रही थी। उसने अपनी सिलाई गोद में रख ली और कहने लगी, “मिलकाह, काश रब हमें इस वक़्त उस सरज़मीन में ले जाए जिसका उसने वादा किया है। मुझे तो सिर्फ़ अपने ज़ाती घर की देख-भाल करने से ही पूरी ख़ुशी मिलेगी। छोटा-सा बाग़ीचा

हो जिसकी मैं बाग़बानी करूँ। घर में मुरग़ियाँ कड़कड़ाती फिरें।" फिर ठंडी साँस भरकर कहने लगी, "न तो यों न ख़त्म होनेवाला भटकना हो न ही पुरहुजूम ख़ैमाबस्ती हो। बस ज़िंदगी मामूल के मुताबिक़ आराम से गुज़र रही हो।"

दबोरा हँसते हुए कहने लगी, "मेरे शौहर याक़ूब तो ख़यालों में अपने आपको अपने पोते के साथ अपने ताकिस्तानों और खेतों में काम करता ही देखते रहते हैं। उन्होंने कई बार अंजीर के दरख़्त का ज़िक्र भी किया है जिसके साय में वह आराम किया करेंगे।" फिर उसने बड़े एतमाद से बात जारी रखते हुए बताया, "अब और ज़्यादा देर नहीं लगेगी।"

उम्ररसीदा राख़िल ताईद में सर हिलाए जा रही थी। उसके झुर्रियों भरे चेहरे में धँसी धुँधलाई हुई आँखें बहुत उदास लग रही थीं। वह सूरज की तमाज़त से बचने के लिए एक हाथ से अपनी आँखों को बचा रही थी। "आह! हज़रत हारून के बेटों की बेवाओं के लिए यह जगह छोड़ना अच्छा ही होगा। कितना ख़ौफ़नाक अंजाम हुआ उनका!"

कुछ देर के लिए फ़िज़ा में बोझल-सी ख़ामोशी छा गई। उन्होंने बड़े दुख से उस दिन को याद किया जब रब की आग ने उन दोनों इमामों को भस्म कर दिया। वह औरतें दुख भरी आहें भरने लगीं। आख़िर उन इमामों ने रब की ख़िदमत में इतनी बेपरवाई क्यों बरती?

नेकफ़ितरत दीना जो बुज़ुर्ग राख़िल की पोती थी अपने बच्चे को छाती से लगाए दूध पिला रही थी। वह कहने लगी, "इस बार रवाना

होते वक़्त बहुत-सी तबदीलियाँ होंगी। ऐसा ही है ना मरियम बाजी?" उसकी नज़रें हज़रत मूसा की बहन बीबी मरियम को तलाश कर रही थीं।

हर एक महसूस कर रही थी कि बीबी मरियम अब कुछ बदली बदली-सी है। उनकी तबीयत बोझल बोझल लग रही थी। सारी नज़रें प्यारी मरियम की तरफ़ उठ गईं जो उनसे अच्छी तरह मानूस थी और उनके दुख-तकलीफ़ों से भी ख़ूब वाक़िफ़ थी। उनका चाक़ो-चौबंद जिस्म इतना अरसा गुज़र जाने पर भी ढलका नहीं था। अभी भी वह काफ़ी मज़बूत थीं। तो भी वक़्त गुज़रने के साथ साथ हज़रत मूसा का सब पर मुकम्मल इख़्तियार देखकर वह परेशान-सी होने लगीं। आख़िर वह अपने इस मंसब में उसे और हारून को शामिल क्यों नहीं कर लेते?

लमहे-भर के लिए यों लगा जैसे मरियम बीबी अपनी नाख़ुशी को यकसर भूल चुकी हैं लेकिन फिर उन्होंने बड़े इख़्तियार से जवाब देते हुए कहा, "जब हम सीना में आए थे तो महज़ ग़ुलामों का एक जत्था थे। लेकिन यहाँ से कूच के वक़्त हम एक मुनज़्ज़म क़ौम होंगे। रब के हुक्म के मुताबिक़ हमारे नौजवान सख़्त फ़ौजी तरतीब में आगे बढ़ेंगे।"

बुज़ुर्ग दबोरा ने मरियम बीबी को ग़ौर से देखते हुए कहा, "आपको अपने भाई मूसा के बोझ का बड़ा एहसास होगा। यहाँ तो उन्हें पहले से भी ज़्यादा मसरूफ़ियत ने घेर रखा है। हिम्मत करो अच्छी बहना। इस पहाड़ की चढ़ाइयाँ अब जल्द ही ख़त्म हो जाएँगी।"

“हाँ, हाँ, मूसा तो बहुत ही ख़ुश होगा।” मरियम बीबी ने ज़रा तंज़न कहा और चली गईं। औरतें उन्हें जाते हुए देखती रह गईं। तो क्या वह हज़रत मूसा के बारे में नाख़ुश थीं?

बुज़ुर्ग राख़िल अपने पोपले मुँह को भींचते हुए बोली, “हाय, हाय। हज़रत मूसा को कितने दुख से गुज़रना पड़ा। बच्चा ही थे कि घराने से बिछड़ गए और महल में परवरिश पाई। शायद अभी तक वह अपने घर में अजनियत महसूस करते हों। यक़ीनन अभी तक उनका दिल अपनी मिसरी माँ में ही अटका हुआ है।” बिला-शुबहा वह अच्छी तरह से जानती थीं कि हज़रत मूसा को अपनी बहन से बहुत मुहब्बत थी और एक तरह से वह माँ की कमी पूरी कर रही थीं।

दबोरा ने अपना चरख़ा एक तरफ़ रख दिया। “बाज़ औक़ात तो मुझे हज़रत मूसा पर तरस आता था। उनकी नज़र में इसराईल की सरदारी ही सब कुछ है ख़ाह उनकी इज़दिवाजी ज़िंदगी इससे कितनी ही मुतअस्सिर क्यों न हो। उन्हें हर हाल में अल्लाह की बुलाहट के तैयार रहना होता है। इसी लिए वह हज़रत यशुअ के साथ अलहदा ख़ैमे में रहते हैं। बेशक वह अपने घरवालों से भी मिलने जाते हैं और सफ़्फ़ूरा हैरतअंगेज़ तौर पर उनसे मुफ़ाहमत रखती है ... फिर भी।”

ठीक दूसरे साल के दूसरे महीने के बीसवें दिन बादल का सतून मुलाक़ात के ख़ैमे पर से उठ गया। यह उनके कूच का इशारा था।

दो नक़ीबों ने साँस बाँधकर लंबा नरसिंगा फूँका जिसको सुनते ही सब सरदार और बुज़ुर्ग जमा हो गए। हज़रत मूसा ने उनको कूच से मुताल्लिक़ हिदायात दीं। अब नरसिंगे की आवाज़ एक मुसलसल ज़ोरदार आवाज़ में बदल गई जिस पर सारा लशकर इजतमा के मक़ाम पर आ गया। जब वह सब इकट्ठे हो गए तो नरसिंगे की आख़िरी आवाज़ ने कूच का एलान कर दिया।

मुलाक़ात के ख़ैमे को समेटते वक़्त इमाम ने अहद के संदूक़ को भी सफ़र के लिए तैयार किया। अहद के संदूक़ में अहकाम की दो लौहें और अहद की किताब रखी हुई थी। इमामों ने अहद के संदूक़ को आसमानी सरपोश से ढाँपकर उसे लावी के क़बीले के हवाले कर दिया।

बूढ़ी राख़िल अपनी दुखती हुई आँखें मलते हुए बोली, "दबोरा! हाय हाय, जब से हम सीना पहाड़ की ढलानों से उतरे हैं यह बारीक सुर्ख़ मिट्टी ने तो हमारा बुरा हाल कर दिया है। मुझे तो यों लग रहा है जैसे मुसलसल आँधी में घिरे हुए हैं। ज़रा देखो तो हमारे सामने हदे-निगाह तक सुर्ख़ समुंदर-सा फैला हुआ है, और रेत की लहरें एक सिरे से दूसरे सिरे तक उठ रही हैं।" वह खाँसने लगी।

दबोरा ने एक चादर से अपने चेहरे को लपेट रखा था। सिर्फ़ आँखें नज़र आ रही थीं। वह बोली, "अपना मुँह बंद रखना ही बेहतर है। तौबा, इतने सारे क़दमों से उठनेवाली गर्द ने तो सूरज को भी छुपा दिया है। हा हा! हा हा! अख़-थू।"

चादर के पीछे से मिलकाह की आवाज़ बड़ी अजीब-सी लग रही थी। “यह मिट्टी! आह!” उसने फिर बोलने के लिए अपना मुँह बाहर निकालते हुए कहा, “मैं कहती हूँ हर रोज़ मन के साथ साथ लाल मिट्टी का राशन भी पेट में जाता है। बेचारा नन्हा इसहाक़ भी बड़ा परेशान हो रहा है। ज़रा देखो तो मेरी चादर के नीचे वह कैसे बिलक रहा है।” फिर जल्दी से मज़ीद कहने लगी, “नहीं, मुझे शिकायत नहीं करनी चाहिए वरना रब फिर से नाराज़ हो जाएगा। जो कुछ हो चुका है उसे याद करके तो मेरा सारा वुजूद काँप जाता है। अभी भी वह मंज़र मेरी आँखों के सामने बिलकुल वैसे ही घूम रहा है। ख़ैमे गाड़ दिए गए थे। हम सब आराम करने के लिए लेट चुके थे कि अचानक ख़ौफ़नाक आग भड़क उठी जिसकी ख़ैमाबस्ती के किनारे के ख़ैमे लपेट में आ गए। तब हमने जाना कि कुछ लोग फिर से बुड़बुड़ाने लगे थे। मैं सोचती हूँ हज़रत मूसा अगर हमारी तरफ़ से रब की मिन्नत न करते तो शायद हम सब हलाक हो जाते। हो सकता है यह हमारे लिए सबक़ हो कि अपने दरमियान क़ुद्दूस ख़ुदा के होते हुए हम किसी क़िस्म की शरारत न करें।”

हज़रत मूसा रास्ते की तवालत के लिए ज़रा फ़िकरमंद थे, क्योंकि वह इस जगह से वाक़िफ़ नहीं थे। उन्हें बस इतना ही इल्म था कि सीना और दरियाए-यरदन के रास्ते में बहुत-सी रुकावटें हैं। इसराईली फ़ौज पर यहाँ हमले भी हो सकते थे। अल्लाह ने अपने लोगों के लिए जो हैरतअंगेज़ काम किए थे उसका चर्चा चारों तरफ़ फैल गया था। लिहाज़ा

खुले बंदों या दर-परदा दुश्मनी ऐन मुमकिन थी। हज़रत मूसा अपने ख़यालात में इतने खोए हुए थे कि हर तरफ़ बुड़बुड़ाहट की शुरुआत की तरफ़ उनका ध्यान ही नहीं गया।

तो भी बीबी मरियम सब बातों से बा-ख़बर थीं। उनके कान और आँखें हर तरफ़ लगी रहती थीं। उन्होंने जल्द ही भाँप लिया कि यह बग़ावत सफ़र की तकलीफ़ के बारे में नहीं है बल्कि उस पूरे शरई निज़ाम के ख़िलाफ़ है जिसे उनके भाई ने अल्लाह के हुक्म से नाफ़िज़ किया है।

अगले पड़ाव पर ग़ैरइसराईली गुरोह जो उनके साथ मिसर से आया था शरीअत पर बड़ी बहस करने लगा। एक चौड़े-चकले काठ के हबशी ने जमात में मौजूद लोगों को घूरकर कहा, "इस मूसा से और क्या मिल सकता है? यह न खाओ, वह न खाओ। यह हमें देते ही क्या हैं। रोज़ रोज़ वही मन। अगर कभी-कभार इस ख़ौफ़नाक बयाबान में अच्छी-सी लज़ीज़ छिपकली या और जानवर मिल भी जाएँ तो कहा जाता है कि उसे छूना मत, यह नापाक है।"

फिर वह एक ज़ोरदार मुक्का हवा में लहराते हुए पुकारने लगा, "हारून, मूसा और वह ढेरों इमाम आसानी से शरीअत की बात कर सकते हैं। वह तो क़ुरबानी के गोश्त पर पल रहे हैं। ऊँह।" उसने चटख़ारे भरे। "एक अच्छे से गोश्त के टुकड़े के लिए मैं क्या नहीं दूँगा।"

देखते ही देखते सारी ख़ैमागाह पर उसका असर छा गया। हर तरफ़ कुहराम मच गया, "कौन हमें गोश्त खिलाएगा? मिसर में हम मछली

मुफ़्त खा सकते थे। हाय, वहाँ के खीरे, तरबूज़, गंदने, प्याज़ और लहसुन कितने अच्छे थे! लेकिन अब तो हमारी जान सूख गई है। यहाँ बस मन ही मन नज़र आता रहता है।”[1]

हज़रत मूसा ने हर ख़ैमे में से उठनेवाले इस कुहराम को सुना। वह किसी सब्ज़ी जैसे प्याज़ या गोश्त के लिए उनकी तड़प को अच्छी तरह समझते थे। तो भी वह अपनी शदीद ख़ाहिश पर क़ाबू पा सकते थे, क्योंकि वह जानते थे कि आसमान से उतरनेवाले खाने का इंतज़ाम आरिज़ी है। तो क्या लोग भूल गए थे कि रब ने उनके लिए क्या कुछ किया है और अब भी क्या कुछ कर रहा है? रब के ख़ादिम को एहसास हो गया था कि रब का क़हर भड़क उठा है। उनकी अपनी उम्मत उनके लिए कितनी तकलीफ़ का बाइस बनती थी। एक दिन तो इतने तंग आ गए कि वह अल्लाह के आगे शिकवा करने लगे, “तूने अपने ख़ादिम के साथ इतना बुरा सुलूक क्यों किया? मैंने किस काम से तुझे इतना नाराज़ किया कि तूने इन तमाम लोगों का बोझ मुझ पर डाल दिया? क्या मैंने हामिला होकर इस पूरी क़ौम को जन्म दिया कि तू मुझसे कहता है, ‘इसे उस तरह उठाकर ले चलना जिस तरह आया शीरख़ार बच्चे को उठाकर हर जगह साथ लिए फिरती है। इसी तरह इसे उस मुल्क में ले जाना जिसका वादा मैंने क़सम खाकर इनके बापदादा से किया है।’ ऐ अल्लाह, मैं इन तमाम लोगों को कहाँ से गोश्त मुहैया

1 गिनती 11:4-6

करूँ? वह मेरे सामने रोते रहते हैं कि हमें खाने के लिए गोश्त दो। मैं अकेला इन तमाम लोगों की ज़िम्मेदारी नहीं उठा सकता। यह बोझ मेरे लिए हद से ज़्यादा भारी है। अगर तू इस पर इसरार करे तो फिर बेहतर है कि अभी मुझे मार दे ताकि मैं अपनी तबाही न देखूँ।”[1]

अगले ही लमहे हज़रत मूसा ने अपने आपको अल्लाह की मुहब्बत की लपेट में महसूस किया और रब की मसरूरकुन आवाज़ सुनी। “मेरे पास इसराईल के 70 बुज़ुर्ग जमा कर। सिर्फ़ ऐसे लोग चुन जिनके बारे में तुझे मालूम है कि वह लोगों के बुज़ुर्ग और निगहबान हैं। उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे के पास ले आ। वहाँ वह तेरे साथ खड़े हो जाएँ, तो मैं उतरकर तेरे साथ हमकलाम हूँगा। उस वक़्त मैं उस रूह में से कुछ लूँगा जो मैंने तुझ पर नाज़िल किया था और उसे उन पर नाज़िल करूँगा। तब वह क़ौम का बोझ उठाने में तेरी मदद करेंगे और तू इसमें अकेला नहीं रहेगा। लोगों को बताना, ‘अपने आपको मख़सूसो-मुक़द्दस करो, क्योंकि कल तुम गोश्त खाओगे। रब ने तुम्हारी सुनी जब तुम रो पड़े कि कौन हमें गोश्त खिलाएगा, मिसर में हमारी हालत बेहतर थी। अब रब तुम्हें गोश्त मुहैया करेगा और तुम उसे खाओगे। तुम उसे न सिर्फ़ एक, दो या पाँच दिन खाओगे बल्कि 10 या 20 दिन से भी ज़्यादा अरसे तक। तुम एक पूरा महीना ख़ूब गोश्त खाओगे, यहाँ तक कि वह तुम्हारी नाक से निकलेगा और तुम्हें उससे घिन आएगी। और यह इस सबब से

1 गिनती 11:11-15

होगा कि तुमने रब को जो तुम्हारे दरमियान है रद किया और रोते रोते उसके सामने कहा कि हम क्यों मिसर से निकले।’”[1]

हज़रत मूसा इतने दिल-बरदाश्ता और शिकस्ता-ख़ातिर थे कि वह यह भी भूल गए कि जो उनसे हमकलाम है वह क़ादिरे-मुतलक़ है। लिहाज़ा उन्होंने जवाब दिया, “अगर क़ौम के पैदल चलनेवाले गिने जाएँ तो छः लाख हैं। तू किस तरह हमें एक माह तक गोश्त मुहैया करेगा? क्या गाय-बैलों या भेड़-बकरियों को इतनी मिक़दार में ज़बह किया जा सकता है कि काफ़ी हो? अगर समुंदर की तमाम मछलियाँ उनके लिए पकड़ी जाएँ तो क्या काफ़ी होंगी?”[2]

रब ने बड़ी शफ़क़त से जवाब दिया, “क्या रब का इख़्तियार कम है? अब तू ख़ुद देख लेगा कि मेरी बातें दुरुस्त हैं कि नहीं।”[3]

अगले रोज़ इसराईलियों को आसमान पर बेशुमार परिंदे स्याह बादल की तरह छाए हुए दिखाई दिए। जैसे पहले भी हुआ था यह बटेर थे जो समुंदर से उड़कर रेगिस्तान के दूसरे सिरे तक फैल गए थे। अब वह बड़ी तादाद में ख़ैमे के गिर्द गिर पड़े। जिन लोगों ने उन परिंदों को आते देखा उन्होंने चिल्ला चिल्लाकर ख़ैमे के सारे मकीनों को ख़बर दी, “हमारे लिए रब ने गोश्त भेजा है।” यकदम ख़ैमागाह में हलचल मच गई।

---

1 गिनती 11:11-20
2 गिनती 11:21-22
3 गिनती 11:23

बूढ़ी दबोरा जिसका सफ़र के बाइस जिस्म थककर चूर हो चुका था अपने ख़ैमे से निकलकर भौंचक्की रह गई। उसकी एक पड़ोसन गिरते हुए बटेर को दबोच रही थी। उसके मुँह में पानी भर आया। उसने बटेर की गरदन मरोड़ी और उसके पर नोच डाले, फिर अपनी हिर्स से मग़लूब होकर उसको दाँतों से नोच नोचकर खाते हुए निगल लिया।

"फ़ीहा! फ़ीहा!" दबोरा चीख़ उठी, "रुक जाओ। तुम्हारा मेदा इतनी सक़ील ख़ुराक बरदाश्त नहीं कर सकता। तुम मर जाओगी। बटेर को साफ़ करो और पकाकर खाओ। फ़ीहा, मैं कहती हूँ। वह तो सब कुछ हड़पकर गई है।" जब दबोरा बटेर इकट्ठे करने के लिए बरतन लेने अंदर गई तो फ़ीहा के हँसने की आवाज़ आ रही थी। लेकिन जैसे ही वह वापस आई वह अपना पेट पकड़े ज़मीन पर लोट रही थी। उसके पेट में शदीद दर्द उठा था। वह इतना ठोस खाना हज़म नहीं कर सकी थी। बहुत-से दूसरे लोगों के साथ वह भी मर गई। चुनाँचे उन्होंने उस जगह का नाम "क़ब्रोत-हत्तावा" यानी 'लालच की क़ब्रें' रखा क्योंकि उन्होंने उन लोगों को जिन्होंने हिर्स की थी वहीं दफ़न किया।

मौऊदा सरज़मीन की सरहद पर

ख़ैमाबस्ती उखाड़ ली गई थी, और अब हज़रत मूसा ने तारों भरे आसमान तले खड़े खड़े पलटकर बहीराए-मुरदार की तरफ़ नज़र डाली। नीचे वादी में पानी चमक रहा था। जिस सरज़मीन को देने की क़सम रब ने खाई थी वहाँ तक पहुँचने में तवक़्क़ो से कहीं ज़्यादा अरसा लगा था। 40 बरस से वह इस अज़ीम वाकिये की आस लगाए बैठे थे। उस वक़्त जब वह पार जाने के लिए तैयार थे तो उस सरज़मीन का हाल दरियाफ़्त करने के लिए आदमी भेजे गए थे। बदक़िस्मती से जब वह वापस आए तो उनके दिल में यह बेयक़ीनी जड़ पकड़ चुकी थी कि वह उस सरज़मीन के शहरों को फ़तह नहीं कर सकेंगे। वहाँ के ताक़तवर शहरियों ने उनको बहुत ख़ौफ़ज़दा कर दिया था। सिर्फ़ यशुअ और कालिब ने तसल्ली दी थी कि अल्लाह की मदद से हम उन पर ज़रूर ग़ालिब आएँगे। बहरहाल उन बद-दिल आदमियों ने लशकर को इस हद तक ख़ौफ़ज़दा कर लिया कि वह भी रब के ख़िलाफ़ बग़ावत

पर आमादा हो गया। इसराईलियों का ईमान बुरी तरह डगमगा गया। यह देखकर रब ने गज़बनाक होकर एलान कर दिया कि हज़रत यशुअ और कालिब के सिवा इन सब आदमियों में कोई भी उस सरज़मीन में दाख़िल नहीं होगा जिसका उन्हें देने की क़सम उसने खाई थी। बग़ावत के बाइस 20 बरस के ऊपर के सब इसराईली भी इस मुल्क में दाख़िल नहीं हो पाएँगे। उनके मरने तक इसराईल की बाक़ी जमात बयाबान में ही भटकती रही।

हज़रत मूसा ने सर्द आह भरी। उन बरसों में उनकी बहन मरियम भी वफ़ात पा गई। बीबी मरियम जो इसराईलियों की माँ थी उनके लिए भी माँ का-सा दर्जा रखती थी। हज़रत मूसा को अपनी बहन की याद बहुत सताती थी। उन्हें अभी तक इस बात का सदमा था कि उनकी प्यारी बहन ने भी हारून भाई के साथ मिलकर उनके ख़िलाफ़ बग़ावत की थी। वह दोनों हज़रत मूसा के मुमताज़ मंसब से हसद करने लगे थे। तो भी रब ने हज़रत मूसा की तरफ़ से उनके साथ फ़ौरी काररवाई की। उसने उन तीनों को मुलाक़ात के ख़ैमे के पास बुला लिया जहाँ उसने बड़ी सख़्ती से उन दोनों के साथ कलाम किया।

“मेरी बात सुनो। जब तुम्हारे दरमियान नबी होता है तो मैं अपने आपको रोया में उस पर ज़ाहिर करता हूँ या ख़ाब में उससे मुख़ातिब होता हूँ। लेकिन मेरे ख़ादिम मूसा की और बात है। उसे मैंने अपने पूरे घराने पर मुक़र्रर किया है। उससे मैं रूबरू हमकलाम होता हूँ। उससे

मैं मुअम्मों के ज़रीए नहीं बल्कि साफ़ साफ़ बात करता हूँ। वह रब की सूरत देखता है तो फिर तुम मेरे ख़ादिम के ख़िलाफ़ बातें करने से क्यों न डरे?”[1]

तब रब ने बीबी मरियम को कोढ़ी बना दिया। यह देखकर हज़रत मूसा को अपनी बहन पर कितना तरस आया था। चुनाँचे उन्होंने रब से फ़रियाद की जिसके जवाब में रब ने मरियम बीबी को शफ़ा दी। तो भी उन्हें ख़ैमा से बाहर 7 दिन तक बंद कर दिया गया। रब के नज़दीक उनकी बग़ावत मामूली बात न थी और न उसने हज़रत हारून की लग़ज़िश से ही दरगुज़र किया जो कि बाद में वुक़ूपज़ीर हुई थी और जिसके नतीजे में वह कोहे-होरिब पर वफ़ात पा गए थे। हज़रत मूसा की अपनी लग़ज़िश भी इतनी छोटी बात न थी। नतीजे में हज़रत मूसा को भी फ़लस्तीन में दाख़िल होने की इजाज़त न मिली।

यह वाक़िया क़ादिस-बरनीअ में पेश आया था। नख़लिस्तान से उन्हें धचका लगा था। सारा सब्ज़ा रेगिस्तानी रेत से ढका हुआ था और खजूर के दरख़्त मुरझा चुके थे। पानी का एक क़तरा भी न था। प्यास से तड़पते हुए लोग यहाँ वहाँ ज़मीन खोदते फिर रहे थे लेकिन सब बेसूद। अचानक सवाल उभरा कि रब ने ऐसा क्यों होने दिया? अब वह हमारी मदद क्यों नहीं करता? अचानक अवाम के नारे बुलंद होने लगे,

“पानी दो! पानी दो! ईमानदारों को पानी दो!

---

1 गिनती 12:6-8

पानी! पानी! पानी!”

हज़रत मूसा पसीने से शराबोर हुजूम को फटी फटी आँखों से देखते रहे। उनके ऊपर उठे हुए बाज़ू घने जंगल लग रहे थे। वह उनके ख़ुश्क हलक़ से निकलनेवाली रुँधी हुई आवाज़ें सुनते रहे। उन्हें यक़ीन नहीं आ रहा था। उन्होंने सोचा, ‘क्या मेरी सारी क़ुरबानियाँ अकारत गई हैं? चालीस बरस की जिलावतनी के दौरान बयाबान में मैं उनके साथ रहा हूँ। इस नई नसल को जो तरबियत मैंने दी है उसमें मेरा ईमान बड़ा पुख़्ता था। इन नौजवानों का रब पर ईमान डगमगाना नहीं चाहिए। और फिर यह हक़ीक़त कि हम फ़लस्तीन के क़रीब आ रहे हैं। सिर्फ़ यही उनको हवा के पर लगाकर उड़ा ले जाने का काफ़ी होना चाहिए।’ लेकिन हुजूम को देखकर वह सख़्त मायूस हुए। जब ग़ुस्से से बिफरे हुए लोगों की क़तारों पर क़तारें लग गईं तो हज़रत मूसा समझ गए कि उनका रवैया बिलकुल अपनी पुरानी नसल जैसा ही था। उनकी नफ़रत भरी निगाहें हज़रत मूसा पर जम गईं, “आप रब की जमात को क्यों इस रेगिस्तान में ले आए? क्या इसलिए कि हम यहाँ अपने मवेशियों समेत मर जाएँ? आप हमें मिसर से निकालकर इस ना-ख़ुशगवार जगह पर क्यों ले आए हैं? यहाँ न तो अनाज, न अंजीर, अंगूर या अनार दस्तयाब हैं। पानी भी नहीं है!”[1]

1 गिनती 20:4-5

फिर एकदम हज़रत मूसा ग़ुस्से से बेक़ाबू हो गए। वही पुराना ग़ुस्सा उन पर ग़ालिब आ गया जिसके बाइस उन्होंने मिसरी को जान से मार डाला था। यह किस तरह मुमकिन हुआ कि आज़ादी के फ़रज़ंद जिन्होंने ग़ुलामी की शर्मनाक रोटी को चखा तक न था यों उसको खाने के लिए मचल रहे हों? क्या यह वही नसल थी जिससे उन्होंने इतनी बड़ी उम्मीदें बाँध रखी थीं? यक़ीनन अब उनके लिए ख़ुदा के सब्र का पैमाना लबरेज़ हो चुका था। यक़ीनन बयाबान की तमामतर अज़ियतों को सहने का कुछ फ़ायदा न था। उन्होंने कुछ भी न सीखा था।

हज़रत मूसा का दिल बुरी तरह से डूब गया। ऐसे नाज़ुक मौक़े पर मामूल के मुताबिक़ वह और हारून मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर जाकर औंधे मुँह गिरे और रब से फ़रियाद करने लगे। रब उसी वक़्त उनको बचाने के लिए आ मौजूद हुआ। ग़ज़ब के स्याह बादल में नहीं जैसा कि हज़रत मूसा को तवक़्क़ो थी बल्कि अपने जलाली फ़ज़ल में। उसने हज़रत मूसा से बड़ी शफ़क़त और मुहब्बत से कलाम किया।

"अहद के संदूक़ के सामने पड़ी लाठी पकड़कर हारून के साथ जमात को इकट्ठा कर। उनके सामने चटान से बात करो तो वह अपना पानी देगी। यों तू चटान में से जमात के लिए पानी निकालकर उन्हें उनके मवेशियों समेत पानी पिलाएगा।"[1]

1 गिनती 20:8

चुनाँचे हज़रत मूसा रब के हुज़ूर से हाथ में लाठी थामे रवाना हुए, और वह और हज़रत हारून बड़ी चटान के सामने जा खड़े हुए। इसराईली उनके गिर्द जमा हो गए। उनकी औरतें, बच्चे, बूढ़े, जवान सब मोजिज़ा देखने के लिए आ पहुँचे। लेकिन इस बार अल्लाह की शफ़क़त हज़रत मूसा के दिल को मोम न कर सकी।

उनकी ग़ुसीली आँखें उस बेएतक़ाद नसल पर शोले बरसाने लगीं। क्या उनको इस बात का सबूत देना पड़ेगा कि अल्लाह की क़ुव्वत मेरी मारिफ़त काम कर रही है? हज़रत मूसा के ग़ुस्से का मोटा परदा ख़ुदा की मरज़ी और उनके दरमियान हाइल हो गया और उनकी सोच और अमल को धुँधला दिया। वही ख़ुदा का बंदा जो हमेशा हर बात में अपने आक़ा की फ़रमाँबरदारी के मामले में मुहतात रहता था उस वक़्त रब की हिदायात पर अमल करने से क़ासिर रहा। उन्होंने रब के फ़रमान के मुताबिक़ चटान को पानी देने का हुक्म नहीं दिया बल्कि बड़ी ख़ौफ़नाक आवाज़ में पुकारकर कहा, "ऐ बग़ावत करनेवालो, सुनो! क्या हम इस चटान में से तुम्हारे लिए पानी निकालें?"[1]

यह बात करते वक़्त उनको इसका एहसास न हुआ कि मैं ख़ुद भी रब के हुक्म की तामील नहीं कर रहा। वह अल्लाह को इस मोजिज़े का जलाल देने से क़ासिर रहे बल्कि उन्होंने बात इस अंदाज़ में की थी जैसे पानी के फूट बहने का इंहिसार उन पर और हज़रत हारून पर हो। क्या

1 गिनती 20:10

हज़रत मूसा को अचानक ही यह गुमान गुज़रा था कि सिर्फ़ अलफ़ाज़ ही से चटान से पानी फूटकर नहीं बनिकलेगा? बहरहाल उन्होंने अपनी लाठी को हवा में लहराकर बड़े ज़ोर से चटान पर एक बार और फिर दूसरी बार मारा।

तब क्या हुआ? चटान से कसरत से शीशे-सा शफ़्फ़ाफ़ पानी बह निकला। बाप अपने बच्चों को कंधों पर उठाकर मोजिज़ा दिखाने लगे। जो क़रीब थे वह लपककर मीठे पानी से प्यास बुझाने लगे। सब पानी पीते रहे, ख़ुशी से क़हक़हे लगाते रहे और रब की तारीफ़ करते गए जिसने उन पर रहम किया था। बेशुमार चौपाइयों और रेवड़ों ने भी सेर होकर पानी पिया लेकिन पानी था कि बहता चला आता था। लोगों को अपने सरदार की लग़ज़िश की सज़ा नहीं मिली। अल्लाह अपनी उम्मत के साथ वफ़ादारी से पेश आ रहा था। लेकिन वह अपने ख़ादिम की ग़लती को नज़रंदाज़ नहीं कर सकता था जिसने इसराईलियों के सामने ग़लत नमूना क़ायम किया था।

उधर हज़रत मूसा ख़ुशी न मना सके। उनको वाज़िह तौर पर इस बात का एहसास हो गया था कि कोई चीज़ मेरे और रब के दरमियान हाइल हो गई है। रब ने भी हज़रत मूसा और हारून से कलाम करने में देर न की। “तुम्हारा मुझ पर इतना ईमान नहीं था कि मेरी क़ुद्दूसियत

को इसराईलियों के सामने क़ायम रखते। इसलिए तुम इस जमात को उस मुल्क में नहीं ले जाओगे जो मैं उन्हें दूँगा।”[1]

हज़रत मूसा को सख़्त झटका लगा। ख़ुदा की बात ने तीर की तरह उनके दिल को छेदा। उन्हें इस बात का फ़ौरन एहसास हुआ कि मैंने वफ़ादार रब का वादा पूरा करने पर एतमाद नहीं किया था। उनके चेहरे पर गरम गरम आँसू ढलक गए। हिचकियों से उनका सारा जिस्म बुरी तरह झटके खा रहा था। उन्हें सख़्त अफ़सोस था कि उस वक़्त मेरे क़ौल और फ़ेल में ख़ुदाए-क़ुद्दूस का रूह काम नहीं कर रहा था। वह शख़्स जिसे रब की ख़ास क़ुरबत का शरफ़ हासिल था उसका रवैया रब की मरज़ी के बिलकुल बरअक्स था। उसने रब पर भरोसा नहीं किया था।

“ऐ रब, मुझे माफ़ कर।” उनको इस बात का शदीद सदमा था कि जो ख़ुदा हर वक़्त अपने वादे में सच्चा और वफ़ादार रहा है उसी को मैंने मायूस किया था। उन्हें उस वक़्त तक चैन न आया जब तक कि उन्हें यक़ीन न हो गया कि उनके और रब के दरमियान ताल्लुक़ात बहाल हो चुके हैं। तो भी रब की सज़ा उनके लिए शदीद सदमा था। वह फ़लस्तीन में दाख़िल होने के शरफ़ से महरूम हो गए थे बल्कि वह उस मुल्क के क़रीब पहुँचकर ही अल्लाह को प्यारे होने को थे।

1 गिनती 20:12

उस ख़ामोश तमाशाई की पुर-इश्तयाक़ नज़रें दरियाए-यरदन के पार बड़े शहर यरीहू पर ठहर गईं। काश रब मुझे उस मुबारक सरज़मीन में दाख़िल होने की इजाज़त दे देता! हाल ही में यह इनकिशाफ़ हुआ था कि इसराईली अभी तक ना-पुख़ता हैं। हुआ यों कि मोआब ने अरनोन की वादी में उनके लिए दाम फैला रखे थे और अपनी बेटियों को भेजा कि वह इसराईलियों को बहकाकर बाल देवता की पूजा के लिए लेकर आएँ। उनकी यह तरकीब बड़ी कामयाब रही क्योंकि इसराईली बुज़ुर्ग और सरदार भी उनके साथ खाने-पीने और बाल को सिजदा करने लग गए थे।

हज़रत मूसा ने अपना चेहरा दोनों हाथों से ढाँप लिया और कराह उठे। रब के हुक्म से शहज़ादों को मारा गया था और इबरत के तौर पर उनकी लाशें तपती धूप में लटका दी गई थीं। यों लोगों को ख़बरदार किया गया था कि इसराईल को रब के लिए पाक रहने की ख़ातिर अलहदा रखा गया है। जो लोग कभी इसराईल के मायानाज़ सरदार हुआ करते थे वह अब रब के ग़ज़ब को ठंडा करने के लिए शर्मनाक हालत में धूप में लटक रहे थे। जब यह नाक़ाबिले-यक़ीन वाक़िया पेश आया तो मुलाक़ात के ख़ैमे के दरवाज़े पर सारी जमात मातम करने लगी। फिर क्या हुआ। उनकी आँखों के सामने एक इसराईली बनाम ज़िमरी कज़बी नामी एक मिदियानी औरत को लेकर वहाँ से गुज़रा। औरत के फ़हश लिबास और रवैये से साफ़ ज़ाहिर था कि उसे इसराईल की ख़ैमाबस्ती में बुतपरस्ती

और ज़िनाकारी फैलाने के लिए भेजा गया था। कज़बी में इतनी जुर्रत थी कि वह सबकी नज़रों के सामने उसके ख़ैमे में गई।

रब ने फ़ौरी तौर पर वबा भेजी। इसराईलियों ने इंतहाई घबराहट और सदमे की हालत में बहुत-से लोगों को मरते हुए देखा। ख़ुशक़िसमती से फ़ीनहास इमाम को पता था कि क्या करना है। उसने ज़िनाकार औरत और उसके आशिक़ को बरछी से छेदकर वबा को रोक लिया। इस क़िस्से का ख़ातमा उस वक़्त हुआ जब रब ने इन वाक़ियात के बाद उनको मिदियानियों के ख़िलाफ़ जंग करने का हुक्म दिया।

जब लशकर फ़तहमंद होकर लौटा तो एक बार फिर निहायत बुरे वाक़ियात रूनुमा हुए। माले-ग़नीमत के साथ साथ वह अपने साथ बेशुमार मिदियानी औरतें भी ले आए। कैसी नाक़ाबिले-यक़ीन बात है! पहले भी तो ऐसी ही ग़ैरक़ौम औरतें इसराईल के लिए फंदा बन चुकी थीं। अब तक इसराईली कितने कच्चे ज़हन के थे! अफ़सोस यह अज़ीम पेशवा उस तनहा मक़ाम पर एक ऐसी क़रीबुल-मौत माँ की तरह अपने आपको महसूस कर रहा था जिसके बच्चे इसराईल का अभी दूध भी न छुड़ाया गया हो। वह नई नसल जिसकी सख़्त नज़मो-ज़ब्त के तहत बयाबान में परवरिश की गई थी वह दूसरी अक़वाम की पुरआसाइश ज़िंदगी की तरफ़ बहुत ज़्यादा मायल हो चुकी थी।

हज़रत मूसा का दिल बोझल हुआ। भला मेरे जाने के बाद उनके साथ क्या क्या होगा? बड़ी बेदिली से वह सोचने लगे कि सिर्फ़ मैं ही

उनकी डगमगाती कश्ती को बहिफ़ाज़त किनारे तक पहुँचा सकता हूँ। इसराईलियों की मुहब्बत से उनका दिल बुरी तरह मग़लूब हुआ जा रहा था। क़ादिरे-मुतलक़ ने ख़ुद यह मुहब्बत उनके दिल में उतारी थी जैसी कि माँ के दिल में उस बच्चे के लिए होती है जिसे उसने अपनी कोख से जन्म दिया हो। जी हाँ, रब अपने बच्चों के लिए उनकी इस मुहब्बत को जानता था। इस मुहब्बत ने हज़रत मूसा को ख़ुद इन गुनाहगारों की सज़ा भुगतने पर आमादा कर लिया था।

उस देवकामत शख़्स के सफ़ेद बाल और दाढ़ी चमक रहे थे। उनका सर परेशानी के आलम में ढलका हुआ था। अब वक़्त था कि इसराईल की सब फ़िकरें उस वाहिद हस्ती के पास ले जाएँ जो कि उनके दिल के बोझ को समझ सकता था।

पहले की तरह हज़रत मूसा ने मुलाक़ात के ख़ैमे में रब के आगे हाथ फैला दिए और बड़ी गरमजोशी से दुआ करने लगे, "ऐ रब क़ादिरे-मुतलक़, तू अपने ख़ादिम को अपनी अज़मत और क़ुदरत दिखाने लगा है। क्या आसमान या ज़मीन पर कोई और ख़ुदा है जो तेरी तरह के अज़ीम काम कर सकता है? हरगिज़ नहीं! मेहरबानी करके मुझे भी दरियाए-यरदन को पार करके उस अच्छे मुल्क यानी उस बेहतरीन पहाड़ी इलाक़े को लुबनान तक देखने की इजाज़त दे।"[1] हज़रत मूसा बड़ी बेताबी से रब के जवाब का इंतज़ार करने लगे।

---

1 इस्तिसना 3 :24-25

लेकिन उस वक़्त उनकी बात सुनी न गई। गो रब का लहजा शफ़क़त भरा था तो भी वह अपनी बात पर क़ायम रहा। “बस कर! आइंदा मेरे साथ इसका ज़िक्र न करना। पिसगा की चोटी पर चढ़कर चारों तरफ़ नज़र दौड़ा। वहाँ से ग़ौर से देख, क्योंकि तू ख़ुद दरियाए-यरदन को उबूर नहीं करेगा।”[1]

लमहे-भर के लिए मायूसी हज़रत मूसा पर ग़ालिब आने लगी। वह सोचने लगे, अब जबकि हम सारा रास्ता तय करके आ चुके हैं काश मैं अपने काम को पायाए-तकमील तक पहुँचा सकूँ! लेकिन फिर इन एहसासात पर क़ाबू पाकर ख़ुदा के उस ख़ादिम ने जिसके ईमान के बाइस बड़े बड़े मोजिज़े हुए थे और जिसके ईमान के वसीले से इतना बड़ा हुजूम बयाबान में सँभाले रखा गया था उसने बड़ी आजिज़ी के साथ रब की मरज़ी के आगे अपना सर झुका दिया। तो भी एक आख़िरी मसला हल होना बाक़ी रह गया था। पस हज़रत मूसा पुकार उठे, “ऐ रब, तमाम जानों के ख़ुदा, जमात पर किसी आदमी को मुक़र्रर कर जो उनके आगे आगे जंग के लिए निकले और उनके आगे आगे वापस आ जाए, जो उन्हें बाहर ले जाए और वापस ले आए। वरना रब की जमात उन भेड़ों की मानिंद होगी जिनका कोई चरवाहा न हो।”[2]

“यशुअ बिन नून को चुन ले जिसमें मेरा रूह है, और अपना हाथ उस पर रख। उसे इलियज़र इमाम और पूरी जमात के सामने खड़ा करके

1 इस्तिसना 3:26-27
2 गिनती 27:16-17

उनके रूबरू ही उसे राहनुमाई की ज़िम्मेदारी दे। अपने इख़्तियार में से कुछ उसे दे ताकि इसराईल की पूरी जमात उसकी इताअत करे। रब की मरज़ी जानने के लिए वह इलियज़र इमाम के सामने खड़ा होगा तो इलियज़र रब के सामने ऊरीम और तुम्मीम इस्तेमाल करके उसकी मरज़ी दरियाफ़्त करेगा। उसी के हुक्म पर यशुअ और इसराईल की पूरी जमात ख़ैमागाह से निकलेंगे और वापस आएँगे।"[1]

यक़ीनन अपने आबाओ-अजदाद की सरज़मीन की जितनी शदीद ख़ाहिश हज़रत मूसा के दिल में थी किसी के दिल में भी न थी। तो भी जब उन्हें यक़ीन हो गया कि मेरे लोग अब महफ़ूज़ हाथों में हैं तो उनकी फ़िकर जाती रही। वह कितने ख़ुश थे कि उन्होंने एक ऐसे शख़्स को तरबियत दी थी जो उनके काम को अहसन तरीक़े से पायाए-तकमील तक पहुँचा देगा। उन्होंने तहैया कर लिया कि वह मुमकिना हद तक कोशिश करेंगे कि लोग हज़रत यशुअ को अपना लीडर क़बूल करें। हज़रत मूसा उठकर बड़े इतमीनान से अपने ख़ैमे में चले गए। उनकी बातिनी कशमकश ख़त्म हो चुकी थी।

रोज़ाना दस्तूर के मुताबिक़ हर सुबह पौ फटते ही इमामे-आज़म इलियज़र और उनके मददगार इमाम फ़जर की क़ुरबानी गुज़राना करते थे। जैसे ही बल खाता धुआँ मुलाक़ात के ख़ैमे के सहन से ऊपर उठता हज़रत यशुअ हाथ फैलाकर दुआ के लिए अपने ख़ैमे के दरवाज़े पर

1 गिनती 27:18-21

दोज़ानू हो जाते। वह इसी तरह सुबह और शाम को बाक़ी इसराईलियों के साथ दुआ किया करते थे। हज़रत यशुअ अभी सीधे खड़े हो ही रहे थे कि उनकी नज़र अपनी तरफ़ तेज़-रफ़्तारी से आते हुए हज़रत मूसा पर पड़ी, "मेरे बेटे! तुम पर सलामती हो। मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हूँ।"

जब हज़रत मूसा हज़रत यशुअ को अपने ख़ैमे के अंदरूनी कमरे में लेकर गए तो वह घबराने लगे। वह हज़रत मूसा के बिलकुल सामनेवाली कुरसी पर बैठ गए। यशुअ को उनके जाने की दहशतनाक ख़बर सुनने का यक़ीन हो गया था। अपने आक़ा के रवैये को देखकर अब किसी और विज़ाहत की ज़रूरत नहीं थी। उनकी बामानी निगाहें और उनकी आवाज़ का भारीपन यह बात साफ़ बता रहा था। आख़िर उन्होंने कह ही दिया, "बेटा! मेरे जाने का वक़्त क़रीब आ गया है।"

हज़रत यशुअ को अपने दिल की धड़कन तेज़ होती हुई महसूस हुई। हज़रत मूसा के बग़ैर ज़िंदगी का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता था। वह अपने आक़ा के बग़ैर किस तरह चल सकते थे जो कि उनके लिए बाप और सरदार का दर्जा रखते थे। यशुअ अब नौजवान नहीं रहे थे बल्कि फ़ौज के एक तजरिबाकार सालार थे। उनकी हिचकी बँध गई। हज़रत मूसा तो अल्लाह और इनसान के दरमियानी थे, और अब तक इसराईलियों की हालत बड़ी तशवीशनाक बल्कि मायूसकुन थी। हज़रत यशुअ की रूह तक काँप उठी। वह अपने रूहानी बाप के क़दमों पर गिर

गए। "ऐ मेरे आक़ा, हमारे पेशवा, अभी हमें छोड़कर न जाएँ। ख़ासकर इस वक़्त जब हम दरियाए-यरदन को पार करनेवाले हैं। असल जंगें तो अभी होनेवाली हैं," वह चिल्ला उठे।

"बेटे, उठ। तेरा मुझ ऐसे इनसान के आगे यों मुँह के बल गिरना मुनासिब नहीं।" हज़रत मूसा ने रंजीदाख़ातिर हज़रत यशुअ को सहारा देकर उठाया। जब वह रूबरू खड़े थे तो उन्होंने बड़ी संजीदगी से बताया, "यशुअ, ख़ुदा ने तुझे इसराईल का सरदार बनने के लिए चुन लिया है।"

"मुझे? नामुमकिन!" हज़रत यशुअ भौंचक्के रह गए। बेयक़ीनी की कैफ़ियत में उनकी आँखें खुली की खुली रह गईं। "मैं ... मैं आपकी जगह कभी नहीं ले सकता।" हज़रत यशुअ ने दोनों हाथों से अपना मुँह ढाँपते हुए कहा, "अरे ... नहीं! ... नहीं ... नहीं। मुझे लोग कभी भी क़बूल नहीं करेंगे। जब मैं आपकी बेपनाह मुहब्बत का ख़याल करता हूँ और यह भी कि इस मुहब्बत की बिना पर आपने कितनी बार रब के क़हर से इसराईलियों को बचाया है तो मैं तसलीम करता हूँ कि मेरा दिल उतना बड़ा नहीं जितना कि आपका है। उनके लिए मेरी मुहब्बत तो बस टिमटिमाती लौ की मानिंद है। ऐ मेरे बाप मूसा! आपके बग़ैर तो हमारा मनज़िल पर पहुँचने का कोई इमकान नहीं है।"

हज़रत मूसा के मुक़द्दस चेहरे पर एक फीकी-सी मुसकराहट फैल गई। "यशुअ, यहाँ तक इसराईल को मैं नहीं बल्कि रब लाया है। जब उसने मुझे जलती हुई झाड़ी के पास बुलाया था तो मैंने उसकी ख़िदमत

करने से इनकार कर दिया था। उस वक़्त मैं रब को नहीं जानता था। लेकिन मैं इन तमाम मुश्किलात से अच्छी तरह बा-ख़बर था जो इस बुलाहट में दरपेश थीं।" उन्होंने हौसलाअफ़ज़ा मुसकराहट के साथ बयान जारी रखते हुए कहा, "लेकिन हर मुश्किल और हर नामुमकिन काम से मैं उसको मज़ीद बेहतर तौर पर जानता गया जिसके लिए कोई भी बात नामुमकिन नहीं होती।"

हज़रत मूसा ने यक़ीन दिलाते हुए हज़रत यशुअ का बाज़ू छूकर कहा, "उस वक़्त से मैं रब की ख़िदमत करता आया हूँ। वह मुझे अपने क़रीब से क़रीबतर करता रहा है।"

लमहे-भर के लिए कमरे में गहरी ख़ामोशी तारी रही। फिर हज़रत मूसा ने पिदराना हिकमत से हिम्मत बढ़ाते हुए कहा, "मेरे बेटे, ख़ौफ़ न कर। रब तेरे साथ है। हर मुश्किल से गुज़रकर तू रब को बेहतर तौर पर जान पाएगा और उस पर मज़ीद भरोसा करना सीखेगा।"

हज़रत यशुअ की आँखों में अभी भी अंदेशे झलक रहे थे। "मैं ही क्यों? मैं एक सिपाही हूँ, मुंसिफ़ नहीं। इन तमाम झगड़ों से निपटने के लिए मुझमें सब्रो-तहम्मुल नहीं है। इतने बड़े काम के लिए मेरा इंतख़ाब ग़लत है।"

"तुझे अल्लाह ने चुना है। उसने तुझे इस काम के लिए लैस भी किया होगा। सिर्फ़ इतना याद रहे कि तू ख़ुदा से अपने सारे दिल से

मुहब्बत रख और अपने हमसाए से भी। बेटे, यही उसूल तेरी कामयाबी की ज़मानत है।"

ख़ैमाबस्ती के लोग यह ख़बर सुनते ही शशदर रह गए। सारा दौड़कर मिलकाह के पास जा पहुँची। उसका रंग ज़रद हो रहा था। वह चिल्ला उठी, "अब हम नहीं बचेंगे। ज़रा सोचो तो अपने पेशवा मूसा के बग़ैर दुश्मनों में घिरे होने का अंजाम क्या होगा?"

मिलकाह के आँसू बहने लगे, "हमारी औलाद किस सहारे पर जिएगी? जैसे ही हमारे दुश्मनों को हमारे नुक़सान की ख़बर मिलेगी तो वह ज़रूर हर तरफ़ से हम पर हमला करेंगे। हज़रत मूसा का तो नाम ही मिसर में हुए अज़ीम मोजिज़ों की वाज़िह अलामत है।"

इस ख़बर को सुनते ही 70 बुज़ुर्ग, मुशीर और इमाम भी हैरान रह गए। यहाँ तक कि इमामे-आज़म इलियज़र भी सब ज़िम्मेदारियों को ख़ुद निभाने के ख़याल से दिल-बरदाश्ता हो गया। "रब इस इंतहाई नाज़ुक वक़्त में हज़रत मूसा को हमारे पास से ले जाने का फ़ैसला कैसे कर सकता है?" वह कराह उठा। "इसमें शक नहीं कि यशुअ लशकर का एक मुस्तैद और बहादुर सालार है। लेकिन उसमें मूसा जैसी सलाहियतें नहीं हैं। अगर हर क़बीले को मीरास बाँटने का काम यशुअ को करना पड़ा तो क्या मालूम कि कैसे कैसे झगड़े खड़े हो जाएँगे।"

ख़ुशक़िसमती से हज़रत मूसा को ले जाने और उनकी जगह हज़रत यशुअ को पेशवा बनाने का फ़ैसला रब ही का था। उसे ही इन तमाम

कामों को सँभालना था। हज़रत यशुअ के तक़र्रुर के वक़्त नक़ीबों ने नक़्क़ारा बजाकर सारी जमात को मुक़र्ररा जगह पर फ़राहम होने का एलान किया। इमामे-आज़म अपनी कुरसी पर बैठ गया। ऐसे मुक़द्दस मौक़ों पर वह मुकम्मल मंसबी लिबास पहनता था। उसके पहलू में हज़रत मूसा की इनसाफ़ की कुरसी नए पेशवा बैठने की मुंतज़िर थी।

जब हज़रत मूसा मुअज़्ज़ज़ीन के साथ नए पेशवा को लेने के लिए गए तो जमात पर ऐसी ग़मअंगेज़ ख़ामोशी तारी हुई जैसे किसी का जनाज़ा उठनेवाला हो। और फिर आख़िरकार जब नए पेशवा की आमद का नरसिंगा फूँका गया तो किसी चेहरे पर मुसर्रत का कोई तअस्सुर न था, न कोई ख़ुशी ही मनाई गई। लेकिन जब हज़रत मूसा ने यशुअ को इनसाफ़ की उस कुरसी पर बिठाया जिस पर कभी वह ख़ुद बैठा करते थे तो बहुत-से लोग दहाड़ें मार मार रोने लगे। इस नए मंसब पर हज़रत यशुअ की मुज़तरिब कैफ़ियत वाज़िह थी, लेकिन किसी को भी इसका एहसास तक न हुआ। सिसकियाँ भरते हुए लोगों ने अपने सफ़ेद बालोंवाले बाप को देखा जिसने कमाल वक़ार के साथ खड़े होकर उन्हें मुख़ातिब करते हुए कहा,

“अब मैं 120 साल का हो चुका हूँ। मेरा चलना-फिरना मुश्किल हो गया है।” उनकी बुलंद आवाज़ की बाज़गश्त गूँजने लगी। “और वैसे भी रब ने मुझे बताया है, ‘तू दरियाए-यरदन को पार नहीं करेगा।’ रब तेरा ख़ुदा ख़ुद तेरे आगे आगे जाकर यरदन को पार करेगा। वही तेरे

आगे आगे इन क़ौमों को तबाह करेगा ताकि तू उनके मुल्क पर क़ब्ज़ा कर सके। दरिया को पार करते वक़्त यशुअ तेरे आगे चलेगा जिस तरह रब ने फ़रमाया है। ... मज़बूत और दिलेर हो। उनसे ख़ौफ़ न खाओ, क्योंकि रब तेरा ख़ुदा तेरे साथ चलता है। वह तुझे कभी नहीं छोड़ेगा, तुझे कभी तर्क नहीं करेगा।"[1]

फिर हज़रत मूसा ने नए पेशवा को बुलाकर तमाम जमात के सामने उससे मुख़ातिब होकर कहा, "मज़बूत और दिलेर हो, क्योंकि तू इस क़ौम को उस मुल्क में ले जाएगा जिसका वादा रब ने क़सम खाकर उनके बापदादा से किया था। लाज़िम है कि तू ही उसे तक़सीम करके हर क़बीले को उसका मौरूसी इलाक़ा दे। रब ख़ुद तेरे आगे आगे चलते हुए तेरे साथ होगा। वह तुझे कभी नहीं छोड़ेगा, तुझे कभी नहीं तर्क करेगा। ख़ौफ़ न खाना, न घबराना।"[2]

हज़रत मूसा ने हज़रत यशुअ को दोज़ानू होने को कहा और अपने हाथ उन पर रखकर उनको वफ़ादार रब के सुपुर्द कर दिया। दबी दबी सिसकियों की आवाज़ों के दरमियान ही हज़रत मूसा ने आख़िरकार हज़रत यशुअ को जमात के सामने पेश करते हुए कहा, "अपने नए पेशवा की ख़ुशी करो। अपने नए पेशवा यशुअ का ख़ैरमक़दम करो! आज से तुम सब उसका हुक्म मानोगे।"

---

1 इस्तिसना 31:2,3,6

2 इस्तिसना 31:7-8

कुछ अरसे बाद रब ने हज़रत मूसा और यशुअ को मुलाक़ात के ख़ैमे में बुलाया। रब बादल के सतून में नमूदार हुआ जो ख़ैमे के दरवाज़े पर ठहर गया। पहले रब ने हज़रत मूसा से मुख़ातिब होकर कहा, "तू जल्द ही मरकर अपने बापदादा से जा मिलेगा। लेकिन यह क़ौम मुल्क में दाख़िल होने पर ज़िना करके उसके अजनबी देवताओं की पैरवी करने लग जाएगी। वह मुझे तर्क करके वह अहद तोड़ देगी जो मैंने उनके साथ बाँधा है।"[1] हज़रत मूसा को लोगों को ख़बरदार करना था कि वह उस आनेवाली आज़माइश से बच सकें।

फिर रब की पूरी तवज्जुह हज़रत यशुअ की तरफ़ मबज़ूल हो गई। जैसे ही नए पेशवा ने रब की आवाज़ सुनी उसके वुजूद में नई दिलेरी मौजज़न हो गई। "मज़बूत और दिलेर हो, क्योंकि तू इसराईलियों को उस मुल्क में ले जाएगा जिसका वादा मैंने क़सम खाकर उनसे किया था। मैं ख़ुद तेरे साथ हूँगा।"[2]

रब की हिकमत की रूह को हज़रत यशुअ में काम करते देखकर इसराईलियों के हौसले जल्द बुलंद हो गए। हज़रत मूसा के दिल में उस शख़्स के लिए ज़रा भी हसद न था जो कभी उनका ख़ादिम हुआ करता था बल्कि उन्हों ने सिर्फ़ रब की शुक्रगुज़ारी महसूस की जो सब कुछ बहतरीन तरीक़े से अंजाम दे रहा था।

---

1 इस्तिसना 31:16

2 इस्तिसना 31:23

और फिर आख़िरी बार हज़रत मूसा उन लोगों के सामने खड़े हो गए जिनसे वह बेइंतहा मुहब्बत रखते थे। उन्होंने उन्हें ख़बरदार किया कि वह अपने रब, अपने ख़ालिक़, अपने बाप और अपनी चटान को हरगिज़ न भूलें जिस पर वह भरोसा कर सकते हैं। और उन्होंने पेशगोई करते हुए कहा, "रब तेरा ख़ुदा तेरे वास्ते तेरे भाइयों में से मुझ जैसे नबी को बरपा करेगा। उसकी सुनना। क्योंकि होरिब यानी सीना पहाड़ पर जमा होते वक़्त तूने ख़ुद रब अपने ख़ुदा से दरख़ास्त की, 'न मैं मज़ीद रब अपने ख़ुदा की आवाज़ सुनना चाहता, न यह भड़कती हुई आग देखना चाहता हूँ, वरना मर जाऊँगा।' तब रब ने मुझसे कहा, 'जो कुछ वह कहते हैं वह ठीक है। आइंदा मैं उनमें से तुझ जैसा नबी खड़ा करूँगा। मैं अपने अलफ़ाज़ उसके मुँह में डाल दूँगा, और वह मेरी हर बात उन तक पहुँचाएगा। जब वह नबी मेरे नाम में कुछ कहे तो लाज़िम है कि तू उसकी सुन। जो नहीं सुनेगा उससे मैं ख़ुद जवाब तलब करूँगा।'"[1]

फिर हज़रत मूसा ने इसराईलियों और अपने घराने से इजाज़त चाही और पिसगा की चोटी पर जो यरीहू के मुक़ाबिल है चढ़ गए। लोग हदे-निगाह तक सफ़ेद चादर में लिपटे हुए अपने महबूब पेशवा को देखते रहे। हज़रत मूसा तनहा नहीं थे और न वह बददिल ही थे, क्योंकि रब उनके साथ था। जल्द ही वह रब को रूबरू देखनेवाले थे। बेचैनी के हाल

1 इस्तिसना 18:15-19

में वह जल्दी जल्दी पहाड़ पर चढ़ते गए। रब की क़ुरबत का ख़याल उन पर बुरी तरह ग़ालिब आ चुका था।

अचानक उन्हें याद आई कि सीना पहाड़ पर लोग अल्लाह के हुज़ूर किस तरह काँप उठे थे और चिल्ला चिल्लाकर पुकारने लगे थे कि हम रब की आवाज़ को बरदाश्त नहीं कर सकते। उसी वक़्त अल्लाह ने एक नबी भेजने का वादा किया था जो कि अल्लाह और इनसान का दरमियानी होगा। अगरचे वह जलाली आसमान में से आएगा तो भी वह नहीं डरेंगे।

हज़रत मूसा के चेहरे पर मुसकराहट दौड़ गई। आख़िरकार बुज़ुर्ग इब्राहीम की यह बाग़ी औलाद बदल जाएगी। जो लोग इस नए नबी की बात सुनेंगे अल्लाह उनको एक नया दिल अता करेगा। और प्यारे बच्चों की तरह वह ख़ुदा के हुक्मों को मानेंगे।

आख़िर वह अज़ीम लमहा भी आ पहुँचा जब अल्लाह ने पहाड़ की बुलंदी से हज़रत मूसा को वह मुल्क दिखाया जिसका वादा उसने इसराईलियों से किया था। फिर अपने ख़ादिम को मुख़ातिब करके फ़रमाया, "यह वह मुल्क है जिसका वादा मैंने क़सम खाकर इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से किया। मैंने उनसे कहा था कि उनकी औलाद को यह मुल्क मिलेगा। तू उसमें दाख़िल नहीं होगा, लेकिन मैं तुझे यहाँ ले आया हूँ ताकि तू उसे अपनी आँखों से देख सके।"[1]

1 इस्तिसना 34:4

फिर अल्लाह के ख़ादिम हज़रत मूसा ने मोआब के मुल्क में वफ़ात पाई और ख़ुदा ने उनको मुल्के-मोआब की एक वादी में दफ़न किया। इंतक़ाल के वक़्त उनकी उम्र 120 बरस थी। आख़िरी ऐयाम तक न तो उनकी बीनाई कमज़ोर हुई और न उनकी जिस्मानी ताक़त कम हुई थी। आज तक उनकी क़ब्र के बारे में किसी को कुछ इल्म नहीं।